—। पंचम दिवस कथा ।— (1)

PAGE NO.:
DATE: / /20

नन्दस्त्वात्मज उत्पन्ने —

⇒ नन्दबाबा के यहाँ आत्मज के रुप मे भगवान पधारे, जब हमारे यहाँ कोई बालक जन्म लेकर आता है, तो उसमे पिता, बाबा जी का अंश होता है, उनका रक्त होता है, इसलिए बच्चो की नाँक, आँख कभी बाबा जैसी कभी पिता जैसी होती है। नन्दबाबा के यहाँ तो स्वयं ठाकुर जी उनके आत्मज के रुप मे पधारे है।

जाताह्लादो महामनाः —

= नन्दबाबा का हृदय आनन्द से भर गया

आहूय विप्रान वेदज्ञान
स्नातः शुचिरलंकृतः ।

⇒ बाबा ने स्नान किया और पवित्र होकर सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषण धारण किए। फिर वेदज्ञ ब्राह्मणो को बुलवाकर स्वस्तिवाचन का पाठ कराया।

वाचयित्वा स्वस्त्ययनं
जातकर्मात्मजस्य वै ।

⇒ प्रसन्नता और आनन्द से भरकर अपने पुत्र का जातकर्म संस्कार कराया।

- कारयामास विधिवत् पितृदेवार्चनं तथा।

⇒ बन्धुओ जब हमारे घर कोई उत्सव, या आयोजन हो तो हमे अपने पितरो की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए।

(2)

PAGE NO.:
DATE: / /20

= नन्दबाबा ने अपने बालक के जातकर्म के समय अपने पितरो को प्रसन्न करने के लिए नान्दीमुख श्राद्ध किया।

→ कोई अनुष्ठान, विवाह के समय जो श्राद्ध किया जाता है, उसे नान्दीमुख श्राद्ध कहते है।

⇒ नित्यं नैमित्तिकं काम्यं त्रिविधं श्राद्धमुच्यते।

⇒ मत्स्यपुराण के अन्तर्गत तीन प्रकार के श्राद्धो की चर्चा की गई है।

(1) नित्यश्राद्ध - प्रतिदिन किए जानेवाले
(2) नैमित्तिक श्राद्ध - लिंगदेह (मृतक) के लिए
(3) काम्य श्राद्ध - विशेष कामना पूर्ति के लिए

(1) एकोद्दिष्ट श्राद्ध - जो एक व्यक्ति के लिए किया जाए।

(2) पार्वणश्राद्ध - पितृपक्ष मे जो 15 दिनो (प्रतिपदा से अमावस्यातक) किया जाता है।

(3) तीर्थश्राद्ध - प्रयागादि तीर्थक्षेत्रो मे अथवा पवित्र नदियों के तट पर जो किया जाता है।

= जब भी कही तीर्थक्षेत्र मे भ्रमण के लिए जाए तो अपने पितरों के निमित्त पिण्डदान अवश्य करे।

(3)

PAGE NO.:
DATE: / /20

क्षणे नष्टे कुतो विद्या
कणे नष्टे कुतो धनम् ।

→ एक, एक कण बचाने वाला धनवान और एक, एक क्षण बचाने वाला विद्वान होता है।

→ इसलिए आप जो भी क्षण, अनुष्ठान पूजन कथा, श्रवण, पितरों का पूजन श्राद्ध, कर्म मे व्यतीत करते है, वही क्षण आपके सार्थक है, अन्यथा जितने समय तक आप सांसारिक चर्चा करते है वह समय आपका व्यर्थ चला जाता है।

= पूज्यपाद गोस्वामी जी लिखते है -

चौ० धन्य घरी सोई जब सतसंगा।
धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा॥

⇒ वह घड़ी (समय) धन्य है, जितने समय मे हम भगवान की चर्चा कर लेते है, सत्संग श्रवण कर लेते है। बाकी समय तो सबका बीत ही रहा है

⇒ हर पुत्र को अपने माता, पिता एवं पूर्वजो के निमित्त उनकी तिथि पर पिण्ड दान और पूजन करना चाहिए।

⇒ भगवान नारायण भी जब त्रेतायुग मे अवतार लेकर आए तो उन्होने भी गीधराज जटायु के कल्याण के लिए पिण्डदान किया।

(4)

दोहा- अबिरल भगति माँगि बर
गीध गयउ हरिधाम।
तेहि की क्रिया जथोचित
निज कर कीन्ही राम॥

⇒ नन्दबाबा ने ब्राह्मणो को गौ दान किया।

श्लोक- धेनूनां नियुते प्रादाद्
विप्रेभ्यः समलंकृते।
तिलाद्रीन् सप्त रत्नौघ
शात कौम्भाम्बरावृतान

⇒ नन्दबाबा ने बीस लाख गौएँ दूध देने वाली आभूषणो से सुसज्जित करके उनके खुरो को चाँदी से मढ़वाकर सींगो को स्वर्ण से मढ़वाकर दान की।

→ रत्नों और सुनहले वस्त्रो से ढके हुए तिल के सात पहाड़ दान दिए।

⇒ वृजमण्डल के ग्वाल और गोपियों ने जब सुना यशोदा जी के पुत्र हुआ, उन्होंने सुन्दर वस्त्र, आभूषण, और अंजन आदि से अपना श्रृंगार किया।

⇒ हाथ मे भेट की सामग्री ले-लेकर यशोदा जी की महल की ओर चली।

(5)

PAGE NO.:
DATE: / /20

श्लोक- गोप्यः सुमृष्ट मणि कुण्डल निष्क कण्ठ्य-
श्चित्राम्बराः पथि शिखाच्युत माल्यवर्षाः ।

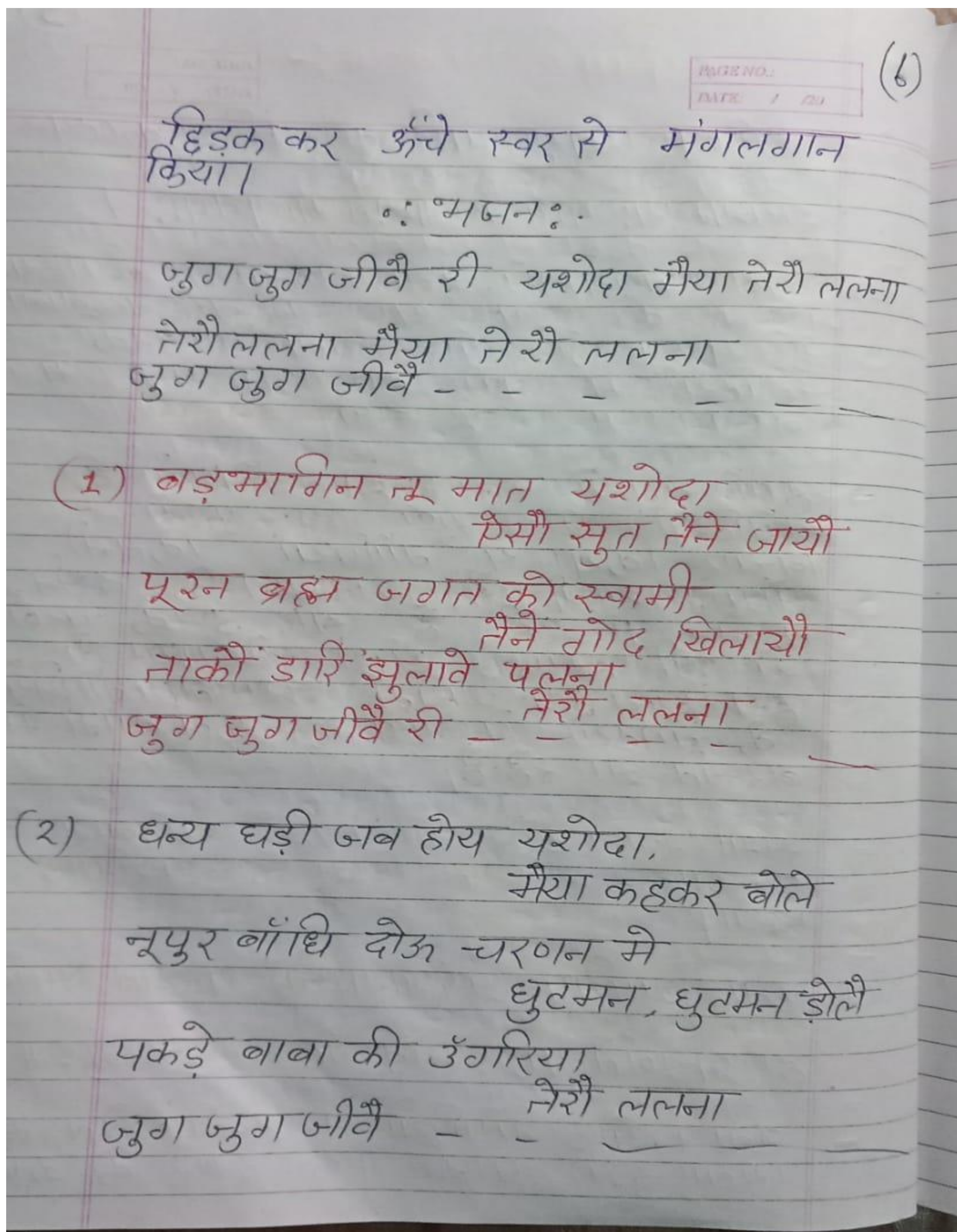
=) जब गोपियो ने श्रृंगार किया तो चोटियो मे फूलो को गूंथा था। जब वह नन्दबाबा के महल की ओर चली तो उनकी चोटियों मे गुंथे हुए फूल मार्ग मे बरसते जा रहे थे।

=) हमारे ब्रज के सन्त कहते गोपियो के चोटियो मे गुंथे हुए फूलो ने विचार किया, ये गोपियाँ कितनी सौभाग्यशाली है, भगवान के दर्शन करने जा रही है, यदि इनके चरणो से भी हमारा स्पर्श हो गया तो हम धन्य हो जायेंगे, इसीलिए गोपियों के चोटियो मे गुंथे हुए फूल मार्ग मे बरसते जा रहे है।

=) सभी ग्वाल और गोपियों ने नन्दबाबा के घर जाकर नवजात शिशु को आशीर्वाद दिया।

श्लोक- ता आशिषः प्रयुंजानाश्चिरं पाहीति बालके।
हरिद्राचूर्णतैलाद्भिः सिंचन्त्योऽजनमुज्जगुः ॥

=) ग्वाल और गोपियों ने हल्दी - तेल से मिला हुआ पानी एक दूसरे के ऊपर


(6)

PAGE NO.:
DATE: / /20

छिड़क कर ऊँचे स्वर से मंगलगान किया।

: भजन :

जुग जुग जीवै री यशोदा मैया तेरौ ललना
तेरौ ललना मैया तेरौ ललना
जुग जुग जीवै - - - - -

(1) बड़भागिन तू मात यशोदा
ऐसौ सुत तैने जायौ
पूरन ब्रह्म जगत को स्वामी
तैने गोद खिलायौ
ताकौ डारि झुलावे पलना
जुग जुग जीवै री - - तेरौ ललना - -

(2) धन्य घड़ी जब होय यशोदा,
मैया कहकर बोले
नूपुर बाँधि दोऊ चरणन मे
घुटमन, घुटमन डोलै
पकड़े बाबा की उँगरिया
जुग जुग जीवै - - तेरौ ललना - - -

PAGE NO.:
DATE: / /20

(3) आशा लेकर बड़ी दूर से
दर्शन करिवे आयौ.
मेरौ इष्ट जगत को स्वामी
तैंने गोद खिलायौ.
परै दरस बिन कल ना,
तेरौ ललना
जुग जुग जीवै री – – – –

⇒ सभी गोपगण एक दूसरे पर दही, दूध घी, और पानी उड़ेलने लगे।

श्लोक – गोपाः परस्परं हृष्टा दधिक्षीर घृताम्बुभिः।
आसिञ्चन्तो विलिम्पन्तो नवनीतैश्च चिक्षिपुः॥

⇒ एक दूसरे के मुहँ पर मक्खन मलने लगे और मक्खन फेंक - फेंककर आनन्दोत्सव मनाने लगे।

⇒ नन्दबाबा स्वभाव से ही परम उदार थे, उन्होने अपने महल के खजाने के कक्ष को खोल दिया और दोनो हांथो से लुटाना प्रारम्भ किया।

⇒ द्वार पर आए गोप और गोपियों को नन्दबाबा ने बधाई मे क्या दिया?

(8)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ हाथी घोड़ा पालकी, सोना, चाँदी, वस्त्र, आभूषण और गौए दान मे दी।

⇒ एक बात विचार करिए, हाथी घोड़ा उसी को तो दान मे, या उपहार मे दिया जायेगा जो उसको अपने घर मे रख सके, उसकी देखभाल कर सके, हाथी पालने मे भी धन खर्च होता है, हाथी घोड़े के भोजन की व्यवस्था करना साधारण व्यक्ति के वश की बात नही,

⇒ हमारे ब्रज के सन्त कहते नन्दबाबा के आँगन मे जो लोग बधाई लूट रहे है वह कोई साधारण गोपीग्वाल नही साक्षात देवी और देवता ही गोपी और ग्वाल बनकर बधाई लूट रहे है।

⇒ हरेर्निवासात्म गुणै रमाक्रीडम भून्नृप।

⇒ साक्षात लक्ष्मी जी भी नन्दबाबा के आँगन मे आकर बधाई लूट रही है।

⇒ नन्दबाबा ने गोपीयों और ग्वालो को लुटाते, लुटाते अपने महल के सारे खजाने को लुटा दिया।

(9)

PAGE NO.:
DATE: / /20

पूत सपूत जन्यो यशोदा,
इतनी सुनके वसुधा सब दौड़ी।
देवन के आनन्द भयौ,
पुनि धावति गावत मंगल गौरी।
नन्द कह्यू इतनो जो दियो
घनश्याम, कुबेरहु की मति बौरी।
देखत मोहि लुटाय दियौ,
न बची बछिया, छछिया न पिछौरी।

⇒ व्रज के सन्त कहते नन्दबाबा ने इतना लुटाया कि गोपियों और ग्वालों के घरों रखने के लिए जगह कम पड़ गई

= जो सामग्री उन्हें बधाई मे मिली वह ले कहा जाए, घर मे रखने के लिए जगह नही, इसलिए घर से लेजाकर उस सामग्री को ग्वाले यमुना के किनारे छोड़ आए।

⇒ जो सामग्री किसी की नही वह राजा की इसलिए जो सामग्री गोपी और ग्वाले यमुना के तट पर छोड़ आते, सैनिक उसे उठाकर पुनः नन्द जी के महल मे ले आते, इसलिए नन्द जी जितना खजाना लुटाकर खाली करते उतना फिर भर जाता।

(10)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ दूसरा भाव यह भी जहाँ साक्षात लक्ष्मी जी पुजारी हो वहा किसी भी चीज की कमी कैसे हो सकती है।

⇒ नन्दबाबा लाला के जन्मोत्सव पर दान कर रहे है। बन्धुओ दान सदैव सुपात्र को देना चाहिए।

श्लोकः कुपात्र दानात च भवेत दरिद्रो
दारिद्रय दोषेण करोति पापम् ।
पाप प्रभावात् नरकं प्रयाति
पुनर्दरिद्रः पुनरेव पापी ॥

⇒ कुपात्र को दान देने से दरिद्री बनते है। दारिद्रय दोष से पाप होता है। पाप के प्रभाव से नरक मे जाते है, पुनः दरिद्री बनते और पाप करते है।

⇒ इसलिए दान उसे करे जो दान लेने का अधिकारी हो, जिसे आवश्यकता है उसे दान करे। सुपात्र को दान देने से उसका फल भी हमे प्राप्त होता है।

श्लोक - सुपात्रदानात् च भवेत धनाढ्यो
धनप्रभावेण करोति पुण्यम ।
पुण्य प्रभावात् सुरलोकवासी
पुनर्धनाढ्यः पुनरेव भोगी ॥

PAGE NO.: (11)
DATE: / /20

⇒ सुपात्र को दान देने से, इन्सान धनवान बनता है, धन के प्रभाव से पुण्यकर्म करता है, पुण्य के प्रभाव से स्वर्ग प्राप्त होता है, फिर से धनवान और फिर से भोगी बनता है।

⇒ लाला के जन्मोत्सव पर नन्दबाबा ने तन, धन, मन तीनो की शुद्धि की।

तन पवित्र सेवा किए
धन पवित्र कर दान
मन पवित्र हरि भजन से
होत त्रिविध कल्याण

(1) तन पवित्र सेवा किए - नन्दबाबा के यहाँ जितने भी ब्राह्मण, साधु, सन्त, अतिथि पधारे उन सभी की सेवा करके बाबा ने तन की शुद्धि की।

(2) धन पवित्र कर दान - जितने भी लोग उत्सव मे पधारे, उन सभी को, अन्न, वस्त्र, सोना चाँदी देकर धन की शुद्धि की।

(3) मन पवित्र हरि भजन से - इतने वर्षों के बाद लाला हुआ, इसलिए मन ही मन नारायण का स्मरण करके उनको धन्यवाद दे रहे, इस प्रकार मन ही मन भगवान का स्मरण करके मन की शुद्धि की।

(12)

PAGE NO.: DATE: / /20

⇒ बन्धुओ नन्दबाबा ने अपने बालक का जन्मोत्सव सत्कर्म (दान, पुण्य, यज्ञ पितृ पूजन) करके मनाया।

⇒ हम लोग अपने बालको का जन्मोत्सव केक काटकर और मोमबत्ती बुझाकर मनाते है।

⇒ बन्धुओ जन्मोत्सव प्रकाश का पर्व है, न कि अन्धकार का, आपका पुत्र पुत्री जीवन मे प्रगति करे न कि उसके जीवन मे अन्धकार हो।

⇒ जन्मोत्सव के अवसर पर बच्चो से देशी घी के दीपक जलवाने चाहिए न कि मोमबत्ती को मुख से बुझवाना चाहिए।

⇒ हमारे यँहा मुख से दीपक को बुझाना अशुभ माना जाता है। हम दीपक को जलाते है, बुझाते नही,

⇒ ग्रीस (यूनान) से मोमबत्ती को बुझाने की परम्परा शुरु हुई, सदियो पहले यँहा के लोग केक पर जलती हुई मोमबत्ती को लेकर अपने पूजा स्थल पर जाते थे। वहा जाने के बाद ही यँहा के लोग केक कट करते थे, उससे पहले यह मोमबत्ती को बुझाते भी थे। यँहा के लोगो का मानना था, कि मोमबत्तियो से निकलने वाला धुआ भगवान तक जाता है।

⇒ 1746 मे केक पर मोमबत्ती लगाने और बुझाने की परंपरा शुरु हुई थी।

⇒ भारत मे लोग दीपक, मोमबत्ती को जलाना शुभ मानते है, और बुझाना अशुभ मानते है।

जन्मोत्सव पर क्या करे

(1) प्रातःकाल बाल्टी मे गंगाजल डालकर स्नान करे।

(2) नवीन वस्त्र धारण करके पूजा कक्ष मे जाकर भगवान का पूजन करे।

(3) यदि सम्भव हो तो किसी ब्राह्मण को बुलाकर घर पर सत्यनारायण भगवान की कथा या सुन्दरकाण्ड, हरिनाम संकीर्तन का पाठ कराए।

(4) बालक या बालिका के हाथो से भगवान को तिलक लगवाए, फिर आचार्य जी या घर के बड़े ठाकुर जी के सामने जिसका जन्मदिन है उसको तिलक लगाए।

(5) बालक या बालिका के हाथो से लड्डू का भोग लगवाए, लड्डू का एक एक दाना जैसे आपस मे चिपका होता है ऐसे ही हमारे परिवार के भी लोग आपस मे संगठित रहे, इस भाव से भोग लगाए।

(14)

(6) जितने वर्ष का आपका बालक या बालिका हो गई है, उतने ही देशी घी के दीप ठाकुर जी के सामने जलाए।

(7) जन्मोत्सव अंग्रेजी तारीख की जगह तिथी के अनुसार मनाए।

(8) बालक या बालिका को साथ लेकर गौशाला आश्रम, अनाथालय जाए वहा दान करे।

(9) बालक या बालिका के हाथ से एक वृक्ष लगवाए। और उसकी देखभाल करने का संकल्प करवाए।

⇒ बन्धुओ हम सभी भारतीय है और हम सभी को भारतीय परम्परा के अनुसार ही जन्मोत्सव मनाना चाहिए।

⇒ बन्धुओ एक बात विचारणीय यह है कि भागवत सप्ताह विधि मे कृष्ण जन्म चतुर्थ दिवस मे ही क्यो होता है?

⇒ बन्धुओ भक्त चार प्रकार के होते है।

(1) राजस भक्त
(2) तामस भक्त
(3) सात्विक भक्त
(4) निर्गुण भक्त

⇒ भक्त भगवान को राजसी, तामसी, सात्विकी

PAGE NO.:
DATE: / /20

और निर्गुण भक्ति के द्वारा भजता है।

⇒ भक्ति शब्द संस्कृत के 'भज' सेवायाम धातु मे क्तिन प्रत्यय लगाने पर बनता है।

⇒ भजनं भक्तिः।
भज्यते अनया इति भक्तिः।
भजन्ति अनया इति भक्तिः।

⇒ भक्ति शब्द का वास्तविक अर्थ भगवान की सेवा करना है।

⇒ भक्ति की संज्ञा के विषय मे "नारद पांचरात्र" मे कहा गया है कि अन्य कामनाओ का परिहार करके निर्मल चित्त मे समग्र इन्द्रियो द्वारा श्री भगवान की सेवा का नाम ही भक्ति है।

भक्ति की परिभाषा :- भक्ति श्रद्धा, विश्वास एवं प्रेमपूरित भक्त हृदय का वह मधुर मनोराग है, जिसके द्वारा भक्त और भगवान उपास्य और उपासक के पारस्परिक सम्बन्ध का निर्धारण होता है। यह भक्त के विमल मानस से निःसृत दिव्य प्रेम की वह उज्जवल भाव धारा है, जिसके प्रभाव मे पड़कर लौकिक प्रेम का विषयानन्द अपने समस्त कलुषो का परिहार कर अलौकिक प्रेम के ब्रह्मानन्द मे परिणित हो जाता है।

(16)

(1) सात्विकी भक्ति :- यह भक्ति मुक्ति की कामना से की जाती है।

(2) राजसी भक्ति :- यह भक्ति धन, यश, कुटुंब, घर-बार की इच्छा से की जाती है।

(3) तामसी भक्ति :- इसमे कामना रहती है कि दुश्मनो का नाश हो।

(4) निर्गुण भक्ति :- यह बिना किसी कामना के की जाती है। इसमे भक्त की कोई इच्छा नही होती है। यही अनन्य भक्ति है, जो अनन्य भक्ति की साधना करता है, उसका न कोई मित्र है न ही शत्रु, उसे जगत के दुःखो का संताप नही रहता। भगवान के दर्शन मात्र से परम सुख प्राप्त करता है।

⇒ ① बन्धुओ प्रथम दिवस मे जब हम लोग महाराज परीक्षित की कथा श्रवण करते है, तो रजोगुण नष्ट होता है।

② द्वितीय दिवस मे जब हम कपिल देवहूति संवाद की कथा श्रवण करते है, तो सतोगुण नष्ट होता है।

③ तृतीय दिवस मे जब हम हिरण्यकशिपु की कथा श्रवण करते है, तो तमोगुण नष्ट होता है।

(4) चतुर्थ दिवस मे जब भक्त रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण को त्यागकर निर्गुण हो जाता है, तब मेरे ठाकुर जी प्रगट होकर आते है। इसीलिए भागवत सप्ताह विधी मे चतुर्थ दिवस मे भगवान कृष्ण का जन्म होता है।

⇒ शुकदेव जी कहते- परीक्षित! नन्दबाबा के यहा उत्सव चल रहा था, इसी मध्य नन्दबाबा ने सभी गोपो को बुलाया और कहा कंस को वार्षिक कर देने का समय हो गया है।

श्लोक- गोपान् गोकुलरक्षायां
निरूप्य मथुरां गतः।
नन्दः कंसस्य वार्षिक्यं
करं दातुं कुरूद्वह॥

⇒ इसलिए मै मथुरा जा रहा हु, तुम लोग गोकुल की रक्षा करना, जब तक मै लौटकर नही आ जाता। इतना कहकर नन्दबाबा मथुरा चले गए।

⇒ मथुरा पहुँचकर नन्दबाबा ने कंस को वार्षिक कर दिया,

⇒ जब वसुदेव जी को यह मालूम हुआ कि हमारे भाई नन्द जी मथुरा आये है। तब वे जहां नन्दबाबा ठहरे हुए थे, वहाँ गये। वसुदेव जी को देखकर नन्दबाबा ने अपने

→ गले से लगा लिया। नन्दबाबा ने वसुदेव जी से कहा –

श्लोक – अहो ते देवकीपुत्राः कंसेन बहवो हताः।
एकावशिष्टावरजा कन्या सापि दिवं गता॥

⇒ भैया वसुदेव! कंस ने देवकी के गर्भ से उत्पन्न तुम्हारे कई पुत्र मार डाले। अन्त मे एक सबसे छोटी कन्या बच रही थी, वह भी स्वर्ग सिधार गयी। यह सुनकर हमें बहुत कष्ट हुआ।

→ अब वसुदेव जी ये तो कह नही सकते थे कि तुम्हारे घर जो बालक पल रहा है, वह भी मेरा है।

→ वसुदेव जी कहते मन को छोटा करने से क्या फायदा, नन्द जी बस ये समझो, एक मेरा पुत्र आपके घर ही है। मै छोटे वाले पुत्र को अपना ही पुत्र मान लूंगा।

⇒ शुकदेव जी कहते – परीक्षित! इधर कंस ने रात्रि मे आपातकालीन सभा बुलायी और अपने सैनिको से कहा, जब से मैने योगमाया के मुख से सुना है, कि मेरा शत्रु व्रजमण्डल मे ही कही जन्म लेकर आ चुका है, तब से मुझे चिन्ता हो रही है कही मेरा शत्रु बड़ा होकर मुझे मार न दे।

(19)

⇒ कंस के मन्त्री ने कहा - महाराज! यदि ऐसी बात है, तो हम आज ही बड़े-बड़े नगरो मे, छोटे-छोटे गाँवो मे, अहीरो की बस्तियो मे और दूसरे स्थानो मे जितने बच्चे हुए है, वे चाहे दस दिन से अधिक के हो या कम के, सबको आज ही मार डालेगे।

⇒ कंस ने कहा - ये तो ठीक है लेकिन तुम लोग दैत्य हो, तुम्हे, अपने घरो मे प्रवेश कौन करने देगा।

⇒ उसी सभा मे बकासुर की बहन बकी (पूतना) बैठी थी। वह बोली महाराज आप चिन्ता न करे, मै जाऊगी आपके शत्रु को मारने।

⇒ कंस ने कहा एक तो तुम इतनी लम्बी चौड़ी ऊपर से इतनी कुरूप, कैसे जाओगी, सब तुम्हे पहचान लेगे।

⇒ पूतना बोली - महाराज! अभी आपने हमारी शक्तियो को देखा नही है, इसलिए आप ऐसी बाते कर रहे है। महाराज, मैने ब्यूटी पार्लर का कोर्स कर रखा है। ऐसा पलस्तर लगाकर जाऊगी, कि जो भी मुझे देखेगा, देखता ही रह जायेगा।

⇒ कंस ने कहा - ये इतने बड़े-बड़े दाँत है इनका क्या करेगी?

⇒ पूतना बोली महाराज आप चिन्ता

(20)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ न करे. इनको कॉटकर छोटा कर देगी।
⇒ महाराज पलस्तर करने के बाद, दॉत छोटे करने के बाद भी यदि आपको कोई परिवर्तन न दिखे तो घूंघट लगा लूगी। घूंघट मे किसे पता चलेगा कि देवी है या राक्षसी है।
⇒ कंस ने कहा रुप परिवर्तित कर के तो चली जायेगी. पर मेरे शत्रु को मारेगी कैसे?
⇒ पूतना बोली आप चिन्ता न करे, आपके शत्रु को ऐसे मारूगी कि किसी को पता भी नही चलेगा।
⇒ कंस बोला- अरे! बता तो सही कैसे मारेगी?
⇒ पूतना बोली आपके शत्रु को (Sweet Poison) मीठा जहर देके मारूगी।
मै अपने पयोधर मे जहर लगाकर जाऊँगी और आपके शत्रु के मुख मे जहर भरा स्तन दे दूगी। मर जायेगा आपका शत्रु।

⇒ शुकदेव जी कहते- परीक्षित! नन्दबाबा मथुरा से गोकुल आ नही पाए तब तक पूतना रुप बदलकर गोकुल मे आ गई।
⇒ इधर वसुदेव जी ने नन्दबाबा से कहा
श्लोक - करो वै वार्षिको दत्तो राज्ञे दृष्टा वयं च वः।
नेह स्थेयं बहुतिथं सन्त्युत्पाताश्च गोकुले॥

(21)

⇒ भैया - तुमने राजा कंस को उसका सालाना कर चुका दिया। हम दोनो मिल भी चुके। अब तुम्हें यहाँ अधिक दिन नही ठहरना चाहिए; तुम जल्दी गोकुल जाओ वहाँ कुछ अमंगल होने वाला है।

⇒ वसुदेव जी के मुख से इस प्रकार श्रवण करके नन्दबाबा तुरन्त गोकुल की ओर चल दिए रास्ते मे विचार करने लगे।

श्लोक - नन्दः पथि वचः शौरेर्न मृषेति विचिन्तयन्। हरिं जगाम शरणमुत्पातागमशंकितः ॥

→ वसुदेव जी का कथन कभी झूठा नही हो सकता। कही गोकुल मे कुछ अमंगल न हो जाए इसलिए नन्दबाबा ने रास्ते मे ही हरि शरणं, हरि शरणं का जप करना प्रारम्भ कर दिया।

= हे प्रभु! हम आपकी शरण मे है, मेरे गोकुल की रक्षा करना। ऐसा कहकर बार-बार प्रार्थना करने लगे।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित! नन्दबाबा गोकुल पहुंच नही पाए तब तक पूतना रूप बदलकर गोकुल आ गई।

श्लोक - कंसेन प्रहिता घोरा पूतना बालघातिनी। शिशूंश्चचार निघ्नन्ती पुरग्रामव्रजादिषु ॥

(२२)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ कंस की आज्ञा से पूतना गोकुल मे आगई। पूतना का एक ही कार्य था, बच्चो को मारना।

⇒ बन्धुओ पूतना किसे कहते है ?
⇒(1) पूत ⇒ पवित्र, ना ⇒ नही
जो पवित्र नही है, उसे पूतना कहते है।

(२) अविद्या को पूतना कहते है।

⇒ विपरीत जानने को अविद्या कहते है।
उदा० जड़ को चेतन मानना, ईश्वर को न मानना, अंधेरे मे रस्सी को साँप समझ लेना। ये अविद्या का उदाहरण है।

⇒ बन्धुओ भगवान कृष्ण का अवतार अष्टमी तिथि को हुआ, ठीक सातवे दिन पूतना भगवान को मारने आ गई।

⇒ चतुर्दशी को पूतना भगवान को मारने आई। बन्धुओ मुझे तो लगता है पूतना ने गलत तिथि का चयन किया है, चतुर्थी को नवमी को और चतुर्दशी को ज्योतिष के अनुसार रिक्ता तिथि माना जाता है, इन तिथियो मे कोई भी शुभ कार्य नही करना चाहिए।

⇒ पूतना तो राक्षसी थी, बालको की हत्या करना उसके लिए शुभ कार्य था किन्तु तिथि का चयन गलत था।

(23)

⇒ यदि एक दिन बाद अमावस्या तिथि को आती तो शायद उसके शरीर को इतनी दुर्गति न होती, जितनी हुई।

⇒ पूतना जब नन्दबाबा के द्वार पर पहुँची तो देखा, बहुत भीड़ लगी हुई है, लोग नृत्य कर रहे है, मँगल गान कर रहे है।

नन्द के आनन्द भयो
जय कन्हैया लाल की

⇒ कोई ये नही कह रहा कि नन्द के लाला भयो जय कन्हैया लाल की सब यही कह रहे, नन्द घर आनन्द भयो जय कन्हैया लाल की।

⇒ नन्दस्त्वात्मज उत्पन्ने जाताह्लादो महामनाः।

⇒ नन्दबाबा के घर आत्मज के रूप मे अह्लाद (आनन्द) ही चल कर के आया। आनन्द सच्चिदानन्द भगवान का ही स्वरूप है। इसलिए नन्द के लाला भयो नही, नन्द घर आनन्द भयो कहकर सभी लोग नृत्य कर रहे थे।

⇒ पूतना ने विचार किया अवसर अच्छा है यहाँ सभी नृत्य करने मे व्यस्त है, मुझे कोई पकड़ भी नही पायेगा, क्यो न इसी घरसे शुभ कार्य की शुरुआत की जाए।

(२४)

PAGE NO.:
DATE: / /20

=> सुन्दर रुप, लम्बा घूंघट, हाथ मे कमल पुष्प लेकर पूतना ने नन्द महल मे प्रवेश किया।

=> भगवान कृष्ण को देखकर, गोप, ग्वाल गोपियाँ कह रही थी, साक्षात् नारायण ही लाला बनकर के आए है।

=> किन्तु गोपियो ने जब पूतना को देखा तो देखती रह गई। रुपवती रमणी (पूतना) को देखकर कहने लगी देखो, देखो साक्षात् लक्ष्मी जी नारायण का दर्शन करने के लिए पधारी है।

गोप्यः श्रियं द्रष्टुमिवागतां पतिम् ॥

= साक्षात् लक्ष्मी जी अपने पति का दर्शन करने के लिए आ रही है।

=> मईयाँ यशोदा लाला को पलना मे लिटाकर झोंका दे रही है।

ःभजनः

मेरो लाला झूले पलना।
नेक हौले झोटा दीजो ॥

① मथुरा मे याने जन्म लियो है - 2
गोकुल मे झूले पलना - 2
नेक हौले झोटा दीजो - 2
मेरो लाला — — — —

(25)

PAGE NO.:
DATE: / /20

(2) काहे को जाको बनो है पालना -2
काहे के लागे फुँदना
नेक हौले झोटा दीजो
मेरो लाला - - - - - - - -

(3) रत्न जड़ित याको बनो है पालनो
रेशम के लागे फुंदना
नेक हौले झोटा दीजो -2
मेरो लाला - - - - -

(4) चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि
चिरजीवे तेरो ललना
नेक हौले झोटा दीजो
मेरो लाला - - - - -

⇒ सभी सखी मईयाँ के पास खड़ी होकर गीत गा रही थी, इतने मे पूतना भी आ गई।

→ पूतना को देखकर एक सखी बोली, मैया जे कौन आयी है। बहुत सुन्दर श्रृंगार कर के आयी है।

⇒ एक सखी बोली तुम्हे नही पता? मैया यशोदा के बचपन की सहेली है, इसे मिलने दो मैया से।

(26)

PAGE NO.:
DATE: / /20

= पूतना ने यशोदा मैया से कहा, मैं ब्राह्मणी हूं, आपके घर लाला भयो है या बात को सुनकर के मैं भी आशीर्वाद देवे को आयी हूँ। मैया ने समझी कोई ब्राह्मणी होयगी, इस समय पूरा परिचय पूछना ठीक नही, नही तो बुरा मान जायेगी।

=) मैया ने कहा- तुम सबके आशीर्वाद से ही लाला हुआ है इसलिए तुम इसको खूब आशीर्वाद दो तब तक मैं बाहर अन्य लोगो से मिलकर के आती हूं।

=) मैया अतिथियो का सत्कार करने चली गयी, पूतना ने अपना घूंघट हटाया और लाला के पालने के पास पहुंच गयी।

=) शुकदेव जी कहते - परीक्षित ! पूतना को देखते ही भगवान ने अपने नेत्र बन्द कर लिए।

श्लोक - विबुध्य तां बालकमारिकाग्रहं
चराचरात्माऽऽस निमीलितेक्षणः ।

=) भगवान श्री कृष्ण चर- अचर सभी प्राणियो के आत्मा है। इसलिए उन्होने उसी क्षण जान लिया कि यह बच्चो को मार डालने वाला पूतना ग्रह है, और अपने नेत्र बन्द कर लिए।

⇒ पूतना को देखकर भगवान ने नेत्र बन्द क्यो किए, इस पर अनेक संतो ने अपने-अपने भाव दिए।

(1) पूतना कपट रूप से वेश बदलकर भगवान के सामने आई, इसलिए पूतना को देखकर भगवान ने अपने नेत्र बन्द कर लिए।

⇒ कपट रूपी पर्दा भगवान को पसन्द नही तुम गोरे, काले, भले, बुरे जैसे भी हो, उसी रूप मे भगवान के सामने जाओ भगवान तुम्हे अपना लेगे।

⇒ पूज्यपाद गोस्वामी जी कहते-

चौ० निर्मल मन जन सो मोहि पावा,।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥

⇒ मेरे लाल जी को छल, कपट पसन्द नही है। किन्तु पूतना और सूर्पनखा दोनो ही भगवान के सामने कपटरूप से वेश बदलकर कर आई।

⇒ द्वापर युग मे पूतना रूप बदलकर भगवान के सामने आयी, तो भगवान उसे देखकर अपने नेत्र बन्द कर लिए।

(28)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ त्रेता युग मे सूर्पनखा रुप बदलकर भगवान के सामने आयी -

चौ० सीतहि चितइ कही प्रभु बाता।
अहइ कुमार मोर लघु भ्राता॥

= मेरे राम जी ने सूर्पनखा की ओर देखा भी नही, जानकी जी की ओर देखकर उत्तर दे रहे है, भगवान राघव ने सूर्पनखा को क्यो नही देखा?

⇒ कपट का पर्दा लगाकर सूर्पनखा भगवान के सामने आई, और कपट रुपी पर्दा मेरे भगवान को पसन्द नही।

घूँघट के पट खोल रे
तोहे पिया मिलेंगे
घूँघट के पट खोल रे
तोहे पिया मिलेंगे

(1) घट-घट मे तोरे साई बसत है -2
कटु वचन मत बोल रे
तोहे पिया मिलेगे-2
घूँघट के पट खोल रे - -

(2) धन जोबन का गर्व न कीजे-2
झूठा इनका मोल रे
तोहे पिया मिलेगे-2
घूंघट के पट - -

(29)

⇒ हम पापी, कपटी, कामी, क्रोधी, भोगी, लोभी जैसे भी है, है तो भगवान के बच्चे ही, परमात्मा के सामने कैसा पर्दा, यदि पर्दा लगा होगा, तो पर्दे के पीछे क्या है, कैसे समझ आयेगा।

⇒ इसलिए परमात्मा के सामने सदैव वास्तविक रुप मे जाना चाहिए तुम जैसे भी हो, लालजी तुम्हे उसी रुप मे स्वीकार कर लेगें।

⇒ एक सन्त कहते पूतना को देखकर भगवान ने नेत्र इसलिए बन्द किए क्यो कि उन्होने नेत्र बन्द करके विचार किया होगा, कि जब मैं त्रेता युग मे अवतार लेकर आया तो पहली बार जब गुरु जी के साथ दुष्टो का संघार करने गया तो राक्षसी से भेंट हो गई।

चौ० चले जात मुनि दीन्हि देखाई।
सुनि ताड़का क्रोध करि धाई॥

(2) एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा।
दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥

⇒ त्रेता युग मे सबसे पहले ताड़िका को मारा था।

⇒ द्वापर युग मे अवतार लेकर आया तो ये पूतना आ गई, इसका भी उद्धार

करना होगा। इसलिए भगवान ने नेत्र बन्द कर लिए।

अथवा

(3) भगवान् ने नेत्र बन्द करके विचार किया होगा, मेरे दरबार में तो जन्म, जन्मान्तर का तपस्वी आता है, फिर यह राक्षसी मेरे दरबार में कैसे आ गई? इसलिए नेत्र बन्द करके भगवान ने पूतना के पूर्वजन्म का स्मरण किया।

⇒ पूतना पूर्व जन्म मे राजा बालि की बेटी रत्नमाला थी। जब भगवान वामन बनकर के राजा बलि के द्वार पर गए, तो वामन भगवान को देखकर रत्नमाला कहने लगी कितना सुन्दर बालक है. यदि ऐसा सुन्दर बालक मेरा होता तो मै इसे अपने गोदी मे लेकर दुग्ध पान कराती।

⇒ किन्तु कुछ समय के बाद जब भगवान ने दो पग मे राजा बलि का सर्वस्व नाप कर उसे बंदी बना लिया, तो रत्नमाला कहने लगी, ऐसा बालक यदि मेरा होता तो विष देकर उसे मार देती, वही रत्नमाला पूतना बनकर के आयी।

अथवा

(4) भगवान ने विचार किया होगा पूतना (बाल घातिनी) बच्चो की हत्या करने वाली राक्षसी है। भगवान हिंसा करने वालो को देखना भी पसन्द नही

⇒ करते, इसलिए भगवान ने अपने नेत्र बन्द कर लिए।

अथवा

(5) "भगवान ने विचार किया होगा मैं -

दोहा - बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥

⇒ ब्राह्मण, गो, देवता और संतो की रक्षा के लिए अवतार लेकर आया हू। असुरो का जब संघार होगा, तभी इन चारो की रक्षा होगी। दुष्टो का संघार तो करना ही है शुभारम्भ पूतना मौसी से ही कर लेते है। कोई भी शुभकार्य करते है तो मंगलाचरण करते है। इसलिए भगवान ने विचार किया पूतना का उद्धार करने से पहले मंगलाचरण तो करले इसलिए नेत्र बन्द किए।

अथवा

(6) भगवान ने नेत्र बन्द करके विचार किया होगा, पूतना वासना है, और वासना बिना उपासना के समाप्त होती नही इसलिए नेत्र बन्द करके अपने इस्ट भगवान का ध्यान किया होगा।

(32)

PAGE NO.:
DATE: / /20

अथवा

(7) एक संत बड़ा सुन्दर भाव करते है। कहते है- परमात्मा की आँखो मे सूर्य, चन्द्रमा का वास है। दाहिनी आँख मे सूर्य और बायी आँख मे चन्द्रमा।

= इसलिए सूर्य, चन्द्र दोनो ने पूतना को देखा और मन मे सोचा, राम, राम ये कैसी राक्षसी है मेरे गोविन्द को दुनियाँ प्रेम करती है, लाला को सब गोद मे ले रहे है, लाड़ लड़ा रहे है, और ये राक्षसी गोविन्द को मारने आयी है। ऐसी कुलटा राक्षसी को हम देखना नहीं चाहते इसलिए सूर्य- चन्द्रमा दोनो ने मानो अपने आपको ढक लिया।

अथवा

(8) भगवान ने नेत्र बन्द करके विचार किया होगा, मै यहाँ कृष्ण बनकर आया हूँ माखन मिश्री खाने के लिए। लेकिन माखन मिश्री तो अभी मेरे मुख मे गया नही, ये पूतना मौसी जहर देने पहले ही आ गयी। अब जहर पीना तो मेरे वश की बात नही है। इसलिए प्रभु ने आँखे बंद करके शंकर जी का ध्यान किया, बोले - बाबा जहर पीने का अभ्यास हमे नही है, इसलिए आप आकर के विष का पान कीजिए।

अथवा

(9) भगवान ने नेत्र बन्द करके विचार किया ये है तो राक्षसी, लेकिन कार्य वही करेगी

जो माँ करती है। इसलिए नेत्र बन्द करके प्रभु ने विचार किया, इसे कौन सी मुक्ति देनी चाहिए।

अथवा

(10) भगवान् ने नेत्र बन्द करके विचार किया यदि मैंने नेत्र खोलकर पूतना को देखा, और इसने मुझे देख लिया तो मेरे नेत्रों मे देखते ही मुझे मारने का विचार छोड़ देगी। भगवान की आँखे जादूभरी है, दुष्ट, पापी भी यदि एकबार भगवान के नेत्रों से देख लेता है, तो वह पाप करना छोड़ देता है, यदि पूतना ने अपना विचार बदल दिया, और यहा से बचकर चली गयी तो ऐसे ही अन्य बच्चो की हत्या करती रहेगी, इसलिए भगवान ने अपने नेत्र बन्द कर लिए

⇒ पूतना ने देखा, सब लोग नाचने गाने मे लगे है, सो लाला को तुरन्त गोद मे ले लिया। कन्हैया को गोद मे लेकर अंचल (स्तन) पान कराने लगी।

श्लोक- गाढं कराभ्यां भगवान् प्रपीड्य तत्
प्राणैः समं रोषसमन्वितोऽपिबत् ॥

⇒ भगवान ने क्रोध को अपना साथी बनाकर दोनो हाथो से पूतना के

(34)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ स्तनो को जोर से पकड़ लिया। पहले भगवान ने विष को पिया, इसके उपरान्त दुग्ध को पिया, उनके साथी क्रोध ने पूतना के प्राणो को पीना प्रारम्भ कर दिया।

श्लोक- सा मुञ्च मुञ्चालमिति प्रभाषिणी
निष्पीड्यमानाखिलजीवमर्मणि।
विवृत्य नेत्रे चरणौ भुजौ मुहुः
प्रस्विन्नगात्रा क्षिपती रुरोद ह॥

⇒ पूतना के जब प्राण निकलने लगे तो जोर से चिल्लाने लगी, अरे लाला छोड़ दे, पूतना ने दो बार मुञ्च, मुञ्च कहा, मुञ्च का अर्थ छोड़ दे से है।

⇒ प्रथम बार कहा लाला (मुञ्च) छोड़ दे, दूसरी बार कहा लाला मुझे इस संसार सागरसे मुञ्च (मुक्त) कर दो।

⇒ जब पूतना जोर-जोर से चिल्लाने लगी छोड़ दे, छोड़ दे तो भगवान ने मुस्कुराकर कहा, मौसी जी हम पै तो पकडवो ही आवे, छोडवो आवे ही नाय।

⇒ भगवान कहते मौसी जी, पहले तो हम किसी को बुलाते नही, यदि कोई बिना बुलाए आ भी जाए, तो बिना उद्धार किए छोड़ते नही।

PAGE NO.: (35)
DATE: / /20

⇒ पूतना ने देखा प्राण निकलने वाले है, उसने तुरन्त विकराल रूप धारण कर लिया और लाला को लेकर आकाश मे उड़ने लगी।

⇒ धीरे-धीरे भगवान ने उसके प्राणो को खींच लिया, पूतना जमीन पर आकर गिर गयी।

⇒ पूतना जब जमीन पर गिरी, उसका शरीर अट्ठारह किलोमीटर का हो गया, एक कोस मे तीन किलोमीटर होता है, पूतना का शरीर छः कोस लम्बा था, अर्थात अट्ठारह किलोमीटर मे पूतना का शरीर गिरा। छः कोस के अन्दर जितने भी वृक्ष थे वह भी टूट-टूटकर पूतना के ऊपर गिर गए।

⇒ पूतना जब जमीन पर आकर गिरी तो इतनी तेज आवाज हुई कि यशोदा मैया, गोप, ग्वाल, गोपी सभी डर गए।

⇒ यशोदा मैया दौड़कर पालने के पास गई, देखा पालने मे तो लाला है ही नही मैया दौड़कर बाहर की ओर भागी, पालने मे लाला नही है, लाला कहाँ गया?

⇒ सभी ग्वाल और गोपी भी मईयाँ के पीछे-पीछे भागने लगी, बाहर जाकर देखा तो पूतना मरी पड़ी और उसके छाती पर लाला क्रीड़ा कर रहे है।

(36)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ सभी ग्वाल और गोपी विचार करने लगे लाला को ऊपर से नीचे उतारा कैसे जाए?

⇒ छः कोस लम्बा, चौड़ा जब पूतना का शरीर था, तो पूतना के उदर की ऊंचाई भी बीस मन्जिल इमारत के जितनी तो होगी ही।

⇒ सभी ग्वाल इधर, उधर से नसेनियां एकत्रित करके लाए, पूतना के उदर पर चढ़ कर देखा भगवान पूतना के पयोधर के बीच मे खेल रहे थे, जल्दी से लाला को उतार कर नीचे लाए, यशोदा मैया की गोदी मे दिया, मैया ने चारो तरफ घुमाकर लाला के शरीर को देखा कही चोट तो नही लगी।

⇒ जब मैया ने देखा लाला के एक खरोंच तक नही आई, तब मैया के जान मे जान आई। मईया ने गोपियों से कहा- लाला ने मुर्दा छू लिया है, इसलिए अपवित्र हो गया है, इसे गौशाला मे ले चलो, पंचगव्य से स्नान कराकर लाला के शरीर की शुद्धि करो।

श्लोक - गोमूत्रेण, स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम्।
रक्षां चक्रुश्च शकृता द्वादशांगेषु नामभिः॥

=) यशोदा और रोहिणी जी ने लाल जी को गोमूत्र से स्नान कराया, फिर सब अंगो मे गो-रज लगायी और फिर बारहो अंगो मे गोबर लगाकर भगवान के नामो को लेकर लाला की रक्षा करे ऐसी प्रार्थना की।

श्लोक- इन्द्रियाणि हृषीकेशः प्राणान् नारायणोऽवतु
श्वेतद्वीप पतिश्चित्तं मनो योगेश्वरोऽवतु ॥

=) भगवान के नाम से भगवान को ही झाड़ा देने लगी मैया। गो पूंछ से मईयाँ लाला को झाड़ा दे रही है, और कह रही है, हृषीकेश भगवान लाला के इन्द्रियो की रक्षा करे।

=) हृषीकेश भगवान अर्थात इन्द्रियो के स्वामी, इन्द्रियो के स्वामी भगवान नारायण है, भगवान के नाम से ही भगवान को झाड़ा दिया।

=) बन्धुओ गो-मुख से ज्यादा गो-पूंछ की महिमा है। एक बार ब्रह्मा जी ने सभी देवी, देवताओ को बुलाकर के कहा, मनुष्य जब अपने घरो मे हमारा पूजन करते है, तो कोई न कोई देवी, देवता छूट ही जाते है, इसलिए क्यो न हम सभी एक जगाह एकत्रित हो जाए, जिससे एक साथ हम सभी का पूजन हो जाया करे।

=> ब्रह्मा जी ने कहा हम सभी गौ मॉता के शरीर मे विराजित हो जाते है, गौ मॉता का पूजन करने से ही हम सभी का पूजन हो जाया करेगा।

=> सभी देवता आकर के गौ मॉता के शरीर मे विराजित हो गए, ये देवी जी तो हर कार्य मे विलम्ब करती है सबसे अन्त मे गंगा जी और लक्ष्मी मॉता आयी। ब्रह्मा जी ने कहा- आप दोनो ने आने मे बहुत देर कर दी अब तो केवल दो स्थान ही शेष बचे है। गोमूत्र और गोबर, लक्ष्मी जी ने गंगा जी से कहा देवी जो स्थान शेष बचे है, इन्ही मे निवास कर लो, कमसे कम बिरादरी के लोगो के साथ तो रहेगे।

=> तब गंगा जी ने गोमूत्र और लक्ष्मी जी ने गोबर मे निवास किया। हम सभी मल, मूत्र को अपवित्र मानते है, किन्तु गौ मॉता ही एक ऐसी है, जिनका मल, मूत्र भी पूजन मे प्रयुक्त होता है।

=> गाय के मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी को मिलाकर पंचगव्य को तैयार किया जाता है, जिसके द्वारा शरीर की शुद्धि की जाती है

=> अगर किसी बच्चे को नजर लग जाए तो जिन आठ मन्त्रो को पढ़कर

PAGE NO.: (39)
DATE: / /20

⇒ यशोदा जी ने गौ माता के पूछ से लाल जी को झाड़ा लगाया। इन मन्त्रो से बच्चे को गौ पूछ से झाड़ा लगाना चाहिए।

⇒ कितनी भी भयंकर नजर लगी हो, सब उतर जायेगी। यशोदा जी ने जिन मन्त्रो को पढ़कर झाड़ा लगाया उसे बाल रक्षा कवच बोलते है।

⇒ भागवत जी के दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध) के षष्ठ अध्याय के श्लोक संख्या २२ से लेकर २९ तक जो श्लोक है। उन्हे बाल रक्षा कवच बोलते है।

⇒ यशोदा मैया ने लाला को झाड़ा देकर दुग्ध पान कराया और फिर पालने मे सुला दिया।

⇒ उसी समय, नन्दबाबा मथुरा से गोकुल मे आ पहुँचे। जब उन्होंने मृत पड़ी पूतना के भयंकर शरीर को देखा, तो वे आश्चर्यचकित हो गए।

⇒ नन्दबाबा को वसुदेव जी की कही बात याद आ गयी, वे यशोदा जी से कहने लगे वसुदेव जी तो पक्के ज्योतिषी निकले, उन्होने मुझसे कहा था, आप शीघ्र गोकुल जाओ, वहा कोई उत्पात होने वाला है, मै यहा आ भी नही पाया, देखो यहा कितना बड़ा उत्पात हो गया।

(40)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ गोप, ग्वालो ने नन्दबाबा से कहा- बाबा ये सब बाते तो होती रहेगी, पहले ये बताओ इस पूतना का क्या करे? बीच रास्ते मे मरी पड़ी है, गोकुल से मथुरा जाने का मार्ग भी बन्द हो गया।

⇒ बाबा ने कहा - करना क्या है, जितने भी वृक्ष टूट-टूटकर नीचे गिर गए है, इन सभी वृक्षो को उठाकर इस पूतना के शरीर पर रख दो, और अग्नि लगा दो। सभी ग्वाल, गोपो ने टूटे हुए वृक्षो और समिधाओ को उठाकर पूतना के शरीर पर रखकर अग्नि लगा दी।

श्लोक - दह्यमानस्य देहस्य धूमश्चागुरु सौरभः।
उत्थितः कृष्णनिर्भुक्तसपद्याहत पाप्मनः ॥

⇒ शुकदेव जी कहते- परीक्षित। जब पूतना का शरीर जलने लगा, तब उसमे से ऐसा धुंआ निकला, जिसमे से अगर की सी सुगन्ध आ रही थी।

⇒ परीक्षित जी ने पूछा - गुरुदेव, ये पूतना तो राक्षसी थी, फिर शरीर जलने पर इसके शरीर से अगर की सुगन्ध कैसे आयी?

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित। जिसके दुग्ध का पान स्वयं भगवान ने किया हो, उसके शरीर से अगर की सुगन्ध

⇒ ही आयेगी। जिस समय पूतना ने भगवान को दुग्ध पान कराया था, उसी समय उसके सारे पाप तत्काल नष्ट हो गये थे। इसलिए पूतना के शरीर को जब जलाया गया तो उसमे से अगर, चन्दन की सुगन्ध आ रही थी।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित। पूतना राक्षसी थी, किन्तु कार्य उसने वही किया जो एक माँ करती है। इसलिए जो गति माता को मिलनी चाहिए, वही गति भगवान ने पूतना को प्रदान की।

⇒ परीक्षित जी कहते - गुरुदेव! पूतना का नाम, कार्य, जाति, इच्छा कुछ भी तो अच्छी नही -

श्लोक- पूतना लोकबालघ्नी राक्षसी रुधिराशना।
जिघांसयापि हरये स्तनं दत्वाऽऽप सद्गतिम्।

⇒ फिर भगवान ने जो माता को गति मिलती है, वही गति पूतना को क्यो दी?

⇒ नाम - पूत - ना - जो पवित्र नही है।
⇒ कार्य - बच्चो को मारकर उनका रक्त पीना।
⇒ जाति - राक्षसी
⇒ इच्छा - लाल जी को मार डालने की

(42)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित! भगवान का नाम तो अकारण करुणा वरुणालय है। बिना किसी कारण के जो हम सब पर कृपा करते है, उन्हे अकारण करुणा वरुणालय कहते है। भगवान को कृपा करने के लिए किसी हेतु की आवश्यकता नही होती। भगवान तो अहैतुकी (बिना किसी कारण के) कृपा करते है।

⇒ जिस पूतना ने भगवान को छाती से चिपका कर अपने प्राण त्यागे हो उसकी मुक्ति मे संशय कैसा।

⇒ जिसमे एक भी गुण न हो, उसमे भी जो गुण ढूंढकर अहैतुकी कृपा करते है, उन्हे अकारण करुणा वरुणालय कहते है।

⇒ जिस पूतना का नाम, जाति, कार्य, इच्छा कुछ भी अच्छी नही थी, उसमे भी भगवान ने एक गुण खोज लिया।

⇒ भगवान को पूतना मारने आयी थी, परन्तु भगवान ने कहा इसने तो वही कार्य किया जो मां करती है एक गुण खोज लिया और पूतना को मुक्ति प्रदान करदी।

श्लोक- अहो बकीयं स्तनकाल कूटं
जिघांसयापाय यदप्य साध्वी
लेभेगतिं धात्र्युचितां ततोन्यं
कं वा दयालुं शरणं व्रजेम ॥

(43)

⇒ जो पूतना कालकूट विष लगाकर भगवान को मारने आई उसे भी माता की गति प्रदान करदी। इतना दयालु और कौन होगा।

ः भजन ः

न जाने कौन से गुण पर
दयानिधी रीझ जाते है,
यही हरि भक्त कहते है,
यही सद्ग्रंथ गाते है॥

(1) नही स्वीकार करते है
निमंत्रण नृप दुर्योधन का
विदुर के घर पहुचकर के,
भोग छिलको का लगाते है।
न जाने कौन से गुण - - -

(२) न आये मधुपुरी से गोपियो की,
दुख व्यथा सुनकर,
द्रौपदी के बुलाने पर,
द्वारिका से दौड़े आते है।
न जाने कौन से - - -

(3) न रोये वन गमन सुनकर
पिता की वेदनाओ पर
लिटाकर गिद्ध को निज गोद मे
आंसू बहाते है।

(44)

PAGE NO.:
DATE: / /20

न जाने कौन से गुण - - - -

⇒ भगवान् अकारण करुणा वरुणालय है, न जाने कौन सा गुण आपका उनको पसन्द आ जाए और आपका जीवन सफल हो जाए।
शुकदेव जी कहते -

श्लोक - य एतत् पूतनामोक्षं कृष्णस्यार्भकमद्भुतम्
शृणुयाच्छ्रद्धया मर्त्यो गोविन्दे लभते रतिम् ॥

⇒ पूतना मोक्ष की लीला को जो मनुष्य श्रद्धा पूर्वक श्रवण करता है, उसे भगवान श्री कृष्ण के प्रति प्रेम प्राप्त होता है।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित! भगवान् तीन महीने के हो गए, तीन महीने के बाद जब भगवान् का जन्म नक्षत्र (रोहिणी) आया, तो मईया ने उत्सव मनाया, उत्सव मे गोप और गोपियां पधारी। यशोदा जी अपने लाला का जन्मोत्सव जन्म नक्षत्र के अनुसार मनाती है। भारत मे सभी त्योहार तिथि और नक्षत्र के अनुसार मनाये जाते है। पहले जन्म नक्षत्र के अनुसार ही जन्मोत्सव मनाए जाते थे, तभी तो माताए कभी-कभी बच्चो से क्रोध मे बोल देती थी, न जाने कौन से नक्षत्र मे पैदा हुआ है।
⇒ जब सारे कार्य तिथि और नक्षत्र के अनुसार होते है, तो हम लोग क्यो अंग्रेजी तारीख के चक्कर मे पड़े है। हमे भी

→ सारे उत्सव तिथी और नक्षत्र के अनुसार करने चाहिए।

⇒ मैया यशोदा के घर मे स्त्रियो की भीड़ लगी हुई थी। उत्सव मे जितने भी लोग आए थे सभी गीत गा-गाकर नृत्य कर रहे थे।

→ मैया यशोदा ने लाल जी को स्नान कराकर सुन्दर वस्त्र, आभूषण पहनाए, उनका श्रृंगार किया।

⇒ मैया ने देखा लाल जी के नेत्रो मे नींद आ रही है, अपने पुत्र को सुलाकर पालने मे लिटा दिया। और उस पालने को शकट (छकड़ा या बैलगाड़ी) के नीचे रख दिया।

⇒ मैया ने देखा पालने मे लेटे-लेटे लाला ने पहली बार अपने आप करवट बदली मैया खुशी से झूम उठी, मेरा लाला बड़ा हो गया, उसने अपने आप करवट बदली आज तो दो-दो उत्सव होंगे। एक जन्मोत्सव की खुशी मे दूसरा करवट बदलने की खुशी मे।

श्लोक- औत्थानिकौत्सुक्यमना मनस्विनी
समागतान् पूजयती व्रजौकसः।
नैवाश्रृणोद् वै रुदितं सुतस्य सा
रुदन् स्तनार्थी चरणावुदाक्षिपत् ॥

(46)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ मैया यशोदा लाला को बैलगाड़ी के नीचे सुलाकर चली गयी। उत्सव मे जितने भी लोग पधारे थे, उन सभी के स्वागत सत्कार मे मैया व्यस्त हो गयी।

⇒ कुछ समय के पश्चात् लाल जी के नेत्र खुले, देखा मैया तो वहाँ है ही नही लाल जी ने विचार किया उत्सव तो मेरे लिए हो रहा है, तो मुझे तो वहाँ होना चाहिए। किन्तु जाऊ कैसे, अभी चल तो सकता नही।

⇒ भगवान ने विचार किया अभी तो एक ही कार्य कर सकता हूं, वह है रोना। छोटे बच्चे को जब कुछ आवश्यकता होती है, तो वह बोल तो नही सकता रोने लगता है। शिशु के रोते ही माँ समझ जाती है, कि इसे कुछ आवश्यकता है, इसलिए रो रहा है।

⇒ लाल जी को अन्य कोई उपाय नही सूझा तो वह जोर-जोर से रोने लगे। यशोदा मैया उत्सव मे आये हुए ब्रजवासियो के स्वागत - सत्कार मे इतनी तन्मय हो गई कि लाला के रोने की आवाज भी सुनाई नही दी।

⇒ इधर जब पूतना तीन महीने बाद भी लौटकर नही आई तो कंस को चिन्ता हुई और उसने शकटासुर को बुलाकर के

PAGE NO.: (47)
DATE: / /20

⇒ कहा तुम गोकुल मे जाकर पूता करो ये पूतना अभी तक लौटकर क्यो नही आई।

⇒ शकटासुर कंस की आज्ञा से गोकुल गया, और गोकुल मे प्रवेश करते ही उसे यह ज्ञात हो गया कि कृष्ण ने ही पूतना का वध किया है।

⇒ जिस बैलगाडी के नीचे लाल जी लेटे हुए थे। उसके ऊपर बहुत से मटके रखे हुए थे उसी बैलगाड़ी के ऊपर आकर शकटासुर बैठ गया।

⇒ शुकदेव जी कहते-परीक्षित! जब भगवान् के रोने की आवाज सुनकर के कोई नही आया, तब भगवान विचार करने लगे। जब तक मैं मैया के घर लाला बनकर के नही आया, तब तक तो बहुत तपस्या और प्रार्थना की, आज जब इनका पुत्र बनकर के इनके घर आ गया, तो मुझे छोड़कर सांसारिक उत्सव मे व्यस्त है।

⇒ बन्धुओ उत्सव वही है, जिसमे गोबिंद आपके निकट हो। बिना गोविन्द की उपस्थिति के कोई उत्सव नही होता।

⇒ संसार मे जब जीव को सुख की प्राप्ति होती तो वह भगवान से दूर हो जाता और जब दुःख की प्राप्ति होती तो निकट आ जाता।

(48)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ भगवान कहते मुझे वह सुख प्यारा नही जिसमे मेरा भक्त मुझसे दूर हो जाए, मुझे तो वह दुख प्यारा है, जिसमे मेरा भक्त मेरे समीप आ जाता है।

⇒ लाल जी के समीप जब कोई नही आया तो भगवान ने लेटे - लेटे ही लीला कर दी भगवान ने पैर ऊपर कर के एक लात मारी बैलगाड़ी मे, और बैलगाड़ी उलट गयी। उसके ऊपर बैठा शकटासुर भी बैलगाड़ी के नीचे दबकर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

⇒ बैलगाड़ी गिरने की जब आवाज आई तो करवट बदलने के उत्सव मे जितनी भी स्त्रियां आयी हुई थी, वे सब यशोदा और रोहिणी जी के साथ दौड़ी - दौड़ी आयी।

⇒ इस विचित्र घटना को देखकर गोप, गोपियां सभी व्याकुल हो गए। वे आपस मे कहने लगे - 'अरे' यह क्या हो गया? यह छकड़ा अपने - आप कैसे उलट गया?

⇒ वहां खेलते हुए बालको ने गोपों और गोपियों से कहा कि इस कृष्ण ने ही रोते - रोते अपने पांव की ठोकर से इसे उलट दिया है, इसमे कोई सन्देह नही।

⇒ यशोदा जी उन बालको से बोली तुम लोगो ने आज सुबह - सुबह ही क्या भाँग पी ली है।

(49)

⇒ मेरा इतना छोटा लाला, कैसे बैलगाड़ी मे ठोकर मार देगा? बालको ने कहा- मैया तेरी कसम हम सच बोल रहे है, तेरे लाला के पैर की ठोकर से ही बैलगाडी उलट गयी। मैया ने उन बालको की एक न सुनी।

⇒ अपने रोते हुए लाला को गोदी मे उठाकर मैया ने -

श्लोक- रुदन्तं सुतमादाय यशोदा ग्रहशंकिता।
कृतस्वस्त्ययनं विप्रैः सूक्तैः स्तनमपाययत्॥

⇒ ब्राह्मणो से वेदमन्त्रों के द्वारा शान्तिपाठ कराया और फिर वे उसे स्तन (दुग्ध) पिलाने लगी।

~ शकटासुर वध कथा सार :-

⇒ शकट = अर्थात गाड़ी, गाड़ी मे दो बैल लगते है, हमारे जीवन की इस गाड़ी मे भी दो बैल है। बैल माने धर्म, बैल धर्म का स्वरुप होता है। गाय धरा का स्वरुप होती है। दो बैलो से गाड़ी चलती है, इसका मतलब? लौकिक धर्म और पारलौकिक धर्म, इन दो धर्मो से ही हमारे जीवन को गति प्राप्त होती है।
यशोदा मैया ने जिस बैलगाड़ी मे एक भी बैल नही था उसके नीचे लालजी

(50)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ को लिटा दिया, और बैलगाड़ी के ऊपर दूध दही की मटकी रख दी, इसका मतलब?

⇒ आपने यदि अपने जीवन को धर्म विहीन कर दिया तो सर्वथा धर्मनिरपेक्ष हो गए, दोनो बैल निकल गए, पूर्वजो से इतनी सम्पत्ति प्राप्त हो गई, हमे किसी के सामने हाथ पसारने की जरुरत पड़ेगी नही। मौजकरेगे जीवन भर। इसलिए संसार मे हम किसीसे डरते नही, लौकिक धर्म त्याग दिया। परलोक को हम मानते नही, मरने के बाद कौन कहा जायेगा? किसने देखा?

⇒ जब जीवन से धर्म रुपी दोनो बैल निकल गए, तो उसका परिणाम क्या हुआ? कन्हैया का पालना बैलगाड़ी के नीचे और माट, मटका गाड़ी के ऊपर रखे है, जबकि होना ये चाहिए परमात्मा को ऊपर रखो, दुनियादारी को नीचे रखो हमने परमात्मा को नीचे कर दिया संसार को ऊपर रख लिया। भगवान रोये, ताकि मेरी तरफ ध्यान आए लोगो का, पर कोई नही आया, तब भगवान को अच्छा नही लगा, तब भगवान को लात मारनी पड़ी, गाड़ी को उलटा करना पड़ा, इसका क्या मतलब हुआ?

⇒ जब आप भगवान को भुलाकर के जीवन को विपरीत स्थिति मे स्थित कर दोगे, भगवान को नीचे और भोग को ऊपर कर दोगे तब भगवान को

⇒ लात मारनी पड़ती है। जब भगवान को भूलकर के हम भोग विलासिता मे ही हम डूबने लगते है, तब भगवान को अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ न कुछ करना पड़ता है, और जब जीवन मे दुःख आता है तो बड़े से बड़ा नास्तिक भी भगवान को मानने लगता। भक्त भगवान को कभी भूले न इसलिए समय-समय पर भगवान ऐसी लीला करते रहते है।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित ! कुछ दिनो बाद भोले बाबा कैलाश पर्वत से गोविन्द के दर्शन करने गोकुल मे आये। भगवान जितने भी अवतार धारण करते है, वहाँ शंकर जी उनको देखने जरूर आते है।

⇒ भोले बाबा ने सुन्दर जोगी का वेश बनाया और हाथ मे डमरू, त्रिशूल लेकर कैलाश से गोकुल की ओर चल दिए।

⇒ गले मे सर्पो और मुण्डो की माला, कान मे बिच्छू के कुण्डल पैरो मे कातर की पायल अलख निरंजन कहते हुए भोले बाबा नन्द जी के द्वार पर पहुंच गए।

: भजन :

मैया तेरे द्वारे बाला जोगी आयो - 2
यशोदा तेरे द्वारे बाला जोगी आयो - 2
मैया तेरे — — — — — —

(52)

PAGE NO.:
DATE: / /20

(7) अंग भभूत गले मुण्ड माला
शेषनाग लिपटायो
बाँको तिलक भाल मे चन्दा
घर, घर अलख जगायो
मैया तेरे - - - - - - - - -

⇒ मैया ने खिड़की मे से देखा और पूछा- कौन है बाहर? क्या चाहिए?

⇒ भोले बाबा बोले - मैया मै हू जोगी, मुझे ज्योतिष विद्या का भी ज्ञान है, आपके लाला का दर्शन करने के लिए आया हू। मै आपके लाला की रेखाओ को देखकर बता दूंगा, बड़े होकर कौन-कौन सी लीला करेगे, मन मे विचार कर रहे, चाहे जितने झूठ बोलने पड़े पर लालजी के दर्शन तो कर के ही जायेगे।

⇒ बन्धुओ आपसे एक निवेदन करू इन हाथो की रेखाओ से अधिक अपने कर्म पर भरोसा करिए, प्रत्येक कार्य ईमानदारी के साथ करिए, किसी के प्रति हिंसा का भाव मत रखिए, सबके अन्दर मेरे गोविन्द के दर्शन करिए, हाथो की रेखा कितनी भी कटी हो, आपकी किस्मत चमकने से आपको कोई रोक नही सकता।

⇒ इन हाथों की लकीरो से फैसले नही होते
किस्मत उनके भी होती है जिनके हाथ नही होते

(53)

PAGE NO.
DATE: / /20

⇒ अगर हाथों की लकीरों से ही किस्मत के फैसले होते, तो जिनके हाथ नही है, उनकी तो किस्मत होती ही नही।

⇒ बन्धुओ भोले बाबा की बात सुनकर यशोदा मैया बोली - महाराज जी, माफ करो। आपको भोजन चाहिये, तो ले जाओ। आटा, दाल, चावल, कम्बल, बर्तन जो चाहिये सो ले जाओ; दर्शन नही कराऊंगी।

⇒ शंकर जी बोले - हम तो बड़ी आशा लेकर आये है मैया।

⇒ मैया ने कहा - महाराज, मैं अस्सी बारस की हो गयी, तुम्हे देखकर मुझे डर लगा रहा। लम्बे-लम्बे साँप-बिच्छू कानन मे, चिता की भस्म लगा रखी है, बाघम्बर पहन रखा है, हाथों मे डमरु और त्रिशूल है। मै लाला के दर्शन नही कराऊंगी।

⇒ महाराज - हीरा, जवाहरात, सोना, चाँदी, गऊ जो चाहिए ले लो, पर लाला के दर्शन नही कराऊंगी।

(2) ले भिक्षा चली नंदरानी
कंचन थाल सजायो
लो भिक्षा जोगी,
जाओ आसन पर
मेरो बालक है डरायो
मैया तेरे द्वारे - - - - - - - -

⇒ भोले बाबा कहते - मैया मुझे तुम्हारे हीरे जवाहरात, सोना, चाँदी, कुछ नही चाहिए।

(3) ना चाहिए तेरी दौलत दुनिया
ना ये कंचन माया
अपने लाल का दर्श करा दे
मै दर्शन करने आयो
मैया तेरे द्वारे बाला जोगी आयो - - - -

⇒ मैया मुझे तो बस एक बार अपने लाला का दर्शन करा दो।

⇒ मैया बोली - बाबा जी आपका प्रेम अपनी जगह है, आप तो मेरे लाला के दर्शन करोगे, पर मेरा लाला भी तो आपको देखेगा, आपको देखकर मेरा लाला कही डर गया तो? मै दर्शन नही कराऊँगी।

⇒ शंकर जी बोले - देखो मैया हम तो लाला के दर्शन करके ही जायेंगे, जब तक आप हमे लाला के दर्शन नही कराओगी तब तक आप के द्वार से उठकर हम कही नही जायेगे। अभी आपने जोगियो की हट नही देखी है।

⇒ मैया बोली - बाबा तुमने अभी त्रिया हठ नही देखी है। बैठे रहो, द्वार के बाहर मै महल का दूसरा द्वार खोल दूँगी, उसमे से लाला

बाहर जायेगा। लेकिन तुम्हे दर्शन नही कराऊँगी

⇒ शंकर जी बोले लाल जी बड़े होगे, कभी तो बाहर आयेगे, मै इसी द्वार पर बैठा रहूँगा तब तो दर्शन होगे। मैया बोली मेरे घर मे पन्द्रह द्वार है, मै दूसरे द्वार को खोल लूँगी। बाबा बोले- लाल जी विद्या अध्ययन के लिए गुरुकुल तो जायेगे, तब दर्शन कर लूँगा। मैया बोली- मै गुरु जी को महल के अन्दर ही बुला लूगी, पर लाला के दर्शन नही कराऊँगी।

⇒ भोले बाबा बोले - लाल जी बड़े होगे तो विवाह करने तो जायेगे, मैया बोली- मै लड़की वाले को महल मे बुलाकर फेरे करा दूँगी, पर लाला तुम्हे नही दिखाऊँगी।

⇒ बाबा बोले- बड़ी हठी है मैया, तो मैया हम चले जाये? मैया बोली, मैने तो बिल्कुल नही कहा, चले जाओ। खूब प्रेम से विराजो, प्रेम से भोजन पाओ। जो सामग्री चाहिये, सब दूंगी, लेकिन लाला के दर्शन नही कराऊँगी।

⇒ बाबा बोले- मैया इच्छा तो लाला के दर्शन की थी, अब आप दर्शन नही कराना चाहती तो मत कराओ, भोले बाबा उदास होकर के चल दिए और यमुना के किनारे जाकर बैठ गए। और ठाकुर जी से कहने लगे-

तेरी चौखट पे आना मेरा काम है।
मेरी बिगड़ी बनाना तेरा काम है॥

⇒ भोले बाबा के जाते ही मेरे गोविन्द ने रोना शुरु कर दिया। मैया ने गोद मे लेकर दुग्ध पान कराया पर गोविन्द ने रोना बन्द नही किया।

⇒ गोपियों की भीड़ लग गयी, मैया क्या हुआ? मैया बोली, जाने क्या हुआ? अच्छा भला सो रहा था, अब नींद खुली तो रोने लगा, रोना बन्द ही नही कर रहा।

⇒ गोपी बोली - किसी की नजर तो नही लग गयी। मैया बोली - अब मेरी नजर लग गयी हो तो पता नही, और कोई तो यहाँ आया नही।

⇒ गोपी बोली, आज सवेरे से तुम्हारे घर कोई आया तो नही था?

⇒ मैया बोली, आज सवेरे एक जोगी आया था, और कह रहा था कि अपने लाला के दर्शन करा दो। गले मे सांप और कान मे बिच्छू लटका रखे थे, मैने दर्शन नही कराए, बहना, वो बाबा के जाते ही लाला रोने लगा।

⇒ गोपी बोली- मैया मुझे लगता है, बाबा कोई जादू-टोना कर गया। मैया बोली- तो बाबा को जल्दी बुलाकर लाओ। गोपी दौड़ी-दौड़ी गयी, यमुना किनारे बैठे हुए भोले बाबा मिल गए।

⇒ गोपी को आता देख भोले बाबा समझ गए कि गोविन्द ने कुछ लीला कर दी।

(57)

PAGE NO.
DATE

=> गोपी ने बाबा से कहा -

चल रे योगी नन्द भवन मे
तोहे यशोदा माय बुलावै।
वाके लाला को नजर लगी है,
तोसे राई लोन करवावै॥

=> बाबा जल्दी चलो, यशोदा मैया ने आपको बुलाया है, उसके लाला को नजर लग गयी है।

=> भोले बाबा दौड़े, दौड़े आये, मैया से बोले मैया यदि मैंने नजर उतार दी तो लाला के दर्शन करायेगी।

=> मैया बोली - नजर उतार दो बाबा, खूब दर्शन कराऊँगी।

=> मैया बोली - एक बात बताओ तुम्हे नजर उतारना आता है बाबा?

=> बाबा बोले - मैया - हम भूतनाथ हैं, बड़े-बड़े भूत, प्रेत भी हमे देखकर भाग जाते हैं।

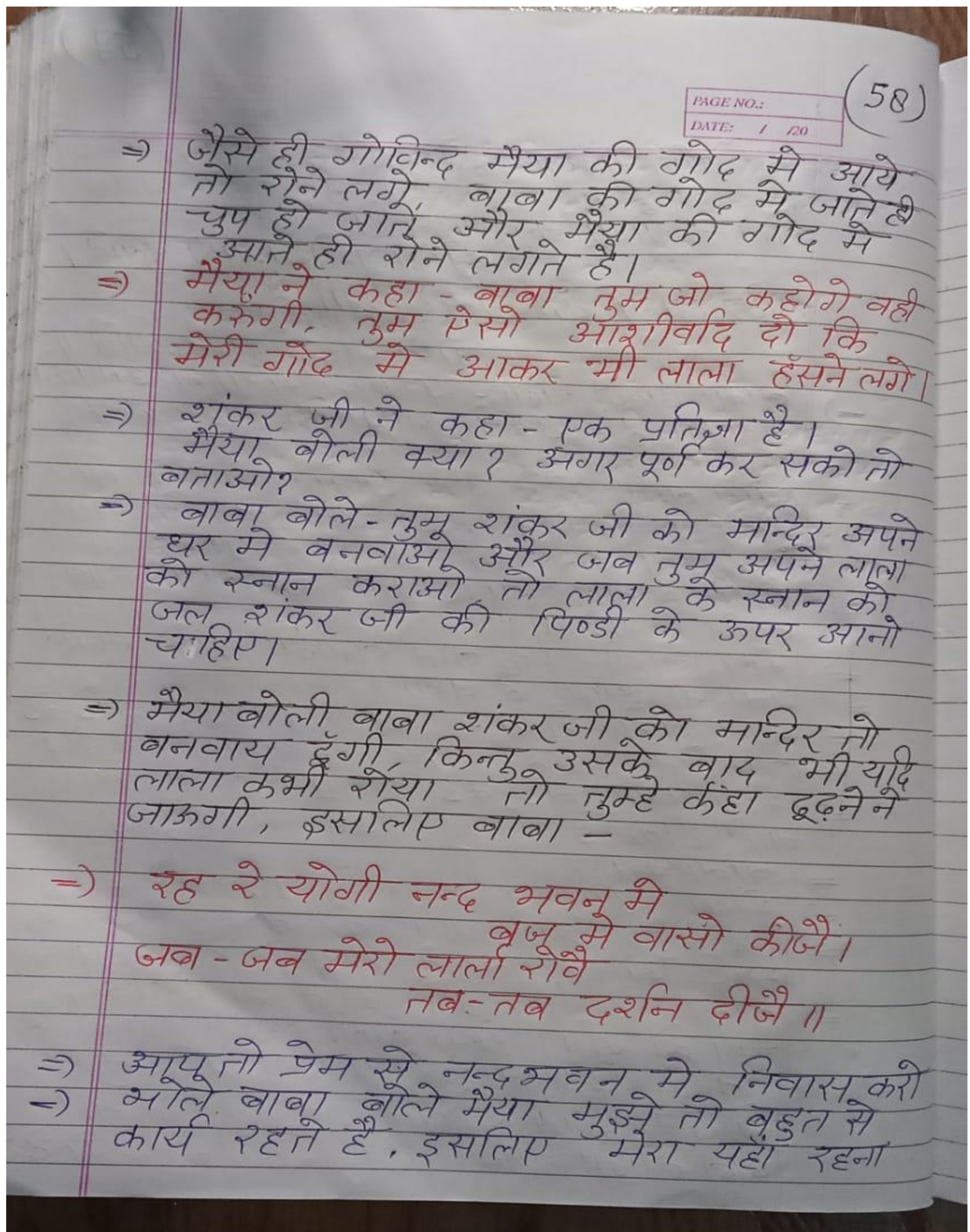
=> मैया बोली बड़े-बड़े भूत प्रेत भगाए, वो बात ठीक है किन्तु बाबा आप खुद?

=> बाबा क्या?

=> मैया - आप खुद भूत जैसे दिख रहे हैं।

=> डरते हुए मैया - लाला को बाहर लेकर के आई और बाबा के हाँथ मे दे दिया।

=> बाबा की गोद मे आते ही गोविन्द चुप हो गये। मैया बोली बाबा लगता है तुम्हे कोई जादू टोना आता है, तुम्हारे गोद मे आते ही लाला चुप हो गया। अब लाओ लाला को मेरी गोद मे दे दो


(58)
PAGE NO.:
DATE: / /20
⇒ जैसे ही गोविन्द मैया की गोद मे आये तो रोने लगे, बाबा की गोद मे जाते ही चुप हो जाते और मैया की गोद मे आते ही रोने लगते है।
⇒ मैया ने कहा - बाबा तुम जो कहोगे वही करुंगी, तुम ऐसो आशीर्वाद दो कि मेरी गोद मे आकर भी लाला हँसने लगे।
⇒ शंकर जी ने कहा - एक प्रतिज्ञा है। मैया बोली क्या? अगर पूर्ण कर सको तो बताओ?
⇒ बाबा बोले - तुम शंकर जी को मन्दिर अपने घर मे बनवाओ और जब तुम अपने लाला को स्नान कराओ तो लाला के स्नान को जल शंकर जी की पिण्डी के ऊपर आनो चाहिए।
⇒ मैया बोली बाबा शंकर जी को मन्दिर तो बनवाय दूँगी, किन्तु उसके बाद भी यदि लाला कभी रोया तो तुम्हे कहाँ ढूढ़ने जाऊगी, इसलिए बाबा -
⇒ रह रे योगी नन्द भवन मे
बृज मे वासो कीजै।
जब - जब मेरो लालो रोवै
तब - तब दर्शन दीजै॥
⇒ आप तो प्रेम से नन्दभवन मे निवास करो
⇒ भोले बाबा बोले मैया मुझे तो बहुत से कार्य रहते है, इसलिए मेरा यहाँ रहना

(59)

⇒ असम्भव है, आप तो शिव जी का मन्दिर बनवा देना फिर लाला नही रोयेगा।

⇒ नन्दबाबा और यशोदा जी ने अपने महल मे शिव जी का एक मन्दिर बनवाकर शंकर जी की पिण्डी के रूप मे स्थापना की, जिन्हे नन्देश्वर महादेव के नाम से जानते है।

⇒ शंकर जी ने लाल जी को मैया की गोदी मे दिया और पाँच बार गोविन्द की परिक्रमा की। और श्रृंगी नाद किया।

पन्च बेर परिकम्मा करके
श्रृंगी नाद बजायो
'सूर' श्याम बलिहारी यांपे
अपनो भाग जगायो

मैया तेरे द्वारे बाला जोगी आयो - - -

⇒ शंकर जी बोले- मैया अब चलते है। मैया बोली बाबो इतनी दूर से आये हो, कुछ लेते जाओ,

⇒ मैया दौड़ी - दौड़ी भवन मे गयी और एक थाल मे हीरा, जवाहरात, सोना, चाँदी भर कर ले आयी। मैया बाबा को हीरे जवाहरात से भरी थाल भेट मे देने लगी।

⇒ भोले बाबा बोले- मैया मुझे आपके हीरे, जवाहरात नही चाहिए

(60)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ मैया - नैना भये है निहाल निरख मुख लाल को
प्यासे नैना भये है निहाल निरख मुख लाल को

① ये पत्थर किस काम के मेरे
जोगी हो गया मालामाल
निरख मुख लाल को - - - - -
मेरे नैना भये है - - - - - -

⇒ बाबा बोले मैया - मेरी पत्नी सन्तो, ब्राह्मणो को अन्न ब्रह्म का दान करती है और तुम हम जैसे जोगियो को परब्रह्म का दान करती हो भिक्षा मे परब्रह्म को गोदी मे देती हो धन्य हो तुम मैया, इतना कहकर भोले बाबा गोविन्द से विदा लेकर वहां से चले गये।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित ! एक दिन की बात माता यशोदा अपने प्यारे लाला को गोद मे लेकर दुलार रही थी। तभी कंस के द्वारा भेजा हुआ एक तृणावर्त नाम का दैत्य वहा आ गया।

⇒ तृणावर्त कंस का निजी सेवक था। कंस की प्रेरणा से बवंडर के रूप मे गोकुल मे आ गया।

⇒ तृणावर्त को आता देख श्री कृष्ण ने विचार किया मामा जी ने एक और खिलौना खेलने के लिए भेज दिया। भगवान के माँ के गाँव से जो भी आता, वह मामा ही हुआ।

(61)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ भगवान ने विचार किया यदि मै, मैया की गोदी मे ही बैठा रहा तो, ये तृणावर्त मेरे साथ मैया को भी उड़ाकर ले जायेगा। इसलिए भगवान ने लीला की।

श्लोक – "भूमौ निधाय तं गोपी विस्मिता भारपीडिता।
महापुरुषमादध्यौ जगतामास कर्मसु ॥

⇒ भगवान् श्री कृष्ण ने मैया की गोदी मे बैठे-बैठे ही अपने शरीर का भार बढ़ा दिया। लाल जी चट्टान के समान भारी बन गए। मैया यशोदा लाल जी के भार को न सह सकी, मैया की जंघा दुखने लगी भार से पीड़ित होकर मैया ने श्रीकृष्ण को प्रथ्वी पर बैठा दिया। इसके बाद भगवान पुरुषोत्तम का स्मरण करके घर के काम मे लग गयी।

⇒ अवसर मिलते ही तृणावर्त श्रीकृष्ण को उड़ाकर आकाश मे ले गया। उसने वृज रज से सारे गोकुल को ढक लिया और लोगो की देखने की शक्ति हर ली। सारा वृज दो घड़ी तक रज और तम से ढका रहा। यशोदा मैया ने अपने पुत्र को जहां बैठा दिया था, वहां जाकर देखा तो श्री कृष्ण वहा नहीं थे।

(62)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ अपने पुत्र का पता न पाकर यशोदा जी को बड़ा शोक हुआ। वे अपने पुत्र की याद करके बहुत ही दीन हो गयीं।

⇒ बुड्ढे के मर जाने पर गाय की जो दशा हो जाती है वही दशा मैया यशोदा की हो गयीं। वे पृथ्वी पर गिर पड़ीं।

⇒ इधर तृणावर्त बवंडर रूप से जब भगवान श्री कृष्ण को आकाश मे उठा ले गया, तब -

श्लोक - तृणावर्तः शान्तरयो वात्यारूपधरो हरन्।
कृष्णं नभोगतो गन्तुं नाशक्नोद् भूरिभारभृत॥

⇒ उनके भारी बोझ को न सँभाल सकने के कारण उसका वेग शान्त हो गया। वह अधिक चल न सका।

⇒ भगवान श्री कृष्ण ने तृणावर्त का गला पकड़र दबा दिया। वह असुर निश्चेष्ट (चेष्टा न करने वाला) हो गया। उसकी आँखे बाहर निकल आयी।

श्लोक - तमन्तरिक्षात् पतितं शिलायां
विशीर्णसर्वावयवं करालम्।
पुरं यथा रुद्रशरेण विद्धं
स्त्रियो रुदत्यो ददृशुः समेताः॥

(63)

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ भगवान श्री कृष्ण ने उसे एक चट्टान पर पटक दिया, उसका एक-एक अंग चकनाचूर हो गया - ठीक वैसे ही जैसे भगवान शंकर के बाणो से आहत हो त्रिपुरासुर गिरकर चूर - चूर हो गया था।

⇒ चट्टान पर पड़े दैत्य के वक्षःस्थल पर लाल जी लटक रहे थे। यह देखकर गोपियाँ विस्मित हो गयी। उन्होने झटपट वहाँ जाकर श्री कृष्ण को गोद मे ले लिया और लाकर यशोदा मैया को दे दिया। श्री कृष्ण को फिर पाकर यशोदा आदि गोपियों तथा नन्द आदि गोपो को अत्यन्त आनन्द हुआ।

⇒ यशोदा मैया कहने लगी हमने ऐसा कौन सा तप, भगवान की पूजा, प्याऊ, कुआँ, बावली बाग - बगीचे, यज्ञ, दान अथवा जीवो की भलाई की थी, जिसके फलस्वरूप मेरा लाला मरकर भी अपने स्वजनो को सुखी करने के लिए लौट आया है। अवश्य ही हमारे बालक पर नारायण की कृपा है।

⇒ मैया ने गाऊ की पूँछ से लाला को झाड़ा लगाया, इसके उपरान्त ब्राह्मणो को दान दिया।

⇒ लाल जी धीरे - धीरे बड़े हो रहे, मैया गोदी मे खिलावे, भावना करे वो दिन

(64)

PAGE NO.:
DATE: / /20

कब आयगो, जब लाला मोकू मैया कहके बोलेगो, पईया, पईया डोलेगो। यशोदा जी कभी - कभी गाने -

:- भजन :-

कब मैया कह-कह बोलेगो
मेरो बारो सो कन्हैया
सहेली कब मैया कह-कह बोलेगो
मेरो बारो सो कन्हैया

(1) पलना उतर गोदी मे आवै
मैया-मैया मोहि बुलावै
मेरे कानन मे अमृत घोलेगो
मेरो बारो सो कन्हैया

सहेली कब मैया - - - - - -

(2) गोदी उतर अँगना मे खाँवै
अँगना मे खाँवै, लाला चरण चलावै
कब पईया- पईया डोलेगो
मेरो बारो सो कन्हैया

सहेली कब मैया - - —

= एक दिन ठाकुर जी ने मैया का मनोरथ पूर्ण कर दिया। रसिको ने गाया।

(65)

PAGE NO.:
DATE: / /20

-: पद :-

कहन लागे मोहन मैया-मैया
नन्दराय जी को बाबा-बाबा
दाऊ जी को भईया-भईया
कहन लागे मोहन — — —

(1) ऊँचे चढ़के यशोदा टेरे-2
लै-लै नाम कन्हैया-2
कहन लागे मोहन — — —

(2) दूरि खेलन जनि जाहु लाला रे
मारैगी काहू की गैया
कहन लागे मोहन — — — —

(3) सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस को
चरननि की बलि जैया
कहन लागे मोहन — — —

अब तो लाल जी ने मैया कहना प्रारम्भ कर दिया, लाला कहे मैया, मैया कहे कन्हैया। पहले मैया कहती लाला बोलेगा कब, लाला ने बोलना प्रारम्भ किया तो मैया कहे चुप कब होगा। अब तो सुबह से शाम मैया, ओ मैया कहने लगे।

श्लोकः- एकदार्भकमादाय स्वांकमारोप्य भामिनी।
प्रस्नुतं पाययामास स्तनं स्नेहपरिप्लुता ॥

⇒ एकदिन की बात यशोदा जी अपने प्यारे शिशु को अपनी गोद मे लेकर बड़े प्रेम से स्तनपान करा रही थी। ठाकुरजी ने मैया के पयोधर को पकड़ लिया, मैया ने विचार किया अगर मैं लाला के पास ही बैठी रहूगी तो घर के अन्य कार्य कब करूगी?

श्लोक- पीतप्रायस्य जननी सा तस्य रुचिरस्मितम्।
मुखं लालयती राजन्जृम्भतो ददृशे इदम् ॥

⇒ इसलिए मैया ने भगवान के मुसकानयुक्त मुख को चूमकर उन्हे धरती पर बैठा दिया। लालजी ने विचार किया मैया तो मुझे अकेले छोड़कर जा रही, किन्तु मैं तो मैया की गोद मे बैठकर अभी और स्नेह, प्रेम पाना चाहता हू।

⇒ बन्धुओ जब कोई वस्तु हमे सहज (आसानी) से प्राप्त हो जाती है, तो हमे उसकी कीमत समझ मे नही आती। अपने संकल्प मात्र से सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन करने वाले परमात्मा यशोदा मैया की गोदी मे बैठे है, और वह कुछ और अधिक समय तक मैया का स्नेह, प्रेम पाना चाहते है, किन्तु मैया को

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ घर के कार्य याद आ रहे है, वह लाल जी को अकेला छोड़कर अन्य गृह कार्यों को पूरा करने के लिए जाना चाहती है।

⇒ भगवान ने विचार किया, लगता है मैया को बताना पड़ेगा मै कौन हूं?

⇒ मैया यशोदा ने जब भगवान के मुसकान युक्त मुख को चूम कर उन्हे धरती पर बैठाया तभी बालकृष्ण लाल ने जँभाई ली, अचानक मैया की दृष्टि भगवान के मुख पर गई।

⇒ मैया ने भगवान के मुख मे आकाश, अन्तरिक्ष, ज्योतिर्मण्डल, दिशाएँ, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु, समुद्र, द्वीप, पर्वत, नदियां, वन और समस्त चराचर प्राणियो के दर्शन कर लिए।

श्लोक- सा वीक्ष्य विश्वं सहसा राजन् संजातवेपथुः।

सम्मील्य मृगशावाक्षी नेत्रे आसीत् सुविस्मिता ॥

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित! अपने पुत्र के मुख मे इस प्रकार सहसा सारा जगत देखकर मृगशावक नयनी यशोदा जी का शरीर कांप उठा। उन्होने अपने नेत्रो को बन्द कर लिया।

⇒ भगवान ने विचार किया यह सब देखकर कही मैया को मूर्छा (बेहोश) न आ जाए इसलिए अपनी लीला को अदृश्य कर दिया।

PAGE NO.: 68
DATE: / /20

⇒ एक दूसरा कारण सन्त जन बताते हैं भगवान ने विचार किया कि मैं तो मैया के हाथों से माखन मिश्री खाने आया, मैया का प्रेम, स्नेह प्राप्त करने आया, यदि मैया ने जान लिया मैं भगवान हूँ, तो कल से माखन मिश्री खिलाने की जगह स्वर्ण के सिंहासन पर बैठाकर मेरी पूजा करेगी, इसलिए अपनी लीला को अदृश्य कर दिया।

⇒ कुछ समय के पश्चात मैया के नेत्र खुले तो लाला के मुख को खोलकर एक, एक दाँत पकड़, पकड़कर देखने लगी, विचार करने लगीं अभी तो मैंने लाला के मुख मे नदी, पर्वत सब देखा था, इतनी शीघ्र सब अदृश्य कैसे हो सकता है।

⇒ बहुत देखने पर भी लाला के मुख मे पुनः नदी, पर्वत नही दिखे तो विचार करने लगी, अरे! यशोदा तू भी ना, दिन मे बैठे-बैठे भी स्वप्न देखने लगती है।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित! भगवान एक वर्ष के हो गये किन्तु भगवान का नामकरण अभी तक नही हुआ। एक दिन वसुदेव जी अपने कुल पुरोहित श्री गर्गाचार्य जी के पास गए।

69

श्लोक:- गर्गः पुरोहितो राजन् यदूनां सुमहातपाः।
व्रजं जगाम नन्दस्य वसुदेव प्रचोदितः ॥

⇒ वसुदेव जीने गर्गाचार्य जी से कहा- महाराज हमारा बालक एक वर्ष का हो गया किन्तु नामकरण अभी तक नहीं हुआ, आप हमारे कुलपुरोहित है, इसलिए आप गोकुल जाकर हमारे बालको का नामकरण करके आइये।

⇒ गर्गाचार्य जी ने वसुदेव जी से कहा -मैं तो तुम्हारा कुलपुरोहित हूं और यदि मैं नन्दजी के घर जाऊंगा नामकरण करने के लिए तो कंस को संदेह हो जायेगा मुझ पर नन्दबाबा के कुलपुरोहित तो शांडिल्य मुनि है नन्दबाबा के घर मैं जाऊंगा तो कंस के मन मे अनेक प्रश्न उठेगें। गर्गाचार्य जी नन्दबाबा के घर क्यो गये? नन्दबाबा ने गर्गाचार्य जी से कौन सी पूजा कराई ?

⇒ वसुदेव जी ने गर्गाचार्य जी से कहा महाराज आप नन्दबाबा से कह देना कि घर के सदस्यो के अलावा और कोई भी नामकरण मे नही आयेगा, कोई उत्सव नही होगा।

आप चुपचाप एकान्त गौशाला मे केवल स्वस्तिवाचन करके बालको का नामकरण संस्कार करा देना।

70

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ बन्धुओ हमारे सनातन धर्म मे सोलह संस्कारो की चर्चा की गई है। किन्तु विडंबना इस बात की है, आज लोग सोलह संस्कार कौन कौन से है, उनके नाम तक नही जानते?

⇒ जातकर्म मे क्या होता है, कैसे जातकर्म संस्कार सम्पन्न कराया जाता इसका बोध होना तो बहुत दूर की बात है।

⇒ हमारे यहाँ सोलह संस्कार बताये गये है।

(1) गर्भाधान
(2) पुंसवन
(3) सीमन्तोन्नयन
(4) जातकर्म
(5) नामकरण
(6) निष्क्रमण
(7) अन्नप्राशन
(8) मुंडन संस्कार
(9) कर्णविधन
(10) विद्यारंभ
(11) उपनयन
(12) वेदारंभ
(13) केशांत
(14) समावर्तन
(15) विवाह संस्कार
(16) अन्त्येष्टि

⇒ वसुदेव जी की प्रेरणा से गर्गाचार्य जी गोकुल आये। और नन्दबाबा से बोले

71

⇒ मुझे रोहिणी नन्दन का नामकरण करना है इसके साथ ही आपके बालक का नामकरण कर दूंगा। गर्गाचार्य जी पूर्ण योजना बनाकर के आये कि नन्दबाबा से क्या कहना है। नन्दबाबा को तो यही ज्ञात है बड़ा वाला बालक वसुदेव जी का और छोटा वाला उनका है। इसलिए गर्गाचार्य ने कह दिया वसुदेव जी के पुत्र के साथ ही आपके बालक का नामकरण संस्कार कर देंगे।

⇒ बड़े बालक का नामकरण संस्कार करते हुए गर्गाचार्य जी ने कहा -

श्लोकः॰ अयं हि रोहिणीपुत्रो रमयन् सुहृदो गुणैः।
आख्यास्यते राम इति बलाधिक्याद् बलं विदुः॥

⇒ यह जो रोहिणी का पुत्र है, इसका नाम रौहिणेय होगा। यह अपने गुणो के द्वारा सभी को आनन्दित करेगा। इसलिये इसका दूसरा नाम राम होगा। इसके बल की कोई सीमा नही होगी, अतः इसका एक नाम बल भी है।

⇒ यदूनामपृथग्भावात् संकर्षणमुशन्त्युत।

⇒ यह बालक बड़ा होकर अपने परिवार के लोगो मे जो भेदभाव होगा, उसे मिटाकर प्रेम की भावना का विस्तार करेगा, इसलिए

⇒ इसका एक नाम संकर्षण होगा।

⇒ बड़े बालक का नामकरण करने के पश्चात छोटे बालक का नामकरण संस्कार करते हुए गर्गाचार्य जी कहते है -

श्लोकः आसन् वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः।
शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः॥

⇒ यह जो सॉवला - सॉवला है, यह प्रत्येक युग मे शरीर ग्रहण करता है। पिछले युगो मे इसने क्रमशः श्वेत, रक्त और पीत ये तीन विभिन्न रंग स्वीकार किये थे। अबकी यह कृष्णवर्ण हुआ है। इसलिए इसका नाम कृष्ण होगा।

(1) "कर्षति इति कृष्णः" - जो सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेते है वह कृष्ण है।

(2) "कर्षति आकर्षति इति कृष्णः" - जो सबको आकर्षित कर ले, शत्रुओ को भी आकर्षित करने की जिसमे क्षमता हो, जो सभी के मन को अपनी ओर खींच ले वह कृष्ण है।

(3) कृष् - भू वाचक शब्द है।
ण - निवृत्तिवाचक शब्द है।
अर्थ - पृथ्वी पर रहने वाले किसान

कृष् धातु से ण प्रत्यय लगाने पर कृष्ण बनता है।
कृषिर्भू-वाचकः शब्दो णश्च निर्वृति-वाचकः। 73
तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते॥

⇒ कृष्ण कहने से भव बंधनो से मुक्त हो जाते है।

⇒ कृष्ण सांवले (काला) रंग के है, काला रंग सभी पर चढ़ सकता है, पर काले पर दूसरा रंग नही चढ़ सकता।

⇒ कृष्ण की भक्ति का रंग सभी पर चढ़ सकता है, पर कृष्ण भक्तो पर दूसरा रंग नही चढ़ सकता।

⇒ गर्गाचार्य जी कहते - नन्द जी आपके पुत्र का एक नाम वासुदेव भी होगा। नन्द जी ने कहा जो वसुदेव का पुत्र है उसे वासुदेव कहते है, किन्तु यह तो मेरा पुत्र है।

⇒ गर्गाचार्य जी ने बात को घुमाते हुए कहा-

श्लोक- प्रागयं वसुदेवस्य क्वचिज्जातस्तवात्मजः।
वासुदेव इति श्रीमान भिज्ञाः सम्प्रचक्षते॥

⇒ नन्द जी यह तुम्हारा पुत्र पहले कभी वसुदेव जी का पुत्र बनकर पैदा हुआ था। इसलिए इस रहस्य को जानने वाले लोग इसे 'श्रीमान् वासुदेव' भी कहते है। नन्द जी बोले पहले कभी वसुदेव का पुत्र होगा, अभी तो हमारा पुत्र है।

⇒ बन्धुओ भगवान का वासुदेव नाम तो अनादिकाल से है, ध्रुव जी ने सतयुग

⇒ मे ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मन्त्र का जप किया था। मनु और शतरूपा ने भी सतयुग मे ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मन्त्र का जप किया था।

⇒ इसका मतलब वासुदेव नाम भगवान का अनादि काल से है। वसुदेव के पुत्र बनकर के तो द्वापर युग मे आये।

⇒ तीनो लोको मे जो कण-कण मे वास करता है, उसे वासुदेव कहते है।

श्लोक- बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि च सुतस्य ते।
गुणकर्मानुरूपाणि तान्यहं वेद नो जनाः॥

⇒ गर्गाचार्य जी कहते - नन्द जी आपके लाला का एक नाम नही अनेक नाम होगे।

चौ० इन्ह के नाम अनेक अनूपा।
मै नृप कहब स्वमति अनुरूपा॥

⇒ जैसे-जैसे कार्य करेगे वैसे-वैसे नाम पड़ेगे। आपके लाला के जितने गुण और जितने कर्म उनके अनुसार अलग-अलग नाम पड़ेगे। इस बात को कुछ लोग ही जानते है, उनमे से एक मै भी हू, संसार के साधारण लोग इस बात को नही जानते।

⇒ नन्द जी आपका लाला बड़ा होकर बड़े अद्भुत, अद्भुत कार्य करेगा, जो साधारण

⇒ मनुष्य नही कर सकता, यह सब देखकर आप विचलित नही होना। आप बड़े सौभाग्यशाली है, आपके घर ऐसा बालक उत्पन्न हुआ।

⇒ नन्दबाबा ने पूछा - क्या विशेषता होगी इस बालक की ?

⇒ गर्गाचार्य जी ने थोड़ा सा इशारा देते हुए कहा -

श्लोकः तस्मान्नन्दात्मजोऽयं ते नारायणसमो गुणैः।
श्रिया कीर्त्यानुभावेन गोपायस्व समाहितः॥

⇒ नन्द जी आपका बेटा नारायण के समान गुण वाला होगा। भगवान नारायण मे जो गुण है वही गुण आपके बालक मे होगे। सही बात गर्गाचार्य जी नन्द जी को बता नही सकते इसलिये कह दिया नारायण के समान गुण वाला होगा। नारायण के समान तो नारायण होते है। भगवान के समान भगवान ही हो सकते है।

⇒ इसलिये गोस्वामी तुलसीदास जी जब भगवान के स्वरूप का वर्णन करते है तो लिखते है-

⇒ रघुवर छबि के समान, रघुवर छबि बनियां
ठुमक चलत रामचन्द्र, बाजत पैंजनियां

⇒ राम जी के जैसा दूसरा कोई हो नही

PAGE NO.: 76
DATE: / /20

सकता। राम जी की छवि राम जी जैसी ही है, वैसी छवि दूसरी किसी की नही है।

:: भजन ::

ठुमक चलत रामचन्द्र
बाजत पैंजनियां
ठुमक चलत रामचन्द्र - - - -

(1) किलकि - किलकि उठत धाय
गिरत भूमि लटपटाय
धाय मात गोद लेत
दशरथ की रनियां
ठुमक चलत - - - - - - -

(2) विद्रुम से अरुण अधर
बोलत मुख मधुर - मधुर
सुभगा नासिका मे चारु
लटकत लटकनियां
ठुमक चलत - - - - - -

(3) तुलसीदास अति आनंद
देख के मुखारबिंद
रघुवर छवि के समान
रघुवर छवि बनियां

ठुमक चलत राम चन्द्र - - - - - -

⇒ भगवान के समान गुण वाले तो केवल

⇒ भगवान ही हो सकते हैं। इसलिये गर्गाचार्य जी ने कहा- "नारायण समो गुणैः" भगवान नारायण का नामकरण संस्कार सम्पन्न कराकर गर्गाचार्य जी वहाँ से चले गए।

⇒ [illegible]

⇒ गुरु जी तो नाम रख गये राम और कृष्ण किन्तु यशोदा मैया को कृष्ण बोलने मे कठिनाई होती, इसलिए मैयाने दोनो बालको के नाम अपने अनुसार रख लिए।

⇒ मैया बड़े बालक को बल की जगह बलुआ और कृष्ण को कृष्ण की जगह कनुआ कहकर पुकारने लगी।

⇒ कनुआ कहि कहि बोलत मैया।
परम मुदित मन लेत बलैया॥

⇒ ये नाम बिगाड़ने की प्रथा प्राचीन काल से भारत मे है। लाड़ प्यार मे हम बच्चो को बचपन मे लला, पप्ची, पुतन्नू कहकर पुकारते, विद्यालय जाने पर मूल नाम बदल जाए किन्तु उनकी प्रसिद्धि पप्ची, पुतन्नो और लला नाम से ही हो जाती है।

⇒ अभी हमारे यहाँ एक व्यक्ति सभासद के चुनाव मे खड़ा हुआ नाम उसका

PAGE NO.: 78
DATE: / /20

⇒ राममोहन गुप्ता था किन्तु लोग उसे पूची के नाम से जानते थे। जब उसने अपना प्रचार करवाने के लिए पर्चे छपवाये तो उसमे लिखवाया राममोहन गुप्ता उर्फ (पूची) को वोट देकर भारी बहुमत से विजयी बनाये। पढ़ने मे बड़ा अटपटा लगे।

⇒ हमे अपने बच्चो के नाम बचपन से ही बहुत विचार करके रखने चाहिए।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित! कुछ ही दिनो मे राम और श्याम घुटनों और हाथों के बल बकैयाँ चल - चलकर गोकुल मे खेलने लगे।

श्लोक - कालेन व्रजताल्पेन गोकुले रामकेशवौ।
जानुभ्यां सह पाणिभ्यां रिंगमाणौ विजह्रतुः॥

⇒ बल और कृष्ण दोनो भाई नन्हे - नन्हे पाँवो को गोकुल की कीचड़ मे घसीटते हुए चलते। उस समय उनके पाँव और कमर के घुँघरू रुनझुन बजने लगते। वे दोनो स्वयं वह ध्वनि सुनकर खिल उठते। कभी - कभी वे रास्ते चलते किसी अज्ञात व्यक्ति के पीछे हो लेते। फिर जब देखते कि यह तो कोई दूसरा है, तब डरकर अपनी माताओ - रोहिणी जी और यशोदा जी के पास लौट आते।

PAGE NO.:
DATE: / /20

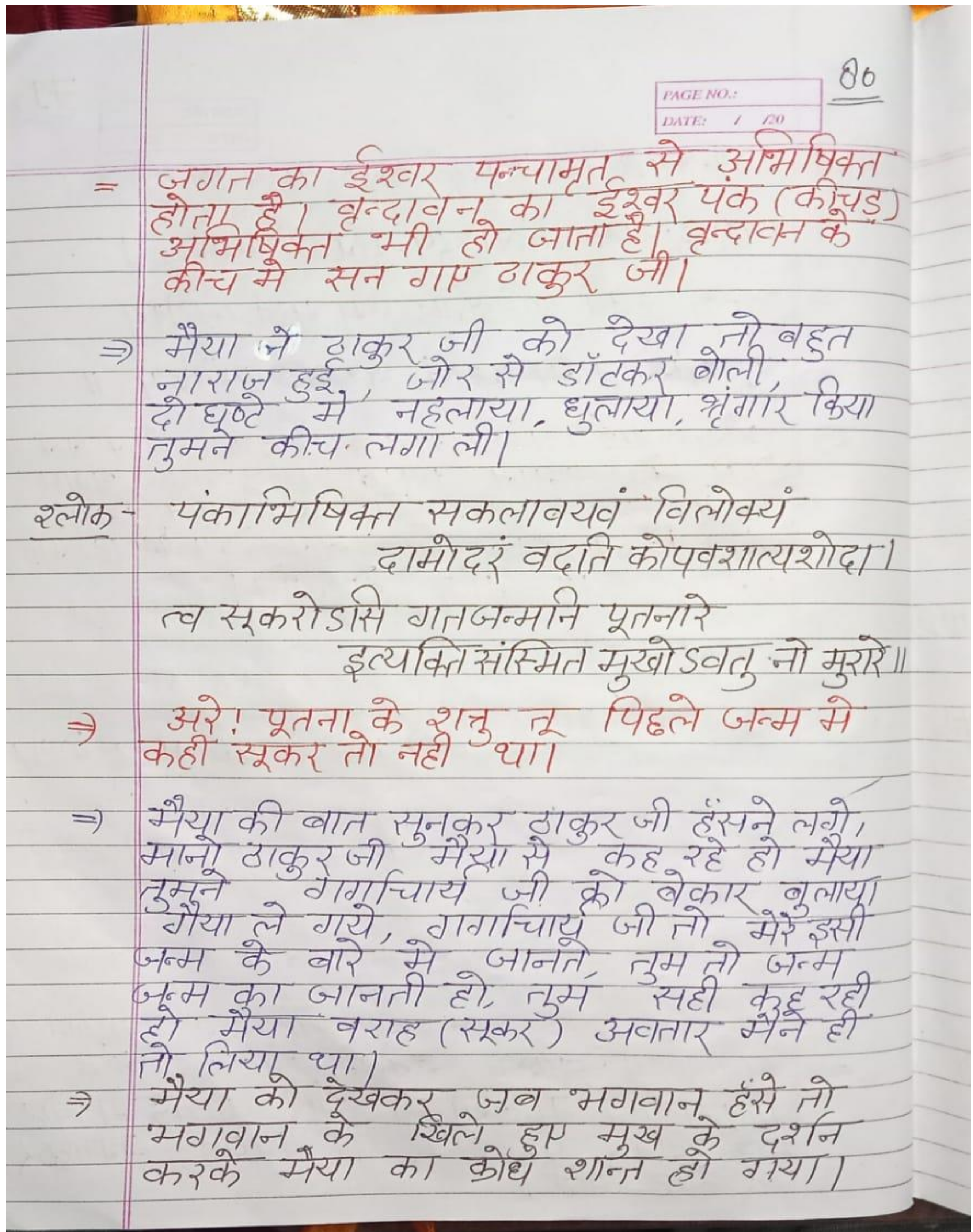
श्लोक - तन्मातरौ निजसुतौ घृणया स्नुवन्त्यौ
पङ्काङ्गरागरुचिरावुपगुह्य दोर्भ्याम् ।
दत्त्वा स्तनं प्रपिबतोः स्म मुखं निरीक्ष्य
मुग्धस्मिताल्पदशनं ययतुः प्रमोदम् ॥

=) मैया यशोदा प्रातःकाल कृष्ण और बल दोनो को स्नान कराकर उनका श्रृंगार करती फिर माखन रोटी खाने के लिए देती। किन्तु कृष्ण और बल दोनो मिट्टी मे खेलकर फिर गन्दे हो जाते।

रसखान जी कहते -

धूरि भरे अति शोभित श्याम जू,
तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरै अँगना,
पग पैजनी बाजति पीरी कछोटी
वा छवि को रसखानि बिलोकत
वारत काम-कला निज कोटी
काग के भाग बड़े सजनी
हरि-हाथ सों लै गयो माखनरोटी

= ठाकुर जी बकैयाँ, बकैयाँ चलकर जाते गोकुल की गलियो मे और कीचड़ मे लोट पोट होकर पूरे शरीर पर कीचड़ लगाकर घर लौट आते।



80

PAGE NO.:
DATE: / /20

= जगत का ईश्वर पञ्चामृत से अभिषिक्त होता है। वृन्दावन का ईश्वर पंक (कीचड़) अभिषिक्त भी हो जाता है। वृन्दावन के कीच मे सन गए ठाकुर जी।

⇒ मैया ने ठाकुर जी को देखा तो बहुत नाराज हुई, जोर से डॉटकर बोली, दो घण्टे मे नहलाया, धुलाया, श्रृंगार किया तुमने कीच लगा ली।

श्लोक- पंकाभिषिक्त सकलावयवं विलोक्यं
दामोदरं वदति कोपवशात्यशोदा।
त्व सूकरोऽसि गतजन्मनि पूतनारे
इत्युक्तिसंस्मित मुखोऽवतु नो मुरारे॥

⇒ अरे! पूतना के शत्रु तू पिछले जन्म मे कही सूकर तो नही था।

⇒ मैया की बात सुनकर ठाकुर जी हंसने लगे, मानो ठाकुर जी मैया से कह रहे हो मैया तुमने गर्गाचार्य जी को बेकार बुलाया गैया ले गये, गर्गाचार्य जी तो मेरे इसी जन्म के बारे मे जानते, तुम तो जन्म जन्म का जानती हो, तुम सही कह रही हो मैया वराह (सूकर) अवतार मैने ही तो लिया था।

⇒ मैया को देखकर जब भगवान हँसे तो भगवान के खिले हुए मुख के दर्शन करके मैया का क्रोध शान्त हो गया।

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ दोनो माताओं ने अपने-अपने बालको को गोद मे उठाकर हृदय से लगा लिया और स्तन पान कराने लगी। मैया ने देखा स्तन पान करते-करते लाला के नेत्रो मे नीद आ रही है। जब तक ठाकुर जी मैया के मुख से लोरी नही सुन लेते, तब तक उन्हे नीद नही आती।

⇒ वृन्दावन मे तो आज भी ठाकुरजीको जगाते समय, श्रृंगार करते समय, भोग लगाते समय, शयन कराते समय, पद सुनाये जाते है। भगवान को भोग अर्पित करके ये लो भगवान खालो, ये कोई तरीका नही होता, हमारे ठाकुर जी तो पद सुनकर के भोग लगाते है।

⇒ कई बार तो ठाकुर जी के सामने बिना भोग रखे ही उनका श्रृंगार करते तो कही माथे का तिलक नीचे गिरा देते, कही मोर पंख, श्रृंगार ठीक से करवाते ही नही एक बार बृज के एक सन्त ने मुझे बताया कि जब ठाकुर जी का श्रृंगार किया करो तो पहले उनके सामने एक कटोरी मे भोग रख दिया करो, ताकि उनका ध्यान एक जगह स्थिर रहे और तुम अच्छे से श्रृंगार कर सको।

⇒ मन्दिर मे बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ लाकर रख लेने से कार्य नही चलेगा। अगर तुम उनको स्नान नही करा सकते, वस्त्र नित्य नही बदल सकते, भोग नही

82

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ लगा सकते तो मूर्तियो को शो-पीस बनाकर मत रखो। जितनी अधिक मूर्ति की सेवा होगी, उतनी अधिक उस मूर्ति मे चमक होगी।

⇒ राधारमण जी को शयन कराते समय आज भी वहा के सेवक गाते है।

लोरी गीत (पद)

नयनो मे नीदं भर आई, बिहारी जी के -2

(1) कौन बिहारी जी की सेज बिछाये
कौन करे तैयारी बिहारीजी की

सखियाँ बिहारी जू की सेज बिछाये
श्री राधा करे तैयारी बिहारीजी की

नयनो मे नीदं भर - - - - -

(2) कौन बिहारी जू को दूध पिलावे
कौन खवावें मलाई बिहारीजू को

नयनो मे नीदं - - - —

मैया बिहारी जू को दूध पिलावे
बाबा खवावें मलाई बिहारीजू को

नयनों मे नीदं - - —

83

(3) कौन बिहारी जू के चरण दबावे
कौन उढ़ावे रजाई बिहारी जू को
नयनो मे नीदं - - - - -

सेवक बिहारी जू के चरण दबावे
सखा उढ़ावे रजाई बिहारी जू को
नयनो मे नींद भर आई - - - -

⇒ शुकदेव जी कहते-परीक्षित ! राम और श्याम दोनो कुछ और बड़े हुए, तब व्रज मे घर के बाहर ऐसी - ऐसी बाललीलाएं करने लगे गोपियाँ देखती ही रह जाती। राम और श्याम दौड़ते हुए गौशाला मे जाते और बैठे हुए बछड़े की पूंछ पकड़ लेते, डरकर बछड़े इधर-उधर भागते, कृष्ण और बलदाऊ भी बछड़ो के संग घसिटते हुए चले जाते।
⇒ गोपियाँ अपने घर का काम-धंधा छोड़कर यही सब देखती रहती और हँसते-हँसते लोटपोट होकर परम आनन्द मे मग्न हो जाती।

⇒ कृष्ण और बलदाऊ दोनो मिलकर ऊधम मचाते गोपियाँ देखकर आनन्दित होती। शुकदेव जी वर्णन करते -

श्लोक - शृंग्यग्निदंष्ट्रयसिजलद्विज कण्टकेभ्यः
क्रीडापरावतिचलौ स्वसुतौ निषेद्धुम् ।
गृह्याणि कर्तुमपि यत्र न तज्जनन्यौ
शेकात आपतुरलं मनसोऽनवस्थाम् ॥

PAGE NO.: 84
DATE: / /20

(1) कृष्ण और बलदाऊ दोनो गौशाला मे जाकर बैठी हुई गौमाता के सींग पकड़ लेते, गौमाता खड़ी होती तो कृष्ण और बलदाऊ गौमाता के सींग को पकड़कर लटक जाते, नीचे भरा था गोबर, दोनो चिल्लाते 'मैया बचइयो, बाबा बचइयो', जब तक मैया दौड़कर आती तब तक दोनो गोबर से भरे गड्ढे मे गिर जाते। मैया कहती अभी स्नान कराकर श्रृंगार किया था पर इस कनुआ को तो कोला बनकर के रहना ज्यादा पसन्द है, देखो कैसे पूरे शरीर मे गोबर लगा लिया।

(2) मैया को बिना बताये कृष्ण और बलदाऊ दोनो वन मे जाकर लकड़िया एकत्रित करके चूल्हा जलाते। जलती हुई लकड़ी हाथ मे पकड़कर दोनो तलवार बाजी करते।

(3) वन मे जाकर सिंह को पकड़कर कृष्ण दाऊ दादा से कहते दादा इसके दांत गिनकर बताओ कितने है। दाऊ दादा कहते सिंह तूने पकड़ा तू ही गिनकर बता दे कितने दांत है।

(4) एक दिन ठाकुर जी कुएँ मे जाकर झाँकते है तो उन्हे अपनी परछाई दिखाई पड़ती है। कन्हैया चिल्लाकर कहते कौन है? तो अन्दर कुएँ मे से भी आवाज आती कौन है?

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ कन्हैया कहते कौन है तू ? यमराज के पास जाना है जो मुझसे जबान लड़ाता है। इतने मे दाऊ दादा वहा आ जाते। कन्हैया कहते देखो दादा इस कूएं के अन्दर कोई है और वह मेरी बात को दोहरा रहा है। कन्हैया ने कूएं मे झांका बलदाऊ जी ने भी कुएं मे झांका। अबकी बार कूएं मे ठाकुर जी के साथ दाऊ दादा की भी परछाई दिखाई पड़ी। कन्हैया दाऊ दादा से बोले देखो दादा हमने अपने दादा को बुलाया, उसने भी अपने दादा को बुला लिया।

⇒ कन्हैया बोले दादा आप इस कूएं मे उतरकर जाओ तो, इसे ठीक करके आओ। कन्हैया के कहने पर दाऊ दादा कूएं मे कूद गये। नीचे पहुंचकर देखा तो वहा तो कोई था ही नही। दादा बोले कन्हैया यहा तो कोई नही है। कन्हैया बोले मुझे तो पहले से पता था इसके अन्दर कोई नही है।

⇒ दाऊ दादा बोले कन्हैया ये बता इस कूएं मे से बाहर कैसे निकल कर आयेगा। कन्हैया एक रस्सी लेकर आये और कूएं के अन्दर डालकर दाऊ दादा से बोले आप इस रस्सी को पकड़ लो मै आपको खीचूंगा। दाऊ दादा ने विचार किया अब इस कन्हैया को भी मजा चखाना चाहिये। कन्हैया क्या दाऊ दादा को खीन्चते, दाऊ दादा ने ऐसा झटका मारा कि कन्हैया ऊपर से नीचे सीधे कूएं मे पहुंच गये। इतने मे यशोदा मैया कन्हैया को

PAGE NO.: 86
DATE: / /20

⇒ ढूढ़ते हुए कूएँ के समीप आ गयी। अरे! कनुआ, बलुआ कहा गये?

⇒ कनुआ, बलुआ ने कूएँ के अन्दर से आवाज लगायी, मैया हम इस कूएँ के अन्दर है। मैया ने कूएँ मे झाँककर देखा तो कनुआ, बलुआ दोनो कूएँ के अन्दर खड़े मैया बोली अरे कनुआ इस कूएँ के अन्दर क्या कर रहा? कन्हैया बोले मैया पहले बाहर निकालो फिर सब बतायेगे।

⇒ मैया एक बाल्टी लेकर आई और उसमे रस्सी बाँधकर कूएँ के अन्दर डाल दी। मैया बोली एक-एक करके इस बाल्टी मे बैठ जाओ मै दोनो को बाहर निकाल लूगी। कन्हैया ने दाऊ दादा से कहा पहले आप जाओ, क्यो कि पहले आप ही इस कूएँ के अन्दर आये थे। कन्हैया को पता है पहले जो निकलकर जायेगा, मैया उसकी पूजा करेगी।

⇒ दाऊ दादा बोले कन्हैया पहले तू जा बाहर, क्यो कि तेरी वजह से ही मै इस कूएँ के अन्दर आया। अन्त मे यह निर्णय हुआ दोनो साथ ही बाहर जायेगे। कनुआ और बलुआ दोनो एक ही बाल्टी के अन्दर घुस गये। मैया ने किसी प्रकार से दोनो को बाहर निकाला।

⇒ कन्हैया का कान पकड़करके मैया बोली तुम दोनो ये बताओ, इस कूएँ के अन्दर क्या करने गये थे।

87

⇒ कन्हैया बोले मैया इस कुँए के अन्दर एक छोरा था। वह दाऊ दादा से अभद्रता करने लगा। दादा नीचे गये उतर कर और उसमे दो थप्पड़ खीचकर लगाए सारी अक्ल ठिकाने आ गयी। मैया तुम्हे विश्वास नही हो रहा तो तुम खुद झाँककर देखलो इस कुए मे। कन्हैया ने झाँका, दादा ने झाँका। मैया ने झाँका तीनो की परछाई पड़ी।

⇒ कन्हैया बोले हद हो गई मैया, मैने अपनी मैया बुलाई, बाने अपनी मैया बुला ली। उसी समय मैया जोर से हंसी, कन्हैया ने दाऊ दादा से कहा अभी मैया का टम्प्रेचर डाउन है, निकल लो जल्दी से। दोनो वहा से भाग गये। ऐसी सुन्दर, सुन्दर मैया के साथ लीला करे ठाकुर जी।

(5) एक दिन ठाकुर जी दाऊ दादा और अन्य सखाओ को साथ लेकर वन मे जाकर पूजा- पूजा का खेल खेलते है। एक सखा कन्हैया से कहता, कन्हैया जब घर मे पूजा होती तो हवन भी होता है। कन्हैया कहते तो हम भी हवन करेगे। सूखे पत्तो को एकत्रित करके उसमे अग्नि लगा देते और पत्तो को ही उसमे डाल- डालकर आहुति देने लगते। एक सखा कहता कन्हैया जब आहुति दी जाती तब मन्त्र भी तो पढ़े जाते, कन्हैया को मन्त्र तो आते नही तो जोर से चिल्लाकर बोलने लगते ॐ, ॐ, ॐ, ॐ स्वाहा। एक सखा

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ कहता कन्हैया हवन के बाद मे भण्डारा भी किया जाता और ब्राह्मणो को भोजन भी कराया जाता है। कन्हैया बोले तो चलो ब्राह्मणो को निमन्त्रण दे आये।

⇒ सखाओ को साथ लेकर ठाकुर जी ब्राह्मणो के घर जाकर उनसे कहते आज हमारे घर पूजन और हवन का कार्यक्रम है। हवन के बाद भण्डारे का भी आयोजन होगा। अतः आप सभी ब्राह्मण देव हमारा निमन्त्रण स्वीकार करे। भोजन करने के लिए हमारे घर अवश्य पधारे।

⇒ नन्दजी के घर भोजन करने के लिये जाना है यह विचार करके ब्राह्मणो ने सुबह [illegible] अपने घर मे भोजन ही नही किया। शाम के समय सभी ब्राह्मण एकत्रित होकर नन्दबाबा के घर पहुच गए। मैया ने देखा इतने सारे ब्राह्मण वो भी मेरे घर मे? मैया ने हाथ जोड़कर पूछा- ब्राह्मण देवताओ आज क्या कोई उत्सव है? आप सब कैसे पधारे हमारे घर?

⇒ ब्राह्मण देव बोले मैया निमन्त्रण देकर निमन्त्रण देने वाला ही पूछे, क्यो आये हो हमारे घर इससे अधिक बेइज्जती और क्या हो सकती है?

⇒ मैया बोली- अरे! बताओ तो सही कैसा निमन्त्रण कौन सा भण्डारा, मैने तो कोई निमन्त्रण नही दिया आप लोगो को?

89

⇒ ब्राह्मणो ने कहा मैया कल आपका लाला आया, अपने सखाओ के साथ हमारे घर, और कहने लगा आप सभी का निमन्त्रण है, भोजन करने हमारे घर अवश्य आना, हमने विचार किया आपने निमन्त्रण करवाया होगा, इसलिये हम लोग आ गये।

⇒ मैया बोली अच्छा तो ये सब कन्हैया की करामात है। सारे ब्राह्मणो को साथ लेकर मैया कन्हैया को ढूढ़ने लगी। अरे! पूतना के शत्रु मुझे यहाँ फसाकर कहा भाग गया? कन्हैया को ढूढ़ते-ढूढ़ते मैया नन्दमहल के पीछे की ओर जो वन था जब वहा पहुंची तो देखा ठाकुर जी सभी सखाओ के साथ बैठे-बैठे पूजा-पूजा खेल रहे। मैया ने कहा- कन्हैया तुमने इन ब्राह्मणो को निमन्त्रण दिया था भोजन पाने के लिए? कन्हैया बोले कैसी बात करती हो मैया, मै तो इन ब्राह्मणो के घर का पता भी नही जानता, कि ये कौन सी गली मे रहते है? निमन्त्रण करने की तो बात बहुत दूर की है।

⇒ मैया बोली लाला तू झूठ भी बोलने लगा? कन्हैया बोले इसमे झूठ बोलने वाली कौन सी बात है? हम तो पूजा-पूजा खेल रहे है। खेल, खेल मे हमने हवन किया तो खेल-खेल मे ही भण्डारा होगा। आप सभी हाथ मे दोना पत्तल पकड़कर विचार करो कि गर्म-गर्म कचौड़ी और सब्जी है, बढ़िया, बढ़िया मिठाई है, प्रेम से

90

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ पा रहे रहे है। हो गया भण्डारा, ब्राह्मणोने हाँथ जोड़कर कहा - लाला आज तो तेरे चक्कर मे भूखा रहना पड़ा, आज के बाद ऐसा निमन्त्रण मत करना।

⇒ एक दिन यशोदा मैया यमुना स्नान करने गयी, कन्हैया भी मैया के पीछे - पीछे चल दिए। मैया ने स्नान करने के बाद यमुना मैया का पूजन किया, फिर दीप दान किया। वहा उपास्थित अन्य माताये भी यमुना मैया को दीप दान कर रही थी।

⇒ माँताओ ने जब दीपदान करके दीपको को यमुना मे प्रवाहित कियातोकुछ दीपक बहते बहते ठाकुर जी के चरणो के पास आ गये। भगवान उन दीपको को निकाल निकाल कर बाहर रखने लगे। मैया ने पूछा लाला ये क्या कर रहा है? ठाकुर जी बोले मैया ये दीपक बहते - बहते मेरे पास आ गये इसलिये इन्हे बाहर निकाल रहा हू।

⇒ मैया बोली लाला दीपक तो बहुत से बहते हुए जा रहे, उन्हे भी निकाल ले। कन्हैया बोले मैया दीपक तो बहुत से बहते हुए जा रहे है किन्तु जो मेरे चरणो के पास आ गये उन्हे मै निकाल रहा हू। बन्धुओ इस संसार मे बहुत से जीव आते और जाते रहते है, किन्तु जो भगवान के चरण शरण मे पहुँच जाते है, ठाकुर

⇒ जो उन्हे पार लगा देते है।

⇒ शुकदेव जी कहते- परीक्षित ! कन्हैया जब तीन वर्ष के हो गये तो पूरे गोकुलवासियो के नाक में दम कर दिया, ठाकुर जी ने माखन चोरी लीला प्रारम्भ कर दी

⇒ एक दिन गोपियां, कन्हैया की शिकायत लेकर यशोदा मैया के पास आयी-

श्लोक- वत्सान् मुंचन् क्वचिद समये
क्रोशसंजातहासः
स्तेयं स्वाद्वत्त्यथ दधि पयः
कल्पितैः स्तेययोगैः।
मर्कान् भोक्ष्यन् विभजति स चे-
न्नात्ति भाण्डं भिनत्ति
द्रव्यालाभे स गृहकुपितो
यात्युपक्रोश्य तोकान् ॥

⇒ गोपियां यशोदा मैया से कहने लगी- 'अरी यशोदा। यह तेरा कान्हा बड़ा नटखट हो गया है। गायु दुहने से एक घण्टे पहले ही यह बछड़ो को खोल देता है, और बछड़े सारा दूध पी जाते है। जब हम डांटती है, तो हंसकर वंहा से भाग जाता है।

92

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ एक गोपी बोली मैया आपका लाला अपनी ग्वाल बालों की टोली के साथ चोरी के बड़े - बड़े उपाय करके हमारे मीठे - मीठे दही - दूध चुरा - चुराकर खा जाता है

⇒ एक गोपी बोली मैया आपका लाला दूध, दही खुद खाए सो खाए संग मे यह तो वानरो को भी खिलाता है। और जब सभी का पेट भर जाता है तो यह हमारे माटों को भी फोड़ देता है।

⇒ एक गोपी बोली मैया एक दिन आपका लाला हमारे घर चोरी करने आया, आपके लाला को जब दूध, दही कुछ भी खाने को नही मिला, तो हमारे सोते हुए बच्चो को चिकोटी काटकर भाग गया। जब मेरे बच्चे रोने लगे तो पीछे से आपका लाला आकर कहता भाबी जी यदि आप चाहती हो कि कल से आपके बच्चो को परेशान न करू तो दूध, दही खाने के लिए रख देना।

⇒ एक दिन तो गोपियो ने कन्हैया को पकड़ने के लिए एक योजना बनाई गोपियो ने माटो मे दही भरकर ऊंचाई पर टांग दिया और माटों मे घण्टी बांध दी, स्वयं जाकर दरवाजे के पीछे छुप गई, गोपिया मन मे विचार कर रही आज कन्हैया आयेगा जैसे ही मटकी को नीचे उतारेगा तुरन्त घण्टी बजेगी, घण्टी बजते ही रंगेहाथो पकड़ लूंगी कन्हैया को, ठाकुर जी श्रीदामा, मधुमंगल

⇒ सुबाहु, सुबल, भद्र, सुभद्र, मणिभद्र सभी सखाओ को लेकर गोपी के घर पहुँच गये।

⇒ ठाकुर जी ने देखा आँज तो गोपी ने माटों को बहुत ऊँचाई पर टाँग दिया, ठाकुर जी ने कहा कोई बात नही गोपी मेरे पास भी बहुत उपाय है। कन्हैया ने मधुमंगल को घोड़ा बनाया, मधुमंगल की पीठ पर सुबाहु सुबाहु की पीठ पर सुबल इस प्रकार कन्हैया ने सभी को लाइन मे लगा दिया और स्वयं सबसे ऊपर चढ़ गये।

⇒ कन्हैया ने देखा आँज तो माटं मे घण्टी बंधी है, कन्हैया ने घण्टी से कहा देख चाहे कुछ भी हो जाये पर तू बजना नही भगवान ने मटकी को उतारा घण्टी नही बजी, मटकी मे हाथ डालकर माखन निकाला घण्टी नही बजी, किन्तु जैसे ही कन्हैया ने माखन निकालकर मुख मे रखा तो घण्टी बज गई।

⇒ कन्हैया ने कहा तुझसे मना किया था मत बजना, फिर क्यो बजी? घण्टी बोली प्रभु आपने ही कहा है, जब मेरा भोग लगे तब बजना, आप ने भोग पाया इसलिये मै बज गयी।

⇒ एक गोपी बोली मैया कल हमारे घर पर सत्यनारायण भगवान की कथा थी, मैने सत्यनारायण भगवान को विराजित

95

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ करने के लिए चौकी सजायी और मन्दिर से सत्यनारायण भगवान की फोटो लेने चली गयी चौकी पर विराजित करने के लिये, इतने मे आपका लाला आया और चौकी पर दो पिल्ले रखकर धर के पीछे छुप गया जब मैना देखा जाकर तो बाहर चिल्लाकर आपका लाला बोला भाभी जी कैसे लगे सत्यनारायण भगवान ?

⇒ परमानन्द दास को ठाकुर लायो पिल्ला घेर।

⇒ ठाकुर जी ऐसे ऐसे ऊधम मचाये।

⇒ एक सखी बोली मैया मेरे घर मे कुल उत्सव था, मै भगवान को भोग लगाने के लिए प्रसाद बना रही थी, इतने मे आपका लाला आकर कहने लगा भाभी जी पहले प्रसाद हमे खिलाओ, हमने बहुत समझाया लाला पहले भगवान को भोग लगेगा, इसके बाद तुम्हे मिलेगा किन्तु आपका लाला कहने लगा सबसे बड़े भगवान तो हम है, पहले हमे खिलाओ प्रसाद।

⇒ जब मैने लाला को प्रसाद देने से मना कर दिया तो उस समय तो आपका लाला चुपचाप वहा से चला गया। उत्सव सम्पन्न हो गया सभी लोग चले गये, मै भी बहुत थक गई थी, इसलिये अपने कक्ष मे जाकर सो गयी। रात मे मुझे प्यास लगी, जब मै पानी पीने के लिये उठी तो मेरे साथ मे मेरे पति भी खिंचने

= लगे, मै अपने पति से कहती ऐ-जी क्या करते हो, पतिदेव मुझसे कहते तुम क्या कर रही हो, फिर मैरे पति ने उजाला कर के देखा तो मेरी चोटी मेरे पति के बालो से बंधी थी इतने मे आपका लाला आकर कहा भाभीजी कैसी लगी मेरी योजना ?

=) गोपी कहती मैया ऐसे-ऐसे ऊधम मचाता है आपका लाला,

:: भजन ::

ऐसो चटक मटक सो ठाकुर
तीनो लोकन मे हूं नाय,
लोकन मे हूं नाय, तीनो लोकन मे हूं नाय
ऐसो चटक मटक सो ठाकुर, तीनो लोकन मे हूँ नाय

(1) तीन ठौर ते टेढ़ो दिखे,
नटकिसी चलगत यह सीखे
टेढ़े नैन चलावे तीखे
सब देवन को देव,
तोउ ये ब्रज मे घेरे गाय
ऐसो चटक मटक सो ठाकुर
तीनो लोकन मे हूँ नाय

(२) बड़े-बड़े असुरन को मारयो
नाग कालिया पकड़ पछाड़यो,
सात दिना तक गिरिवर धारयो
ऐसो बलि तोऊ खेलत मे ग्वालन पे पिट जाए
ऐसो चटक मटक सो - — —

⇒ गोपियों के मुख से कन्हैया की शिकायत सुनकर मैया यशोदा ने कन्हैया से पूछा लाला ये गोपियां सही कह रही है? तू माखन की चोरी करता इनके घरो मे जाकर?

⇒ ठाकुर जी बोले मैया -

⇒ इनको पतियारो करे, मै तस्कर थे साह।
चौर नाम मेरौ धरयौ, मेरो होन न देंगी ब्याह॥

⇒ ये गोपियां झूठ बोल रही हैं, आप इनकी बातो मे मत आना, ये गोपियां बहुत चालाक है।

⇒ मैया बोली लाला ये सब गोपियां तो झूठी है तू ही तो एक सत्यनारायण है तू सत्य बोल रहा है, मैया की बात सुनकर ठाकुर जी मुस्कुराने लगे, मानो कन्हैया कह रहे हो मैया तुम सही कह रही हो मै ही सत्यनारायण हूं। देवताओ ने भी सत्य, सत्य कहकर भगवान की स्तुति की।

श्लोक - सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं
सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यमृत सत्य नेत्रं
सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्ना:॥
सत्य के भी सत्य भगवान है।

⇒ कन्हैया बोले मैया इन गोपियों की तो बात आपने सुन ली अब मेरी भी बात सुन लो मैं किसी गोपी के घर चोरी करने नही जाता ये गोपियां स्वयं मुझे अपने घर बुलाती हैं।

.: भजन :.

मैया जब मैं घर से चलूँ
बुलामें ग्वालिन घर मे मोय

(1) अचक हाथ कौ झालौ देकै,
मीठी बोले देवर कह कै
निधरक है जांय सांकर देके

दोहा- झपट उतारें काछनी, मुरली लेंय छिनाय।
मैं बालक थे धींगरी मेरी कहा बसाय॥
आपहु नाचै मोय नचावै, कहा बताऊं तोय॥

मैया जब मैं घर से चलूँ
बुलामें ग्वालिन घर मे--

(2) मैं भोरौ ये चतुर गुजरिया
एक दिन ले गई पकरि उँगरिया
फूटी-सी याकी राम कुठरिया

दोहा- धरी मटुकिया मो निकट, माखन की तत्काल।
माखन दूँगी घनो सौ, चौटी बीनौ लाल॥

PAGE NO.:
DATE: / /20

= ठाकुर जी बोले मैया एक दिन एक मोटी गोपी मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपने घर ले गयी, और मेरे सामने माखन से भरी मटकी रखकर बोली कन्हैया इस माखन मे चींटी हो गयी है तुम इन चींटियो को निकाल दो।

⇒ मैंने मोटी गोपी से कहा माखन से चींटी तो मै निकाल दूगा पर बदले मे मुझे क्या मिलेगा?

⇒ गोपी बोली कन्हैया जितनी चींटी तुम माखन से निकाल दोगे उतने माखन के लोदे देगी तुम्हे खाने को।

⇒ ठाकुर जी बोले गोपी मुझे गिनती तो आती नही, मै कैसे गिनूगा कि मैने कितनी चींटी निकाली? गोपी तू ही कुछ उपाय कर।

⇒ गोपी बोली कन्हैया एक उपाय है।
⇒ कन्हैया बोले क्या उपाय है?
⇒ गोपी बोली कन्हैया तुम जितनी चींटी निकालोगे हम उतने गोबर के टीके तुम्हारे गाल मे लगा देगी।
⇒ गोपी ने ठाकुर जी के पूरे मुख पे गोबर के टीके लगा दिये।

ठाकुर जी कहते मैया –
→ मैंने याकी चींटी बीनी
ये पति संग गई सोय॥

⇒ मैया जब मै घरसे चलूं, बुलामें ग्वालिन घर मे मोय।

(3) एक दिना पनघट पे मैया,
मै बैठो । कदम्ब की छैंया
ढिंग बैठ्यो बलदाऊ भैया

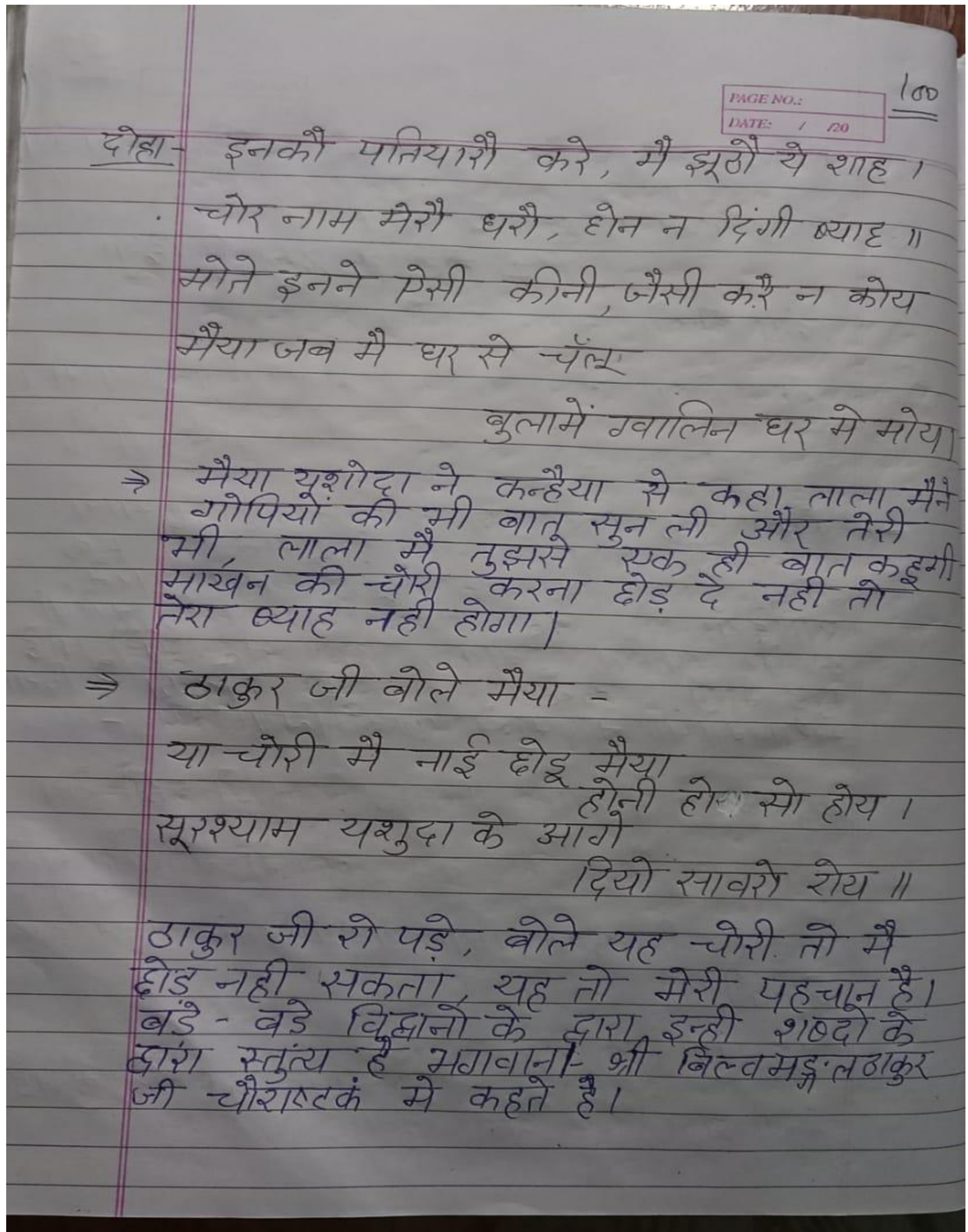
दोहा- लै पहुंची वहां गागरी, रिपटी याकौ पाम।
मेरे गोहन पड़ गई, धक्का दीनों श्याम॥

⇒ मैया एक दिन मै दाऊ दादा के साथ पनघट के पास बैठा था, इतने मे एक गोपी आई गगरी लेकर जल भरने, सीढ़ियो पर बहुत काई जमा थी, गोपी का पैर फिसल गया, अब वह मेरे पीछे पड़ गयी, कन्हैया ने मुझे धक्का दे दिया मैया गोपी ने मुझे पकड़ लिया और-

गुलचा दे दे लाल किये, मै ठाड़ौ रह्यौ रोय
मैया जब मै घर से चलूं, बुलामें ग्वालिन घरमे मोय॥

⇒ ठाकुर जी कहते मैया ये गोपियां बहुत झूठ बोलती है।

तेरे मोंह पै करै बढ़ाई,
बाहर निकसत करैं बुराई,
ऐसी ब्रज की ढीठ लुगाई



100

PAGE NO.:
DATE: / /20

दोहा- इनकौ पतियारौ करे, मै झूठो ये शाह।
चोर नाम मेरौ धरौ, छोन न दिंगी ब्याह॥
मोते इनने ऐसी कीनी, जैसी करै न कोय
मैया जब मै घर से चलू
बुलामें ग्वालिन घर मे मोय।

⇒ मैया यशोदा ने कन्हैया से कहा, लाला मैंने गोपियों की भी बात सुन ली और तेरी भी, लाला मैं तुझसे एक ही बात कहूगी माखन की चौरी करना छोड़ दे नही तो तेरा ब्याह नही होगा।

⇒ ठाकुर जी बोले मैया -

या चौरी मै नाई छोडू मैया
होनी होय सो होय।
सूरश्याम यशुदा के आगे
दियो सावरो रोय॥

ठाकुर जी रो पड़े, बोले यह चौरी तो मै छोड़ नही सकता, यह तो मेरी पहचान है। बड़े - बड़े विद्वानो के द्वारा इन्ही शब्दो के द्वारा स्तुत्य है भगवान। श्री बिल्वमङ्गलठाकुर जी चौराष्टकं मे कहते है।

ब्रजे प्रसिद्धं नवनीतचौरं
गोपाङ्गनानां च दुकूलचौरम् ।
अनेकजन्मार्जितपापचौरं
चौराग्रगण्यं पुरुषं नमामि ॥

= इस प्रकार से कन्हैया माखन चोरी की लीला करके गोपियों को परमसुख प्रदान करते।

⇒ भगवान की इस दिव्यलीला - माखनचोरी का रहस्य न जानने के कारण ही कुछ लोग इसे आदर्श के विपरीत बतलाते है। उन्हे पहले समझना चाहिए चोरी क्या वस्तु है, वह किसकी होती है, और कौन करता है। चोरी उसे कहते है जब किसी दूसरे की कोई चीज, उसकी इच्छा के बिना, उसके अनजान मे और आगे भी वह जान न पाये- ऐसी इच्छा रखकर लेली जाती है। भगवान श्री कृष्ण गोपियो के घर से माखन लेते थे उनकी इच्छा से, गोपियो के अनजान मे नही- उनकी जान मे। गोपियां स्वयं ठाकुरजी को बुलाती थी माखन खाने के लिए अपने घर।

⇒ गोपियों के पूर्व जन्म की तपस्या इतनी कठोर थी, उनकी लालसा इतनी अनन्य थी, उनका प्रेम इतना व्यापक था, और उनकी लगन इतनी सच्ची थी कि भक्तवाञ्छाकल्पतरु प्रेमरसमय भगवान उनके इच्छानुसार उन्हे सुख पहुंचाने के लिये माखनचोरी की लीला करके उनकी इच्छित पूजा ग्रहण करे, चीरहरण करके

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ उनका रहा-सहा व्यवधान का परदा उठा दें और रासलीला करके उनको दिव्य सुख पहुँचायें तो कोई बड़ी बात नही है।

⇒ अपने निजजन ब्रजवासियो को सुखी करने के लिये ही तो भगवान गोकुल मे पधारे थे। माखन तो नन्दबाबा के घर बहुत था। नौ लाख गौए थी नन्दबाबा के पास। ठाकुर जी जितना चाहे माखन खाते और लुटाते। परन्तु वे तो केवल नन्दबाबा के ही नही; सभी ब्रजवासियो के अपने थे, सभी को सुख देना चाहते थे। गोपियों की लालसा पूरी करने के लिये ही वे उनके घर जाते और चुरा-चुराकर माखन खाते। यह वास्तव मे चोरी नही, यह तो गोपियों की पूजा-पद्धति का भगवान के द्वारा स्वीकार था। भक्तवत्सल भगवान भक्त की पूजा स्वीकार कैसे न करे?

⇒ दूसरी बात महत्व की यह है कि संसार मे या संसार के बाहर ऐसी कौन-सी वस्तु है, जो भगवान की नही है और वे उसकी चोरी करते है। गोपियो का तो सर्वस्व श्री भगवान का था ही, सारा जगत ही उनका है। वे भला किसकी चोरी कर सकते है? हां चोर तो वास्तव मे वे लोग है, जो भगवान की वस्तु को अपनी मानकर ममता-आसक्ति मे फंसे रहते है। भगवान के द्वारा की गयी माखन चोरी चोरी नही थी, भगवान की दिव्य लीला

103

थी। असल मे गोपियों ने प्रेम की आधिकता से ही भगवान का प्रेम का नाम 'चोर' रख दिया था, क्यो कि हमारे ठाकुर जी माखन की चोरी नही चित्त की चोरी करते है।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित! एक दिन कन्हैया ने खेलते - खेलते मिट्टी खा ली।

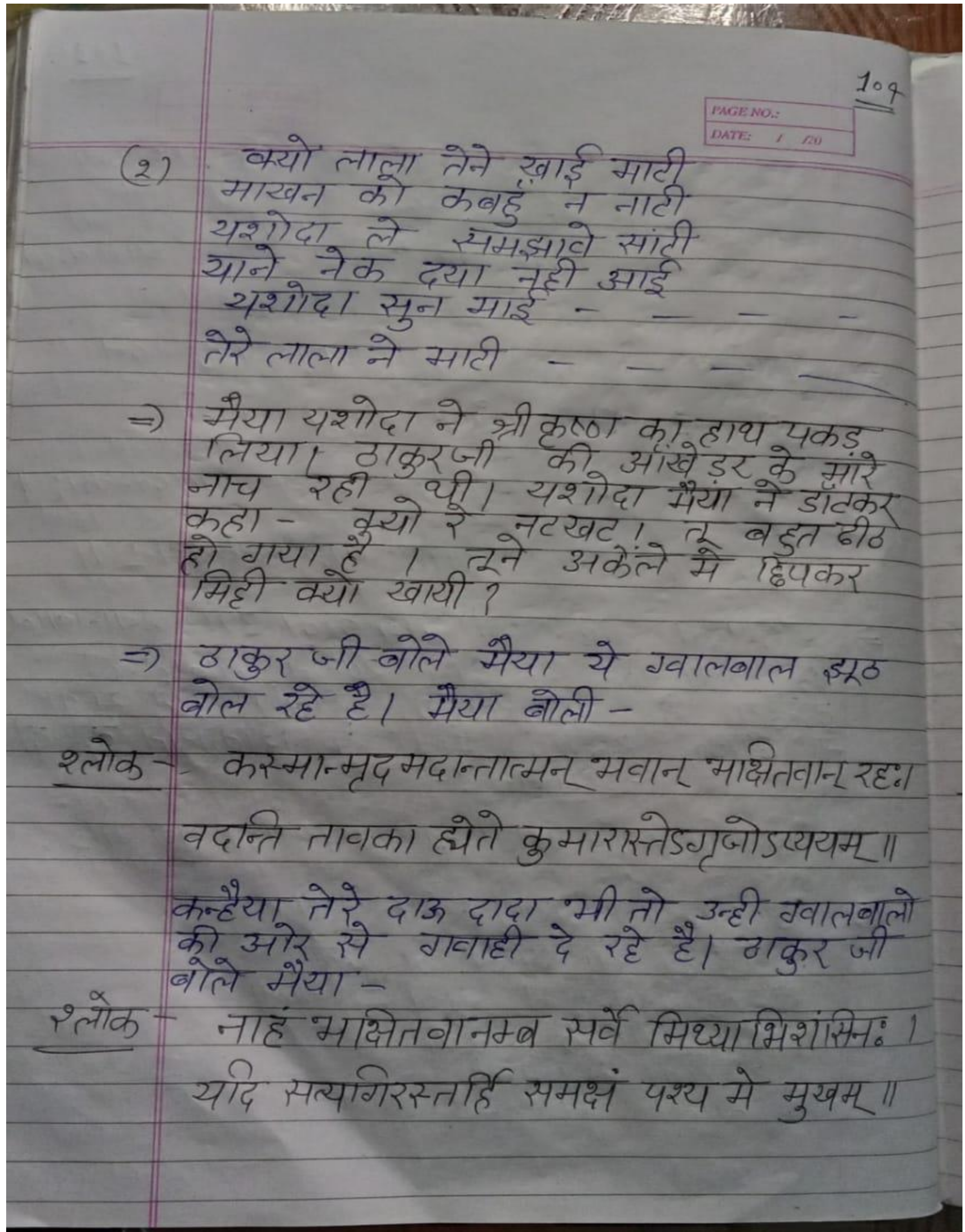
श्लोक - एकदा क्रीडमानास्ते रामाद्या गोपदारकाः ।
कृष्णो मृदं भक्षितवानिति मात्रे न्यवेदयन् ॥

⇒ एक दिन ठाकुर जी दाऊ दादा और ग्वालबाल के साथ खेल रहे थे। खेलते - खेलते ही कन्हैया ने मिट्टी खा ली, सबसे छोटे सखा ने आकर यशोदा मैया से शिकायत कर दी -

-! भजन !-

तेरे लाला ने माटी खाई, यशोदा सुन माई,

① अद्भुत खेल सखन संग खेलो
छोटो सो माटी को ढेलो
तुरत श्याम ने मुख मे लेलो
याने गटक, गटक गटकाई
यशोदा सुन माई - - -
तेरे लाला ने - - -



109

PAGE NO.:
DATE: / /20

(2) क्यो लाला तैने खाई माटी
माखन को कबहुं न नाटी
यशोदा ले समझावे सांटी
याने नेक दया नही आई
यशोदा सुन माई - - - -
तेरे लाला ने माटी - - - -

=> मैया यशोदा ने श्रीकृष्ण का हाथ पकड़ लिया। ठाकुरजी की आंखे डर के मारे नाच रही थी। यशोदा मैया ने डांटकर कहा - क्यो रे नटखट। तू बहुत ढीठ हो गया है। तूने अकेले मे छिपकर मिट्टी क्यो खायी?

=> ठाकुर जी बोले मैया ये ग्वालबाल झूठ बोल रहे है। मैया बोली -

श्लोक - कस्मान्मृदमदान्तात्मन् भवान् भक्षितवान् रहः।
वदन्ति तावका ह्येते कुमारास्तेऽग्रजोऽप्ययम्॥

कन्हैया तेरे दाऊ दादा भी तो उन्ही ग्वालबालो की ओर से गवाही दे रहे है। ठाकुर जी बोले मैया -

श्लोक - नाहं भक्षितवानम्ब सर्वे मिथ्याभिशंसिनः।
यदि सत्यगिरस्तर्हि समक्षं पश्य मे मुखम्॥

105

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ मैंने मिट्टी नही खायी। ये सब झूठ बोल रहे है। यदि तुम इन्ही की बात सच मानती हो, तो मेरा मुख तुम्हारे सामने है। तुम अपनी आँखो से देख लो। मैया यशोदा ने कहा यदि तेरी बात मे सच्चाई है, तू सत्य बोल रहा है, तो खोल अपना मुँह।

⇒ मैया ने पूछा लाला तूने मिट्टी खायी तो कन्हैया को अपना मुँह खोल कर दिखा देना चाहिए था, ये मुँह मे आकाश, दिशाएं पहाड़ द्वीप समुद्र दिखाने की क्या जरूरत थी ?

⇒ मैया यशोदा ने कन्हैया से कहा तेरी बात मे यदि सच्चाई है, तो मुँह खोल कर दिखा सत्य को दिखाने के लिए ठाकुर जी के पास कई तरीके है।

श्लोक – सा तत्र ददृशे विश्वं जगत् स्थास्नु च खं दिशः।

कन्हैया ने मैया को मुख मे सूर्य, चन्द्रमा, पहाड़ पर्वत, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के दर्शन करा दिये। इसका क्या मतलब है ?

= ठाकुर जी मैया से कहना चाहते है, मैया जब कोई वस्तु बाहर से खाई जाये तो उसे खाना कहते है, कोई वस्तु बाहर से पी जाये तो उसे पीना कहते है। मैया ने कहा- हाँ, भगवान ने कहा मैया तू पानी पी रही है, और मेरी बात सुन रही है, इसीलिये

PAGE NO.: 106
DATE: / /20

⇒ तुझे समझ मे नही आ रहा है, मैया ने कहा अरे! लाला तू मुझे कौन सी कहानी सुना रहा है, मैं पानी कहा पी रही हू, मै तो तुझसे बात कर रही हू।

⇒ भगवान ने कहा मैया ये बता मुख मे भीतर पानी निकलता है कि नही? यदि पानी न निकले तो मुख, गला सूख जायेगा। भीतर मे पानी निकलता, व्यक्ति उसको घोटता रहता, गला उससे भीगा रहता, मैया ने कहा अरे! वो पानी तो सब पीते है, भीतर का पानी यदि भीतर पिये तो उसे पीना नही कहते, बाहर से पीये उसे पीना कहते, बाहर से खाये उसे खाना कहते है। भीतर का पानी हर व्यक्ति अपने मुख के अन्दर पीता ही रहता है। उसको पीना नही कहते है।

⇒ भगवान ने कहा यही तो मै भी कह रहा हू मैया, भीतर की मिट्टी यदि भीतर मे ही खा ले तो उसको खाना नही कहते, क्यो कि ये सब मिट्टी पहले से ही मेरे भीतर विद्यमान है। यही भगवान कहना चाहते थे। इसलिए सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को मुख के अन्दर दिखा दिया। किन्तु मैया यशोदा भगवान की इस वेदान्त लीला को समझ नही पायी। मैया ने अपने नेत्रो को बन्द कर लिया, भगवान ने तुरन्त अपनी माया को अंतर्हित कर लिया।

⇒ श्री शुकदेव जी कहते है - परीक्षित !

श्लोक - एकदा गृहदासीषु यशोदा नन्दगेहिनी ।
कर्मान्तरनियुक्तासु निर्ममन्थ स्वयं दधि ॥

⇒ एक दिन मैया यशोदा प्रातःकाल (भोर) मे अपने कन्हैया को मक्खन खिलाने के लिए दही मथने लगी। यद्यपि यशोदा मैया के घर पर दास, दासियो की कमी नही थी फिरभी दास, दासियो को घर के अन्य कार्यो मे लगाकर स्वयं लाला के लिये मक्खन निकालने लगी मैया।

⇒ यानि यानीह गीतानि तद्बाल चरितानि च ।
दधिनिर्मन्थने काले स्मरन्ती तान्यगायत ॥

⇒ मैया यशोदा दधिमन्थन के समय कन्हैया के बाल लीलाओ का स्मरण करके गीत गा रही है।

जागो बंसीवारे ललना ।
जागो मोरे प्यारे ।

① रजनी बीती भोर भयो है
घर - घर खुले किवारे।
गोपी दही मथत सुनियत है
कंगना के झनकारे
जागो बंसीवारे ललना, जागो मोरे प्यारे

108

PAGE NO.:
DATE: / /20

(२) उठो लालजी ! भोर भयो है
सुर - नर ठाढ़े द्वारे
ग्वाल बाल सब करत कोलाहल
जय - जय शब्द उचारे

माखन रोटी हाथ मह लीनी
तो गउवन के रखवारे

मीरा के प्रभु गिरधर नागर
शरण आया को तारे।

जागो बंसीवारे ललना
जागो मोरे प्यारे - - - -

⇒ भगवान की बाल लीलाओ का स्मरण करते-करते मैया दही मथ रही थी। दही मथते - मथते, नेती खींचते रहने से बाँहे कुछ थक गयी थी। हाथो के कंगन और कानो के कर्णफूल हिल रहे थे। मुँह पर पसीने की बूँदे झलक रही थी। चोटी मे गुंथे हुए मालती के सुन्दर पुष्प गिरते जा रहे थे। पुत्र स्नेह की अधिकता के कारण मैया के स्तनो में से दूध चूता जा रहा था। ठाकुर जी सो रहे थे।

⇒ मैया के स्तनो से दुग्ध की बूँद जैसे ही पृथ्वी पर गिरी, भगवान के नेत्र खुल गये। भगवान ने विचार किया मैया का दुग्ध पान करने के लिये तो मै क्षीर सागर से यहा आया हूँ।

⇒ यद्यपि भगवान् के पास दूध की कोई कमी नहीं है, वह तो क्षीरसागर मे ही रहते है। किन्तु मैया यशोदा को मातृ सुख प्रदान करने के लिये ही ठाकुर जी ऐसी लीला करते है।

⇒ कन्हैया दौड़ते- दौड़ते मैया के पास आये और मथानी को पकड़ लिया, दही मथने से रोक दिया। ठाकुर जी मैया की गोद मे चढ़ गये। वात्सल्य - स्नेह की अधिकता से उनके स्तनो से दूध तो स्वयं झर ही रहा था। वे कन्हैया को दूध पिलाने लगी। इतनेमे यशोदा मैया को याद आया मै तो अंगीठी पर दूध उबलने के लिये रख आयी थी। दूध मे उफान आता देख मैया कन्हैया को अतृप्त ही छोड़कर दूध उतारने के लिये चली गयी।

श्लोक- संजातकोपः स्फुरितारुणाधरं
संदश्य दद्भिर्दधिमन्थभाजनम् ।
भित्त्वा मृषाश्रुर्दृषदश्मना रहो
जघास हैयंगवमन्तरं गतः ॥

⇒ मैया तो ठाकुर जी को अतृप्त छोड़कर दूध उतारने के लिये चली गयी, इधर ठाकुर जी को क्रोध आ गया। उनके लाल-लाल होठ फड़कने लगे। ठाकुर जी ने मन मे विचार किया लगता है मैया को पूत कम प्यारो है दूध घणो प्यारो है। जब व्यक्ति को क्रोध आता है, तो वह दो ही कार्य करता है, या तो

110

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ सामने खड़े व्यक्ति का सिर फोड़ देता है, या तो अपना सिर फोड़ लेता है। अपना सिर तो पागल फोड़ते है, ठाकुर जी तो बुद्धिमानो मे श्रेष्ठ है, अपना सिर क्यो फोड़ेगे ? सामने कोई व्यक्ति था नही दही और माखन से भरी मटकी रखी थी।

⇒ ठाकुर जी ने पास मे ही पड़े हुए लोढ़े से दही का मटका फोड़ डाला।

⇒ अच्छा बन्धुओ एक बात विचारणीय है, अँगीठी पर रखे दूध मे उफान क्यो आ गया?

⇒ अँगीठी पर रखे दूध ने विचार किया ठाकुर जी तो मैया का दूध पीकर के ही तृप्त हो जायेगे, हम तो काम आयेगे नही, और जो वस्तु कृष्ण सेवा मे काम नही आये उसे तो आग मे कूद के जल ही जाना चाहिये।

⇒ कबीर दास जी कहते है-
कृष्ण बिना नर ऐसे जैसे अश्व लगाम के बिना
जल जाए जिह्वा पापिनी, घनश्याम के बिना

(1) क्षत्रिय आन बिना, विप्र ज्ञान बिना
घर संतान बिना, देह प्रान बिना।
हाथ दान बिना, भोजन मान बिना
जीवन बेकार है, कृष्ण नाम बिना
जल जाए जिह्वा पापिनी —

PAGE NO.:
DATE: / /20

(2) पंछी पंख बिना, बिच्छू डंक बिना
आरती शंख बिना, गणित अंक बिना
कमल पंक बिना, निशा मयंक बिना
व्यर्थ भ्रमण चिंतन भाषण सब
हरि के नाम बिना
जल जाए जिह्वा पापिनी घनश्याम के बिना

⇒ ठाकुर जी मटका फोड़कर, बनावटी आँसू आँखो मे भरकर, दूसरे घर मे जाकर अकेले मे बासी माखन खाने लगे।

⇒ इधर यशोदा जी औटे हुए दूध को उतारकर फिर मथने के घर मे चली आयीं। वहाँ देखती है तो दही का मटका फूटा पड़ा है। मैया समझ गयी कि यह सब मेरे लाला की ही करतूत है। मैया कन्हैया को ढूंढने लगी। बहुत ढूंढने पर मैया ने देखा लाला एक उलटे हुए ऊखल पर खड़े है और छीके पर का माखन ले लेकर बंदरो को खूब लुटा रहे है।

⇒ बंदरो के प्रधान श्री हनुमान जी महाराज भी ठाकुर जी से कह रहे सरकार कुछ हमे भी खाने को दो, क्यो कि रामावतार मे हनुमान ने युद्ध भूमि के मैदान मे राम जी से कहा था। सरकार युद्ध भूमि के मैदान मे भोजन की व्यवस्था अच्छी नही है। तब रामजी ने हनुमान जी से कहा आप कृष्णावतार मे,

= गोकुल मे आना, मै तुम्हे खूब मक्खन और दही खाने को दूगा। वही हनुमान जी कुछ वैष्णव बन्दरो की टोली के साथ आकर ठाकुर जी के हाथ से मक्खन खा रहे है।

⇒ बन्दरो को मक्खन खिलाते हुये चारो ओर चौकन्ने होकर ठाकुर जी ताक रहे थे, उन्हे यह भी डर था, कि कही मेरी चोरी खुल न जाय, इतने मे यशोदा मैया कन्हैया के पास जा पहुँची।

⇒ मैया के हाथ मे छड़ी देखकर कन्हैया झट से ओखली पर से कूद पड़े और ड़रकर भागने लगे। आगे-आगे कन्हैया भाग रहे है, पीछे-पीछे मैया, भागते-भागते कुछ ही देर मे मैया थक गयी, बड़े-बड़े एवं हिलते हुए नितम्बो के कारण उनकी चाल धीमी पड़ गयी। मैया के चेहरे पर पसीने की बूँदे आ गयी। मैया थककर बैठ गयी।

⇒ कन्हैया ने देखा मैया थककर एक जगह बैठ गयी, कन्हैया बोले क्या हुआ मैया? मैया बोली देख लाला बुढ़ापे का शरीर है मुझसे ज्यादा चला नही जाता, लाला मेरे पास आजा, कन्हैया बोले मैया पहले इस छड़ी को फेक दो, तब आऊगा आपके पास, नही तो आप इसी छड़ी से मेरी पिटाई करोगी मैया ने कहा लाला पिटाई नही पूजा करुगी तेरी, मैया ने छड़ी फेक दी,

⇒ ठाकुर जी समझ नही पाये मैया कौन सी पूजा करेगी, भगवान स्वयं दौड़कर मैया के पास पहुच गये, मैया ने ठाकुर जी को पकड़ लिया।

⇒ मैया ने जब तक छड़ी नही फेंकी तब तक भगवान पकड़ मे नही आये. इसका क्या मतलब है? बन्धुओ हम कितने भी उच्चकोटि के साधक हो किन्तु केवल साधना के बल पर भगवान को प्राप्त नही कर सकते, तो क्या साधन सब बेकार है? साधन बेकार नही है।

राम नाम को अंक है, सब साधन है सून।

अंक गएँ कछु हाथ नाहि, अंक रहें दस गून॥

शून्य मे बल तो होता है, किन्तु अंक के साथ जुड़कर, शून्य मे स्वतन्त्र बल नही होता है। इसी प्रकार साधन मे शक्ति है, पर भगवान के साथ जुड़कर, ठाकुर जी की भक्ति के साथ जुड़कर ये शक्ति कार्य करती है। परमात्मा की प्राप्ति के लिये जो साधन कर रहे है यदि उस साधन का हमे अभिमान हो गया तो परमात्मा की प्राप्ति हमे नही हो सकती जप करो, अनुष्ठान करो, भक्ति करो किन्तु ये अभिमान मत करो कि मैने इतना जप कर लिया, मैने इतने अनुष्ठान कर लिये मैया कन्हैया को पकड़ने के लिये दौड़ी किन्तु लाठी लेकर, लाठी अभिमान है, जब तक अभिमान को अपने अन्दर से बाहर निकालकर

⇒ नही फेकोगे तब तक परमात्मा की प्राप्ति नही होती। आपमे जितनी शक्ति हो, उतना तप करो, किन्तु अभिमान मत करो, मैया ने जैसे ही लाठी को फेका, कन्हैया स्वयं मैया के पास आ गये, मैया जब थक गयी, पसीने की बूंदे चेहरे पर आ गयी, तब ठाकुर जी पकड़ मे आये जीव जब परमात्मा की प्राप्ति के लिये साधन करते-करते थक जाता है, अहंकार त्याग देता है, तब गोविन्द पकड़ मे आते है।

श्लोक:- त्यक्त्वा यष्टिं सुतं भीतं विज्ञायार्भकवत्सला।
इयेष किल तं बद्धुं दाम्नातद्वीर्यकोविदा॥

⇒ जब मैया ने ठाकुर जी को पकड़ लिया तो देखा ठाकुर जी बहुत डरे हुये हैं, कन्हैया के नेत्रो से अश्रु प्रवाह हो रहे है, बार-बार आँखे मलने के कारण, आँखो मे लगे काजल की स्याही मुँह पर फैल गयी, पिटने के भय से आँखे ऊपर की ओर उठ गयी थी, मैया के हृदय मे वात्सल्य स्नेह उमड़ आया। किन्तु इसके बाद मैया ने विचार किया आज यदि लाला को दण्ड नही दिया, तो आगे भी गलती करता रहेगा।

श्लोक- न चान्तर्न बहिर्यस्य न पूर्वं नापि चापरम्।
पूर्वापरं बहिश्चान्तर्जगतो यो जगच्च यः॥

⇒ जिनका न आदि है, न मध्य है, न अन्त है, जो जगत के पहले भी थे, बाद मे भी

⇒ रहेगो। जो जगत के भीतर तो है ही, बाहरी रूपो मे भी है; जो परमात्मा जगत के निमित्त और उपादान दोनो कारण है, जिस परमात्मा ने जगत बनाया और स्वयं जगत बनकर के आये ऐसे भगवान को साधारण मनुष्य का रूप धारण करने के कारण यशोदा मैया रस्सी से ऊखल मे बांधने लगी।

⇒ जब यशोदा मैया ने कन्हैया को बांधने का प्रयास किया तो रस्सी दो अंगुल छोटी पड़ गयी। मैया पुनः दूसरी रस्सी लेकर आयी और पहले वाली रस्सी के साथ जोड़ने लगी किन्तु रस्सी फिर दो अंगुल छोटी पड़ गयी।

श्लोक- यदाऽऽसीत्तदपि न्यूनं तेनान्यदपि सन्दधे।

तदपि द्वयङ्गुलं न्यूनं यद यदादत्त बन्धनम्॥

⇒ मैया ज्यो-ज्यो रस्सी लाकर जोड़ती त्यो-त्यो जुड़ने पर भी रस्सी दो अंगुल छोटी पड़ जाती। ये दो अंगुल रस्सी छोटी क्यो पड़ जाती?

(1) ⇒ बन्धुओ रस्सी है गुण, यशोदा मैया गुण से निर्गुण को बांधना चाहती है, मैया एक-एक रस्सी का टुकड़ा लाकर रस्सी मे जोड़कर भगवान को बांधने का प्रयास कर रही है, अर्थात- मैया एक-एक गुण लाकर भगवान मे आरोपित कर रही है, हर माँ चाँहती है कि मेरा बेटा गुणवान बने

116

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ मैया भगवान को यही कहकर डाँटती अरे! मेरे निर्गुणिया तू गुणवान बन, भगवान को बाँधते-बाँधते जब मैया थक गयी, किन्तु भगवान को बाँध न पायी, तब ठाकुर जी स्वयं बंध गये। भगवान ने बन्धन स्वीकार कर लिया। भगवान अपने भक्त के प्रेम के चलते गुणों का स्वीकार कर लेते है। भक्त जैसा कहता है, वैसे भगवान हो जाते है। भक्तो की भावना की पूर्ति करके भगवान भक्त को सुख देते है। भक्त के सुख को देखकर भगवान आनंदित होते है।

⇒ सुख देकर प्रेम सुखी होता है, जो अपने ही सुख की चिन्ता करे और चिन्तन करे वो वासना है, जो दूसरो को सुख देकर आनंदित हो वो प्रेम है, भगवान ने प्रेम के बन्धन को स्वीकार कर लिया। प्रेम बन्धन तो है किन्तु स्वीकारा हुआ, लादा हुआ नही, प्रेम बाँधता नही है, प्रेम बंधता है। जो बाँधे वो वासना, जो बंध जाये वो प्रेम, ठाकुर जी प्रेम के बन्धन मे बंधते है, अंहकार के नही।

(२) दूसरा भाव हमारे सन्तजन कहते है ये जो दो अंगुल रस्सी छोटी पड़ रही है, ये दो अंगुल क्या है? एक अंगुल है भक्त का पुरुषार्थ, दूसरा अंगुल है भगवान की कृपा भक्त को चाहिए कि वह अधिक से अधिक पुरुषार्थ करे, क्यो कि बिना पुरुषार्थ किये भगवान की प्राप्ति नही

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ होती। जब भक्त का पुरुषार्थ प्रबल होगा और परमात्मा की कृपा होगी तब भगवान बंधते हैं। यशोदा मैया भगवान को बांधते बांधते थक गयी अर्थात भक्त का पुरुषार्थ प्रबल था, ठाकुर जी की कृपा भी प्राप्त हो गयी और भगवान बंध गये।

श्लोक - नायं सुखापो भगवान् देहिनां गोपिका सुतः।
ज्ञानिनां चात्मभूतानां यथा भक्तिमतामिह॥

⇒ ठाकुर जी देहाभिमानी कर्मकाण्डी एवं तपस्वियों तथा ज्ञानियों को मिलते कि नही मिलते ये तो निश्चित नही किन्तु ठाकुर जी अपने प्रेमियों को मिल जाते है ये निश्चित है।

⇒ मैया ने रस्सी को कन्हैया के उदर मे बांधा दाम अर्थात रस्सी, उदर अर्थात पेट नाम पड़ गया दामोदर, बोलिये दामोदर भगवान की जय, मैया ने रस्सी से कन्हैया को बांधकर रस्सी के छोर को ऊखल से बांध दिया।

⇒ मैया तो भगवान को ऊखल से बाँधकर घर के काम धंधो मे उलझ गयी, इधर ऊखल मे बंधे हुए भगवान ने दोनो अर्जुनवृक्षों को मुक्ति देने की सोची।

⇒ परीक्षित जी ने पूछा - भगवन! ये अर्जुनवृक्ष कौन थे। जिन्हे भगवान ने मुक्ति देने की सोची?

118

PAGE NO.:
DATE: / /20

श्लोक - पुरा नारदशापेन वृक्षतां प्रापितौ मदात्।
नलकूबर मणिग्रीवाविति ख्यातौ श्रियान्वितौ॥

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित! यक्षराज कुबेर के पुत्र थे नलकूबर और मणिग्रीव, इन्हें अपने धन, सौन्दर्य और ऐश्वर्य का बहुत घमण्ड था।

① एक तो यह दोनो धनाढ्यक्ष कुबेर के लाड़ले लड़के।

② इनकी गिनती रुद्रभगवान के अनुचरो मे की जाती।

अपने पद प्रतिष्ठा के कारण दोनो श्रीमदान्ध हो गये।

श्लोक - वारुणीं मदिरां पीत्वा मदाघूर्णितलोचनौ।

⇒ एक दिन नलकूबर और मणिग्रीव मदिरा पीकर मदोन्मत्त हो गये, और स्त्रियो के साथ नग्न होकर सरोवर मे जाकर क्रीड़ा करने लगे। संयोगवश उधर से नारद जी निकले। नारद जी को देखकर वस्त्रहीन स्त्रियो ने तो अपने तन को ढक लिया किन्तु नलकूबर और मणिग्रीव ने वस्त्र नही पहने, ऐसे ही खड़े रहे, नारद जी ने कहा तुम दोनो कुबेर के पुत्र होने पर भी मदोन्मत्त होकर अचेत हो रहे हो, तुमको इस बात का भी पता नही, कि हम बिलकुल नंगा

घड़ा है। तुम दोनो को मै श्राप देता हु पृथ्वी पर जाकर वृक्ष बन जाओ। ऐसा होने से इन्हे फिर इस प्रकार का अभिमान नही होगा। वृक्ष योनि मे जाने पर भी मेरी कृपा से इन्हे भगवान की स्मृति बनी रहेगी, और भगवान् श्री कृष्ण का सानिध्य प्राप्त होगा, और फिर भगवान् के चरणो मे परम प्रेम प्राप्त करके ये अपने लोक मे चले जायेंगे।

श्लोक- ऋषेर्भागवतमुख्यस्य सत्यं कर्तुं वचो हरिः।
जगाम शनकैस्तत्त यत्रास्तां यमलार्जुनौ ॥

नारद जी की बात को सत्य करने के लिये भगवान ऊखल को घसीटते हुए यमलार्जुन के वृक्ष के मध्य ले आये, भगवान् तो वृक्षो के बीच मे घुसकर दूसरी ओर निकल गये, परन्तु ऊखल टेढ़ा होकर अटक गया। भगवान ने जैसे ही उस ऊखल को थोड़ा जोर से खींचा दोनो वृक्षो की सारी जड़े उखड़ गयी। दोनो वृक्ष तड़तड़ाते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े। दोनो वृक्षो मे से अग्नि के समान तेजस्वी दो सिद्ध पुरुष निकले। दोनो ने भगवान के समीप जाकर प्रणाम किया, और उनकी स्तुति करने लगे।

श्लोक- वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां
हस्तौ च कर्मसु मनस्तव पादयोर्नः।
स्मृत्यां शिरस्तव निवासजगत्प्रणामे
दृष्टिः सतां दर्शनेऽस्तु भवत्तनूनाम् ॥

⇒ हे प्रभो! हमारी वाणी आपके मंगलमय गुणो का वर्णन करती रहे। हमारे कान आपकी रसमयी कथा का श्रवणपान करते रहे, हमारे हाथ आपकी सेवा मे और मन आपके चरण कमलो की स्मृति मे रम जायें हमारा मस्तक आपके चरणो मे झुका रहे। संत भगवान आपका ही स्वरूप है हमारी आँखे उनका दर्शन करती है। इस प्रकार भगवान की स्तुति करके दोनो श्राप से मुक्त होकर अपने धाम चले गये।

⇒ उखल बन्धन लीला भगवान ने दीपोत्सव के समय कार्तिक माह मे की थी इसलिये कार्तिक माह को दामोदरमास भी कहते है।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित! वृक्षो के गिरने से जो भयंकर शब्द हुआ, उसे सुनकर नन्दबाबा और गोप दौड़े दौड़े वृक्षो के पास गये। वहाँ पहुचने पर देखा दोनो अर्जुन के वृक्ष गिरे हुए है ठाकुर जी रस्सी से बँधे हुए उखल को घसीटते ले जा रहे है। नन्दबाबा ने रस्सी की गाँठ को खोलकर कन्हैया को गोदी मे उठा लिया। नन्दबाबा ने सभी गोपो से कहा जब से कन्हैया गोकुल मे जन्म लेकर आया कोई न कोई उत्पात नित्य हो रहा है अब हम यहाँ नही रहेगे।

PAGE NO.:
DATE: / /20

⇒ सभी गोप एकत्रित होकर इस विषय पर विचार करने लगे। उनमे एक गोप का नाम था उपनन्द। वे अवस्था और ज्ञान दोनो मे ही बड़े थे। उन्होने नन्दबाबा और सभी गोपो से कहा यदि तुम लोग कृष्ण और राम तथा गोकुल-वासियों का भला चाहते हो, तो आज ही अपना डेरा - डंडा उठाकर यहा से कही और प्रस्थान करो।

⇒ सभी गोपो ने कहा हम गोकुल छोड़कर कहाँ जायेगे? तब उपनन्द जी बोले -

श्लोक- वनं वृन्दावनं नाम पशव्यं नवकाननम् ।
गोप गोपी गवां सेव्यं पुण्याद्रितृणवीरुधम् ॥

⇒ वृन्दावन नाम का एक वन है। उसमे छोटे-छोटे और भी बहुत से नये - नये हरे - भरे वन है। वहाँ बड़ा ही पवित्र पर्वत, घास और हरी - भरी लता वनस्पतियाँ है। गोप, गोपी और गायो के लिये वह केवल सुविधा का ही नही, सेवन करने योग्य स्थान है। सो यदि तुम सब लोगो को यह बात जंचती हो तो आज ही हम लोग वहां के लिये प्रस्थान करे।

⇒ उपनन्द की बात सभी गोपो को ठीक लगी सब लोगो ने अपनी झुंड की - झुंड गाये इकट्ठी की और छकड़ो पर घर की सब सामग्री लादकर वृन्दावन की यात्रा की।

⇒ आइए हम लोग भी वृन्दावन की ओर प्रस्थान करे। मानसिक रुप से वृन्दावन की परिक्रमा करे।

:: भजन ::

चलो मन वृन्दावन की ओर - 2
वृन्दावन की ओर - 2
चलो मन वृन्दावन - - - - - -

(1) जँहा विराजत राधा रानी - 2
नटवर नन्द किशोर
चलो मन - - - - - - -

(2) प्रेम का रस जंहा छलके है
कृष्ण नाम से भोर
चलो मन वृन्दावन - - - - - -

(3) भक्ति की रीति जँहा पनपत है
प्रेम प्रीति की डोर
राधे - राधे जपते - जपते
दिख जाए चितचोर
चलो मन वृन्दावन - - - - -

(4) निर्मल नीर बहत यमुना को
सबके हृदय बसत चितचोर
चलो मन वृन्दावन - - - - - -

वृन्दावन, वृन्दावन, वृन्दावन डोले - 2
वृन्दावन की गलियो मे राधे - राधे बोले - 2

→ वृन्दावन किसे कहते है ?

वृन्दायाः तुलस्या वनं वृन्दावनं

वृन्दा (तुलसी महारानी) वन (जंगल, बाग, वाटिका)
तुलसी से विभूषित जो वन है, उसे वृन्दावन
कहते है।

श्लोक - वृन्दाय तुलसी देव्यै, प्रियायै केशवस्य च ।
विष्णु भक्तिप्रदे देवी सत्यवत्यै नमो नमः ॥

⇒ तुलसी महारानी ठाकुर जी की अतिप्रिय है ।

⇒ तुलसी पूर्व जन्म मे वृन्दा थी, इनका विवाह जालंधर नाम के राक्षस के साथ हुआ था। वृन्दा भगवान विष्णु की भक्त और पतिव्रता स्त्री थी। किन्तु वृन्दा के पति जालंधर ने सारी दुनियाँ मे तहलका मचा दिया। भगवान शंकर भी इस जालंधर से परेशान हो गये। सभी देवता विचार करने लगे इस जालंधर को कैसे मारा जाये? तब पता चला जालंधर को मारने का एक ही उपाय है। ये तभी मरेगा जब इसकी पत्नी का पातिव्रत नष्ट होगा। क्यो कि जालंधर अधर्म करता था और वृन्दा के पातिव्रत धर्म के कारण उसकी रक्षा होती रहती थी।

⇒ जालंधर राक्षस का कवच उसकी पत्नी का पातिव्रत धर्म है। धर्म अधर्म का कवच बन गया। जब तक धर्म रुपी कवच तोड़ा नही जायेगा, तब तक जालंधर की मृत्यु नही हो सकती। भगवान विष्णु ने वृन्दादेवी के पातिव्रत को भंग करने का विचार बनाया। जाकर के उससे प्रेम का प्रस्ताव रखने लगे, उससे प्रेम की बाते करने लगे। वृन्दा इतनी कट्टर पतिव्रता, उसने भगवान को फटकार दिया। भगवान ने अपनी त्रिभुवन मोहिनी रुप माधुरी का खूब जादू चलाया, पर पतिव्रता पर कोई प्रभाव नही चल पाया। भगवान बोले भाई ये तो बड़ी अद्‌भुत पतिव्रता है, अब क्या करें? प्रेम से बात नही बन रही, प्रेम तो बहुत किया, अब भगवान ने छल किया, स्वयं वृन्दा के पति का रुप बनाकर पहुँच गये।

⇒ छल करि टारेउ तासु व्रत
प्रभु सुर कारज कीन्ह ।

⇒ जब जालंधर बनकर भगवान पहुँचे, तो वृन्दा ने अपना पति समझकर प्रभु को स्वीकार किया। जैसे ही पति समझकर प्रभु को स्वीकार किया कि उसका व्रत भंग हो गया। उधर युद्ध छिड़ा था। व्रत टूटते ही उसका पति मारा गया। जालंधर का शरीर जब आकर के आंगन मे गिरा। वृन्दा को पता चल गया मेरे साथ छल हुआ है। वृन्दा ने भगवान से पूछा कौन हो तुम?

⇒ भगवान अपने स्वरूप मे प्रकट हो गये। विष्णु भगवान को देखकर वृन्दादेवी क्रोध मे भर गयी। छलिया मेरे साथ तुमने छल किया, धोखा दिया, विष्णु मै वृन्दा तुम्हे शाप देती हूँ, तुम पत्थर हो जाओ। शाप से भगवान शालिग्राम शिला बनकर के तैयार हो गये। धन्य है भगवान का प्रेम, वृन्दा ने भगवान को शाप दे दिया, फिर भी भगवान के प्रेम मे कोई कमी नही आई।

⇒ वृन्दा अपने पति के शरीर को गोद मे रखकर सती हो गई। फिर उनकी राख मे से एक पौधा निकला जिसे भगवान विष्णु ने तुलसी नाम दिया। भगवान ने तुलसी से कहा देवी तुमने भले ही हमे पत्थर बना दिया, पर जब तक तुम्हारा दल, तुलसी दल मेरे सिर पर नही आयेगा, तब तक मेरे सिर मे दर्द बना ही रहेगा। तुम्हारे बिना न हम भोजन कर सकते है, न किसी के घर जा सकते है। शालिग्राम की पूजा तुलसी दल के बिना अधूरी है। भोग लगाना है तो तुलसी डालो तभी भोग स्वीकार करेगे।

छप्पन भोग धरे हरि आगे ।
बिन तुलसी प्रभु एक न मानी ॥

⇒ भक्त के गले मे तुलसी की कंठी न हो तो भगवान भक्त स्वीकार नही करते। तुलसी के बिना भगवान की शरणागति सार्थक नही होती जिस घर के आंगन मे तुलसी का पौधा नही

⇒ भगवान उसके घर जाते नही।

दोहा- रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराई ॥

जिस वैष्णव के घर मे तुलसी महारानी निवास करती है उस घर मे ठाकुर जी दौड़े दौड़े चले आते है।

⇒ कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी को जो लोग तुलसी शालिग्राम का विवाह करते हैं उन्हे कन्यादान के समान ही फल की प्राप्ति होती है।

⇒ तुलसी से विभूषित जो वन है, उसे वृन्दावन कहते है।

या

(एक-व. पंचमी विभक्ति — एक व. पंचमी विभक्ति)

② वृन्दायाः राधिकायाः सेवितवनं वृन्दावनं

जँहा पर सखीवृंदो के साथ किशोरी जी विहार करती है, ऐसी वृजस्थली जंहा की स्वामिनी राधा रानी है। उसे वृन्दावन कहते है। वैकुंठ मे तो लक्ष्मी जी चरण दबाती है नारायण के, परन्तु वृन्दावन मे ठाकुर जी चरण दबाते है, राधा रानी के इसलिये वृन्दावन मे राज्य राधारानी का है।

या

(षष्ठी - बहु)

वृन्दानाम् भक्त समूहानां वनं वृन्दावनं

जँहा पर भगवान के भक्तवृंद निवास करते है, जंहा पर भगवान अपने भक्तों की सदा रक्षा करते है। उसका नाम है वृन्दावन।

⇒ वृन्दावन भक्ति का तट है, जंहा आकर भक्ति भी नृत्य करती है वह है श्री धाम वृन्दावन, वृन्दावन दर्शन का विषय नही अनुभव का विषय है। आप वृन्दावन दर्शन करने जायेगे तो वंहा छोटी-छोटी, पतली पतली कुन्ज गली ही दिखेगी, हो सकता है वंहा परिक्रमा करते हुए आपको मार्ग मे गन्दगी दिख जाये, किन्तु यदि अनुभव के दृष्टि से देखे तो हर पल आपको अनुभव होगा कि श्री राधा-रमण जी आपके साथ चल रहे है।

⇒ बिना श्री जी की कृपा के वृन्दावन वास नही मिलता नित्य श्री जी से वृन्दावन वास की कामना से प्रार्थना करते रहे, वृन्दावन के रसिक सन्तो का संग करते रहे, वृन्दावन के वृक्षो को हृदय से लगाते रहे, एक दिन श्री जी की कृपा से अनुकूल या प्रतिकूल स्थिति मे वृन्दावन वास मिल ही जायेगा।

श्री वृन्दावन वास दीजिये, अब यही हमारी आशा है।
यमुना तीर सुछाय माधुरी, जहं रसिको का वासा है॥
सेवाकुन्ज मनोहर निधिवन, जहां इक रस बारो मासा है।
ललित किशोरी अब यह दिल बेकल, जुगल रुप रस प्यासा है।

⇒ नित्य श्री जी से कहिए - हे किशोरी जू हम आपसे प्रार्थना कर रहे है, अब हमे केवल एक ही आशा है कि वृन्दावन का वास मिले। वृंदावन मे यमुना के किनारे जँहा रसिक संतो का निवास है, जंहा पर सेवा कुंज और निधिवन जैसी मधुर स्थली है, जंहा सभी बारह मास अर्थात् हर क्षण एक सा ही नित्यरस बरसता है। श्री किशोरी जी मेरा हृदय अब केवल युगल रस (वृंदावन) का ही प्यासा है।

⇒ वृन्दावन वास का अर्थ-

⇒ पहले तो हम यह प्रयास करे, कि तन और मन दोनो से वृन्दावन वास करे, तन से वृन्दावन वास नही कर सकते, तो मन से वृन्दावन वास करे।

⇒ मन से वृन्दावन वास करने का क्या अर्थ है? शरीर आपका कही रहे, यदि मन से आप दिन-रात वृन्दावन का चिन्तन करते है तो आप व्रजवासी है। व्रजवासी कौन है?

(1) जिनका जन्म वृन्दावन मे हुआ

(2) जिनका जन्म कही और हुआ बाद मे आकर वास करने लगे।

(3) जिनका जन्म भी कही और हुआ, वास भी कही और हुआ किन्तु मन सदैव वृन्दावन मे रहता वह व्रजवासी है।

⇒ बहुत से लोग तो यह सुनकर के वृन्दावन वास करने आते है कि वृन्दावन मे शरीर छूटने से मुक्ति मिल जाती है, वृन्दावन आकर यदि आप मनमाना आचरण करते है, वृन्दावन मे वास करते हुए भी दिन मे दस बार नाती, पोतो से फोन पर बात करते है, मन आपका घर मे, अकेले लगता नही इसलिये मन्दिरो के दर्शन करने निकल जाते हो तो पूरे जीवनभर वृन्दावन वास करिये फिर भी आपको न तो प्रियाप्रियतम की प्रीति, कृपा प्राप्त होगी न ही मुक्ति मिलेगी।

⇒ वृन्दावन वास करना है तो अहमता और ममता के बन्धन को तोड़ दीजिये, वृन्दावन के जो मूल निवासी है (व्रजवासी) उनके प्रति आदर का भाव रखिये, प्रयास करिये वृन्दावन मे रहकर किसी व्रजवासी भक्त या सन्त का अपमान हमारे द्वारा न हो जाये। मैने देखा है प्रारम्भ मे जब कोई भक्त वृन्दावन वास करने आता है तो कुछ दिन तो धाम के प्रति बड़ा आदर का भाव रहता है, कुछ दिनो के बाद सामान्य दृष्टि से ही वृन्दावन को देखने लगता, ऐसा नही होना चाहिये, अरे वह मनुष्य बड़भागी है जो नित्य व्रजवासियो के हाथ से मधुकरी मांग के पाता है। वृन्दावन और वृन्दावन के मन्दिरो

⇒ मे विराजित ठाकुर जी, साक्षात् नारायण ही है। जो जीव सत, रज, तम, इन तीनो गुणो से ऊपर उठकर निर्गुण हो जाता है, वह वास्तविक अधिकारी है वृन्दावन वास करने का, अत्याधुनिक शहर की सुविधा जुटाकर वृजवास कर लेना ही वृजवास होता तब तो मीरा बाई, सब राग-संसार को त्यागकर विरक्त हो क्यो आती? अगर आज के धनी बहु मंजिला भवन बना सकते है, तो वह तो उस कुल से थी जो आज के आये धनी के पूरे शहर को महल बना दे।

⇒ रूप गोस्वामी पाद आदि अनेक सन्तो ने राजसिक वैभव को त्यागा न्यून अति न्यून मधुकरी पा कर बृज वास किया। वह इतने सम्पन्न थे, पूरे वृजमण्डल को नित्य राजसिक भोग पवा सकते थे। ऐसे कई उदाहरण है, अतः अगर अपना शहर छूटते न बने तो घर पर रहकर भजन करिए। वृन्दावन मे पाँच मंजिला घर बनाकर, वस्तु और भौतिकता का तो भोग सम्भव है। परन्तु निर्गुण प्रेम की अवस्था तो बृज रज मे लोटने, जो मिले सो पाकर वास करने और साधन सम्पन्न नही, अप्रयत्न और भौतिक असाधन से ही अन्तः के साधन का उदय होगा। अतः वृन्दावन वास से पूर्व दैन्यता का भाव हृदय मे लाकर सरल बनने का प्रयास करे, श्री जी कृपा अवश्य करेगी।

⇒ नन्दबाबा, यशोदा, रोहिणी और सभी गोप, गोपियों ने अपने परिवार के साथ वृन्दावन मे प्रवेश किया तो सर्वप्रथम छकड़ो को छटीकरा नामक जो स्थान है वहा पर रोका। जबसे ठाकुर जी जन्म लेकर आये तबसे उनकी छठी नही पुज पाई। कभी पूतना आ गई तो कभी शकटासुर, कभी तृणावर्त, वृन्दावन आकर मैया यशोदा ने छटीकरा पर कन्हैया की छठी पूजी इसलिये इस स्थान का नाम छटीकरा पड़ गया। इसके बाद सभी बृजवासियो ने यमुना मैया का पूजन किया। नन्दगाँव को नन्दबाबा ने और ब्रह्मान्चल पर्वत को वृषभानु जी ने अपनी राजधानी बनाया

⇒ वृजमण्डल मे ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनो देवता है।

बरसानेमे स्थित ब्रह्मान्चल पर्वत साक्षात ब्रह्मा जी, गोवर्धन मे स्थित गोवर्धन पर्वत साक्षात विष्णु जी और नन्दगाँव मे स्थित नन्देश्वर पर्वत साक्षात शंकरजी है।

⇒ ब्रह्मा, शंकर जी ने तप किया वृजवास के लिये तब राधारानी ने उनको ब्रह्मान्चल और नन्देश्वर पर्वत के रूप मे प्रकट किया।

⇒ सभी ग्वालो ने यमुना के किनारे अपने छकड़ो को अर्द्धचन्द्राकार मण्डल बाँधकर खड़ा कर दिया और अपने गोधन के रहने योग्य स्थान बना लिया सभी वृजवासी छकड़ो के नीचे अपना घर बनाकर रहने लगे।

⇒ वृन्दावन मे आकर ठाकुर जी ने सर्वप्रथम वत्स-चारण लीला की। एक दिन कन्हैया मैया यशोदा से बोले मैया मै भी गौ चारण के लिये जाऊगा लाला की बात सुनकर मैया हँसने लगी, मैया बोली लाला जितना बड़ा तू उससे बड़ी गौ मोता, इसलिये तू अभी बछड़े चराने जा। आज प्रथम बार राम और श्याम वत्सचारण के लिये ग्वालबालो के साथ यमुनातट पर गये।

⇒① मैया री! मै गाय चरावन जैहौं।
तूं कहि महरि नंदबाबा सों, बड़ो भयो न डरैहौं॥
श्रीदामा लै आदि सखा सब, अरु हलधर सँग लैहौं।
दह्यौ-भात कांवरि भरि लैहौं, भूख लगै तब खैहौं॥
बंसीवट की सीतल छैयां खेलत मे सुख पैहौं।
परमानंददास सँग खेलौं, जाय जमुनतट न्हैहौं॥

(२) चले हरि वत्स चरावन आज।
मुदित जसोमति करत आरती, साजे सब शुभ साज॥
मंगलगान करत ब्रजबनिता, मोतिन पूरे थाल।
हँसत, हँसावत वत्स-बाल सँग चले जात गोपाल॥

⇒ कन्हैया, दाऊ दादा और ग्वालबालो के साथ बछड़े चरा रहे थे। उसी समय उन्हे मारने की नीयत से एक दैत्य वहाँ आ गया। जिसका नाम वत्सासुर था। भगवान ने देखा कि वह बनावटी बछड़े का रूप धारणकर बछड़ो के झुंड मे मिल गया। वे आँखो के इशारे से दाऊ दादा को दिखाते हुए धीरे-धीरे उसके पास पहुँच गये।

श्लोक:- गृहीत्वापरपादाभ्यां सहलाङ्गूलमच्युतः।

भ्रामयित्वा कपित्थाग्रे प्राहिणोद् गतजीवितम् ॥

⇒ भगवान श्री कृष्ण ने पूँछ के साथ उसके दोनो पिछले पैर पकड़कर आकाश मे घुमाया और मर जाने पर कैथ के वृक्ष पर पटक दिया। इस प्रकार भगवानने वत्सासुर नामक असुर का उद्धार किया।

⇒ बन्धुओ वत्सासुर कहते है अज्ञान को, जब जीव भक्ति के तट पर अर्थात वृन्दावन मे पंहुचकर भक्ति के मार्ग पर चलता है तो सर्वप्रथम उसका सामना अज्ञान से होता है। जब भक्ति के मार्ग पर आप चलेगे तो बहुत से अज्ञानी आपको मिलेगे जो आप से कहेगे, अरे ये माला करने से क्या होता है, भक्ति करने से क्या होता है, आपको अज्ञान को नष्ट करके आगे बढ़ना है, रुकना नही है, चलते जाना है।

⇒ एक दिन की बात कन्हैया और दाऊ दादा ग्वालबालो के साथ बछड़ो को जल पिलाने के लिये जलाशय के पास गये, तभी बकासुर नामक असुर बगुले का रूप धारण करके भगवान को मारने के लिये आ गया ये बकासुर, बकी (पूतना) का भाई था। अवसर पाते ही उसने श्री कृष्ण को निगल लिया। जब भगवान बगुले के तालु के नीचे पहुँचे, तब वे आग के समान उसका तालु जलाने लगे। बकासुर ने भगवान के शरीर पर बिना किसी प्रकार का घाव

किये ही झटपट उन्हे उगल दिया। ग्वालबालो के देखते ही देखते भगवान ने उस बगुले की चोंच पकड़कर उसे चीर डाला।

श्लोक:- मुक्तं बकास्यादुपलभ्य बालका
रामादयः प्राणमिवैन्द्रियो गणः ।
स्थानागतं तं परिरभ्य निर्वृताः
प्रणीय वत्सान् व्रजमेत्य तज्जगुः ॥

⇒ जब दाऊ दादा आदि बालको ने देखा कि कृष्ण बगुले के मुंह से निकलकर हमारे पास आ गये है, तब उन्हे ऐसा आनन्द हुआ, मानो प्राणो के संचार से इन्द्रियाँ सचेत और आनन्दित हो गयी हो। सभी दौड़कर भगवान के गले लग गए।

⇒ बंधुओ बकासुर - दम्भ, झूठ, आडंबर का प्रतीक है जब हम भक्ति के मार्ग पर चलते है तो दम्भ हमे अपने मार्ग से भटकाने के लिये अवश्य आता है। भक्ति मे आडंबर (दम्भ) दिखावा नही होना चाहिए, कुछ लोग दो चार माला कर लेते, और अपने आपको भजनानन्दी बताकर आडंबर (दिखावा) प्रारम्भ कर देते। भक्ति के नाम पर इतने आडंबर करने की क्या आवश्यकता? भक्ति के नाम पर आडंबर, दिखावा, ढोंग नही करना चाहिये।

⇒ एक दिन ठाकुर जी वन मे कलेवा करने के विचार से प्रातः जल्दी उठ गये, ग्वालबालो को साथ लेकर बछड़ो को आगे करके वृजमण्डल से निकल पड़े। ठाकुर जी ग्वालबालो के साथ खेल रहे थे, उसी समय अघासुर नाम का राक्षस भगवान को मारने के लिये अजगर का रूप धारण कर के आ गया। अघासुर को देखकर ग्वाल बालो ने विचार किया कि यह भी वृन्दावन की कोई शोभा है। खेल, खेल मे ही सभी ग्वालबाल अजगर के मुख

31

132

→ मे प्रवेश कर गये। ग्वालबालो को बचाने के लिए भगवान श्री कृष्ण अघासुर के मुख मे प्रवेश कर गये अघासुर के गले मे पहुँचकर भगवान ने अपने शरीर को इतना बड़ा कर लिया कि उसका गला ही रुँध गया। आँखे उलट गयी।

श्लोक - मूर्धन् विनिष्पात्य विनिर्गतो बहिः।

→ वह व्याकुल होकर बहुत ही छटपटाने लगा, सांस रुककर सारे शरीर मे भर गयी और अन्त मे उसके प्राण ब्रह्मरन्ध्र फोड़कर निकल गये। भगवान श्री कृष्ण सभी ग्वालबालो को साथ लेकर बाहर निकल आये।

शुकदेव जी कहते - परीक्षित !

श्लोक- राजन्नाजगरं चर्म शुष्कं वृन्दावनेऽद्भुतम्।

व्रजौकसां बहुतिथं बभूवाक्रीडगह्वरम् ॥

→ जब वृन्दावन मे अजगर का वह चाम सूख गया, तब वह व्रजवासियो के लिये बहुत दिनो तक खेलने की एक अद्भुत गुफा-सी बना रहा।

= बन्धुओ अघासुर पाप का प्रतीक है। भक्ति के मार्ग पर चलेगे तो कभी कभी पाप रुपी शत्रु भी हमे अपने मार्ग से भटकाने के लिये हृदय मे आकर बैठ जायेगा। यदि पाप के प्रभाव मे आकर हमने कोई गलत कार्य कर दिया तो, हमे अपने मार्ग से भटकते देर नही लगेगी।

→ कुछ लोग तो भजन की आड़ मे पाप कर्म करते है, यह विचार करके कि हमें कोई देख नही रहा है, तुम्हे कोई देखे न देखे किन्तु ईश्वर हर समय तुम्हे देख रहा है। इसलिये भजन की आड़ मे पाप नही करना चाहिये। यदि कोई साधक नाम जप के बल पर पाप करता है तो ये सबसे बड़ा अपराध है।

⇒ कन्हैया ने पाँच वर्ष की अवस्था मे अघासुर का उद्धार किया किन्तु ग्वालबालो ने इस लीला को एक वर्ष बाद अपने - अपने घरो मे सुनाया।

⇒ परीक्षित जी ने शुकदेव जी से पूछा - भगवन ! अघासुर वध की लीला को ग्वालबालो ने एकवर्ष बाद अपने घरो मे क्यो सुनाया ?

⇒ शुकदेव जी कहते- परीक्षित ! अघासुर का उद्धार करने के बाद कन्हैया सभी ग्वालबाल और बछड़ो को साथ लेकर यमुना पुलिन पर आ गये। ग्वालबालो ने कन्हैया से कहा कन्हैया हमे बहुत तेज से भूख लग रही है। कन्हैया ने कहा तो अपना - अपना कलेवा लेकर आ जाओ मिलबाँटकर पाते है।

⇒ सभी ग्वालबाल अपना - अपना कलेवा लेकर आते और कन्हैया के सामने रख देते, सभी ग्वालबालो के मध्य मे ठाकुर जी और किनारे, किनारे ग्वाबाल बैठ जाते। श्री कृष्ण के साथ बैठे हुए ग्वालबाल ऐसे शोभायमान हो रहे थे मानो कमल की कर्णिका के चारो ओर उसकी छोटी - बड़ी पंखुडियाँ सुशोभित हो रही हो।

श्लोक - बिभ्रद् वेणुं जठरपटयोः
श्रृंगवेत्रे च कक्षे
वामे पाणौ मसृणकवलं
तत्फलान्यङ्गुलीषु ।
तिष्ठन् मध्ये स्वपरिसुहृदो
हासयन् नर्मभिः स्वैः
स्वर्गे लोके मिषति बुभुजे
यज्ञभुग् बालकेलिः ॥

⇒ सखाओ के मध्य मे बैठे श्री कृष्ण की छटा सबसे निराली थी। कन्हैया ने मुरली को कमर की फैंट मे आगे की ओर खोंस लिया

⇒ सींगी और बेंत बगल मे दबा लिये, बाये हाथ मे बड़ा ही मधुर, घृतमिश्रित दही भात का ग्रास था, सभी सखाओ से अदरक, नीबू, मुरब्बे के अचार लेकर अंगुलियो मे दबा लिये। सभी सखा अपने-अपने घर से लाया हुआ कलेवा कन्हैया को पाने के लिये देने लगे।

⇒ एक सखा बोला - लाला मेरे घर की पकौड़ी तो देख कितनी सुन्दर है, एक सखा बोला कन्हैया मेरे घर की बेझड़ की रोटी पा कर देखो, कितनी बढ़िया है। उन्ही सखाओ के मध्य मे मधुमंगल जी भी बैठे थे जिनके पास कन्हैया को खिलाने के लिये कुछ भी नही था।

⇒ मधुमंगल जी पूरनमासी पुरोहितानी के बेटे है। घर मे इतनी गरीबी है, सवेरे खाय तो शाम के लिए कुछ नही रहता। इसलिये मैया यशोदा ने पूरनमासी पुरोहितानी से कहा कि अपने लाला मधुमंगल को आप मेरे घर छोड़ दो। कन्हैया के पास रहेगा, थोड़ी बहुत हमारी ठाकुर बाड़ी मे सेवा कर देगा, और दोनो समय भोजन यही पाता रहेगा।

⇒ आज सभी सखा कन्हैया को पाने के लिये कुछ न कुछ दे रहे किन्तु मधुमंगल के पास देने के लिये कुछ नही था, क्यो कि मधुमंगल जी तो यशोदा मैया के यहा पर ही दोनो समय भोजन पाते थे।

⇒ ग्वालमण्डली के बीच बैठे कन्हैया मधुमंगल से बोले, मधुमंगल नित्य तू हमारे घर का भोजन पाता है। आज तो हम तेरे घर का भोजन पायेगे।

⇒ मधुमंगल जी बोले लाला मेरे घर का भोजन करना है, दो मिनट विश्राम करो मै अभी आपके पाने के लिये कुछ लेकर आता हूँ।

⇒ मधुमंगल जी दौड़े-दौड़े घर गये और मैया से बोले मैया कन्हैया ने सभी ग्वालबालो के मध्य मे आज कहा है कि मै मधुमंगल के घर का भोजन करुगा, नही तो भोजन नही करुगा। कुछ रखा हो तो दो ना मैया, मैया बोली लाला तुझे तो पता है घर से कुछ नही है, और आज तो यजमान के घर से भी कुछ नही आया। लाला मटकी मे तीन दिन की बासी कढ़ी रखी है। तेरी

⇒ इच्छा हो तो ले जा। मधुमंगल जी खाली हाथ तो कन्हैया के सामने जा नहीं सकते थे, इसलिये कढ़ी की मटकी लेकर चल दिये। रास्ते में चलते-चलते मधुमंगल जी विचार करते हैं, कन्हैया तो माखन मिश्री पाता है और मैं लाला को तीन दिन की बासी खट्टी कढ़ी पवाने जा रहा हूं। नहीं-नहीं ये कढ़ी मैं कन्हैया को नहीं पवा सकता। मधुमंगल जी ने मुख मटकी से लगाया और गटक-गटक कर के कढ़ी स्वयं ही पी ली। इतने में कन्हैया पीछे से आकर बोले मधुमंगल तूने अकेले सारी कढ़ी पी ली, मुझे बिल्कुल भी नहीं दी। मधुमंगल जी बोले कन्हैया तुम ताजा-ताजा माखन और मिश्री खाने वाले, तुम्हे मैं ये खट्टी कढ़ी कैसे खिलाता, इसलिये मैं अकेले ही पी गया।

⇒ कन्हैया बोले मैंने तो पहले ही तुमसे कहा था आज मैं तुम्हारे घर का भोजन करूंगा, तुम मुझे अपने घर का भोजन नहीं पवाना चाहते कोई बात नहीं, मेरे पास और भी उपाय है, अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के, मधुमंगल ने जब कढ़ी को पिया था तो जल्दी-जल्दी मे आधी कढ़ी पेट में गयी और आधी मुंह पर लग गयी थी। कन्हैया ने अपनी जीभ निकाली और मधुमंगल का मुंह चाटना शुरू कर दिया। मधुमंगल के मुंह पर जितनी कढ़ी लगी थी ठाकुर जी ने सब जीभ से चाट ली। मधुमंगल के नेत्र सजल हो गये। कन्हैया को अंक मे भर लिया। मधुमंगल जी बोले कन्हैया तू कितना प्रेम करता है, हम सभी से, हमारे मुंह पर लगी कढ़ी को चाट गया।

⇒ बन्धुओ ये ग्वालबाल, व्रजवासी तो ठाकुर जी के प्राण है।

व्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्राण।
इन्हे तनक न बिसारियो, मोहे नंदबाबा की आन॥

ठाकुर जी तो प्रेम के भूखे है, अपने प्रेमियो की हर स्थिति को वो जानते हैं। प्रेम के वशीभूत होकर ठाकुर जी ने मधुमंगल के मुंह पर लगी कढ़ी को पाया। वृन्दावन जैसा ठाकुर आपको अन्यत्र कहीं

⇒ नही मिलेगा। जिस समय कन्हैया ग्वालबालो के मध्य बैठकर उनका झूठा भोजन पा रहे थे, उसी समय ब्रह्मा जी भगवान की लीला देखने के लिये आये।

⇒ ग्वालबालो का झूठा भोजन पाते देख ब्रह्मा जी मन मे विचार करने लगे ये कैसा भगवान है, ग्वालबालो का झूठा भोजन पा रहा है।

⇒ भगवान की परीक्षा लेने के लिये ब्रह्मा जी ने कन्हैया के साथ आये सभी ग्वालबाल और बछड़ो का हरण कर लिया और सभी को लेजाकर ब्रह्मलोक मे योगशय्या (मायारूपीशय्या) पर लिटा दिया। जंहा काल का असर नही होता। ब्रह्मा जी ने विचार किया, यदि ये भगवान होगे तो इस लीला से इन्हे कोई असर नही होगा, यदि भगवान नही है तो ग्वालबाल और बछड़ो के वियोग मे रोयेगे।

⇒ त्रेता युग मे मॉंता सती को राम जी के प्रति सन्देह हो गया।

चौ॰ संकरु जगतबंद्य जगदीसा।
सुर नर मुनि सब नावत सीसा॥

⇒ जिस समय भगवान नारायण राम का रूप धारण करके साधारण मनुष्य की भांति सीता जी की खोज कर रहे थे, उसी समय शंकर जी मांता सती के साथ उधर से निकले, राम जी को देखकर भगवान शिव ने प्रणाम किया। माता सती ने जब शंकर जी को राम जी को प्रणाम करते देखा तो मन मे बड़ा संदेह उत्पन्न हो गया। वे मन ही मन कहने लगी कि शंकर जी की सारा जगत वंदना करता है, वे जगत के ईश्वर है। इन्होने एक राजपुत्र को प्रणाम किया। मैया विचार करने लगी, जिन प्रभु का ज्ञानी, मुनि, योगी, और सिद्ध निरंतर निर्मल चित्त से ध्यान करते है। तथा वेद, पुराण, और शास्त्र नेति-नेति कहकर जिनकी कीर्ति गाते है, वो भगवान विष्णु अज्ञानी की तरह स्त्री को क्यो खोजेगे?

⇒ भगवान शंकर ने माता सती को बहुत समझाया किन्तु मैया को समझ नही आया। अन्त मे शंकर जी ने कहा देवी –

चौ० (1) जैसे जाइ मोह भ्रम भारी।
करेहु सो जतनु विवेक बिचारी॥

(2) जौ तुम्हरे मन अति सन्देहु।
तौ किन जाइ परीछा लेहु॥

⇒ तुम्हारा सन्देह जिस प्रकार दूर हो, विवेक के द्वारा सोच - समझकर तुम वही करना, माता सती, सीता का रूप धारण करके राम जी की परीछा लेने गई, राम जी ने मैया को पहचान लिया, राघव ने माता को प्रणाम करके पूछा शिव जी कहाँ है?

⇒ शंकर जी के बार-बार मना करने पर भी माता सती ने राम जी की परीक्षा ली और परिणाम यह हुआ कि भगवान शंकर ने उन्हे त्याग दिया।

चौ० एहि तन सतिहि भेट मोहि नाही।
सिव संकल्पु कीन्ह मन माही॥

⇒ द्वापरयुग की लाला मे ब्रह्मा जी को भगवान श्री कृष्ण के प्रति सन्देह हो गया। जब ब्रह्मा जी ग्वाल-बालो और बछड़ो का हरण करके ब्रह्म लोक चले गये तब ठाकुर जी ब्रह्मा जी सारी करतूत जान गये। भगवाने श्री कृष्ण ने बछड़ो और ग्वालबालो की माताओ को तथा ब्रह्मा जी को भी आनन्दित करने के लिये अपने आप को ही बछड़ो और ग्वालबालो दोनो के रूप मे बना लिया।

श्लोक- यावद् वत्सपवत्सकाल्पकवपु, र्यावत् कराङ्घ्रयादिकं
यावद् यष्टिविषाणवेणुदलशिग्, यावद् विभूषाम्बरम्।
यावच्छील गुणाभिधाकृतिवयो, यावद् विहारादिकं
सर्वं विष्णुमयं गिरोऽङ्ग वदजः, सर्वस्वरूपो बभौ॥

⇒ जितने बछड़ो को ब्रह्मा ने चुराया था, बिल्कुल वही बछड़े श्री कृष्ण ने अपने शरीर से प्रकट कर दिये। जितने ग्वाल-बाल ब्रह्मा ने चुराये थे उतने ही वही ग्वाल-बाल श्री कृष्ण ने अपने शरीर से प्रकट कर दिये। जिसकी जैसी आकृति है, जैसा शील है, जैसा स्वभाव है, वैसा ही ठाकुर जी ने बना दिया।

⇒ नित्यप्रति भगवान बछड़े चराने जाते, नित्यप्रति लौट करके आते है। हर वृजवासी के घर मे ठाकुर जी ग्वालबाल, बछड़ा बनकर आनन्द प्रदान कर रहे है।

⇒ बन्धुओ जिन गाऊमाता के बछड़ा बनकर कन्हैया उन्हे आनन्द प्रदान कर रहे थे, उन गाऊमाता ने कन्हैया से प्राथना की थी कि हे गोविन्द जिस प्रकार आप यशोदा के पुत्रबनकर इनका दुग्धपान कर रहे है. उसी प्रकार कभी मेरे बछड़े बनकर दुग्धपान करना, गाऊमाता की अभिलाषा को पूर्ण करने के लिये, ठाकुर जी गाऊमाता के बछड़ा बनकर आये।

⇒ आपके मन मे प्रश्न उठ रहा होगा कि गोपियों के घरो मे कृष्ण ग्वालबाल बनकर क्यो आये? वृन्दावन के रसिक सन्त कहते एक दिन की बात मैया यशोदा के आंगन मे ठाकुर जी नृत्य कर रहे थे।

:: भजन ::

नॉंचे नन्दलाल, नचावे हरि की मईया।
नचावे हरि की मईया, नचावे हरि की मईया
नाचे नन्दलाल - - -

① शाल न ओढे लाला, दुशाला न ओढे
काली कमरिया को बड़ो रे ओढैईया
नाचे नन्दलाल, नचावे हरि की मईया - - -

② दूध न पीवे लाला, दही न खावे
माखन-मिसरी को, बड़ो रे ओढैईया
नाचे नन्दलाल - - - - -

(3) टोपी न पहने लाला, फेटा न बाँधे
मोर-मुकुट को बड़ो रे पहनईयाँ
नाचे नन्दलाल - - - - - -

⇒ नृत्य करते हुये भगवान को देखकर गोपियो ने अपने मनमेविचार किया, कितनी भाग्यवती है माँ यशोदा जैसे इनके पुत्र बनकर इन्हे सुख प्रदान करते है। कभी हमारे पुत्र बनकर हमे भी, ये सुख प्रदान करेंगे क्या? उन गोपियों की आकांक्षा की पूर्ति के लिये ठाकुर जी ग्वालबाल बनकर आँज गोपियो के घरो मे आये।

⇒ ठाकुर जी "सर्वं विष्णुमयं जगत्" को सत्य करने के लिये "एको अहं बहुस्याम:" एक से अनेक हो गये।

इसी बात को पूज्यपाद गोस्वामी जी अपनी भाषा मे लिखते है।

चौ० हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम ते प्रगट होय मैं जाना॥

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥

⇒ सम्पूर्ण जगत भगवान विष्णु से युक्त है, सम्पूर्ण संसार मे नारायण का निवास है, इसी वाक्य को सत्य करने के लिये ग्वालबाल, बछड़े, छड़ियाँ, सिंगी, बाँसुरी पत्ते छीके सबकुछ भगवान बन गये।

⇒ भगवान बछड़े, ग्वालबाल बनकर के वृन्दावन मे गऊमाता और गोपियो को आनन्द प्रदान कर रहे है। इधर ब्रह्मा जी ने विचार किया कन्हैया के बछड़े और सखाओ को तो मैने माया रुपी शय्या पर सुला दिया, अब वृन्दावन मे चलकर देखता हू क्या हो रहा है। जब पुन: ब्रह्मा जी भगवान की लीला देखने आये तो भगवान ने कहा ब्रह्मा जी मैं आपको अपनी लीला दिखा ही देता हू।

⇒ वृन्दावन आकर ब्रह्मा जी देखते है कि उन्होने जितने ग्वालबाल और बछड़ो का हरण किया था ठीक उतने ही ग्वालबाल और बछड़े कन्हैया के साथ क्रीड़ा कर रहे है। बछड़े हरी हरी घास चर रहे है और ग्वालबाल कन्हैया के साथ खेल रहे है। यह देखकर ब्रह्मा जी आश्चर्यचकित रह गये।

⇒ ब्रह्मा जी मन मे विचार करने लगे इन ग्वालबाल और बछड़ो को तो मै मायारूपी शय्या पर सुला-कर आया हूँ, ये अपने आप यहा चलकर कैसे आगये। सच का पता लगाने के लिये ब्रह्मा जी पुनः ब्रह्मलोक गये तो देखते है। ग्वालबाल और बछड़े तो मायारुपी शय्या पर सो रहे है। पुनः वृन्दावन आकर देखते है उतने ही ग्वालबाल भगवान के साथ क्रीड़ा कर रहे है।

⇒ ब्रह्मा जी भगवान की परीक्षा लेने आये थे। भगवान ने ब्रह्मा जी की ऐसी परीक्षा ली ब्रह्मा जी चक्कर मे पड़ गये। दोनो स्थानो पर ग्वालबाल और बछड़ो को देखकर ब्रह्मा जी चक्कर मे पड़ गये।

श्लोक - एवमेतेषु भेदेषु चिरं ध्यात्वा स आत्मभूः।
सत्याः के कतरे नेति ज्ञातुं नेष्टे कथंचन ॥

दोनो स्थानो पर ग्वालबाल और बछड़ो को देखकर ब्रह्मा जी समझ नही पाये कि इन दोनो मे कौन से पहले के ग्वालबाल है और कौन से पीछे बना लिये गये है। इनमे कौन सच्चे है और कौन बनावटी - यह बात वे किसी प्रकार न समझ सके। ब्रह्मा जी उदास होकर ब्रह्मलोक लौट गये तब तक भगवान ने दूसरे ब्रह्मा बनाकर ब्रह्मा जी के पद पर बैठा दिये। ब्रह्मा जी ने देखा उनकी गद्दी पर दूसरे ब्रह्मा बैठे हुये है। ब्रह्मा जी विचार करने लगे क्या ब्रह्मा भी दो होते है? जबतक ब्रह्मा जी क्रुद्ध करते तब तक अन्दर से आवाज

⇒ आई आजकल नकली ब्रह्मा बहुत घूम रहे है कोई न नकली ब्रह्मा दिखाई दे तुरन्त पकड़कर ले आना। सैनिक इधर-उधर घूम रहे थे। तब तक असली ब्रह्मा जी उन्हे दिखाई पड़ गये। सैनिक उन्हे पकड़ ले गये। ब्रह्मा जी के पद पर विराजित ब्रह्मा जी ने कहा ले जाओ इन्हे और जंहा पर नकली ब्रह्मा बन्द है वही पर इन्हें बन्द कर दो अब तो ब्रह्मा जी चक्कर मे पड़ गये।

⇒ अपने जैसे अनेक ब्रह्मा देखकर ब्रह्मा जी चक्कर मे पड़ गये और नेत्र बन्द करके भगवान की स्तुति करने लगे।

श्लोक- नौमीड्य तेऽभ्रवपुषे तडिदम्बराय
गुंजावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय ।
वन्यस्रजे कवलवेत्र विषाणवेणु-
लक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय ॥

⇒ ब्रह्मा जी कहते हे प्रभो। आपकी माया बड़ी विलक्षण है। हे! पशुपाङ्गज मै आपके चरणो मे प्रणाम करता हूं। आप मेरे ऊपर कृपा करो, मुझे क्षमा करो। मैने अपराध किया-

श्लोक- उत्क्षेपणं गर्भगतस्य पादयोः
किं कल्पते मातुरधोक्षजागसे ।
किमस्तिनास्ति व्यपदेशभूषितं
तवास्ति कुक्षेः कियदप्यनन्तः ॥

⇒ अगर मुझसे अपराध होई गया तो हे प्रभो आप मुझे उसी प्रकार क्षमा कर दो जैसे गर्भ के बालक के अपराध को माँ क्षमा कर देती है। पेट के अन्दर बच्चा हो, बच्चा अपनी लात चलाते, हाथ चलावे, तो चोट किसको लगेगी माँ को लगेगी। लेकिन

⇒ माँ उसे अपराध नही मानती है। ब्रह्माजी कहते हम भी तो आपके गर्भ मे ही है। आपसे बाहर क्या? सारी सृष्टि आपके अन्दर है। अगर मुझसे कुछ अपराध हुआ तो गर्भस्थ शिशु को माँ जिस प्रकार क्षमा करती है उसी प्रकार आप हमे भी क्षमा करो। क्यो कि आप पिता ही नही, आप माँ भी हो। "त्वमेव माता च पिता त्वमेव" ब्रह्मा जी ने बड़ी सुन्दर स्तुति की फिर तो भगवान प्रसन्न हो गये। भगवानने तुरंत अपनी माया का परदा हटा दिया।

⇒ ब्रह्मा जी ने सभी ग्वालबालो को मुक्त कर दिया और भगवान नारायण की परिक्रमा करने लगे।

श्लोक - इत्यभिष्टूय भूमानं त्रिः परिक्रम्य पादयोः ।

नत्वाभीष्टं जगद्धाता स्वधाम प्रत्यपद्यत ॥

⇒ ब्रह्मा जी ने नारायण की तीन परिक्रमा की और प्रणाम करके चले गये। वैसे तो नारायण की चार परिक्रमा की जाती है। किस देवता की कितनी परिक्रमा करनी चाहिये ये हमारे शास्त्रो मे बताया गया है।

(1) नारायण - 4 परिक्रमा
(2) दुर्गा - 1 परिक्रमा
(3) सूर्य - 7 परिक्रमा
(4) गणेश - 3 परिक्रमा
(5) शंकर - अर्द्ध (आधी) परिक्रमा करनी चाहिये।

⇒ 40 श्लोको मे ब्रह्मा जी ने नारायण की स्तुति की फिर भी भगवान ब्रह्मा जी की स्तुति से प्रसन्न नही हुए पूर्णरूपेण, जब थोड़ा सा क्रोध भगवान का शान्त हुआ, तो ब्रह्माजी विचार करने लगे अभी मौका अच्छा है। तुरन्त यहा से निकल जाना चाहिये इसलिये जल्दी- जल्दी मे तीन परिक्रमा

⇒ करके, भगवान को प्रणाम करके चले गये। ग्वालबाल और बछड़े जहा ठाकुर जी के साथ क्रीडा कर रहे थे। पुनः ब्रह्मलोक से वही पहुच गये, जो तिथि, समय, अवसर वनभोज के समय था भगवान ने अपनी माया के द्वारा पुनः कर दिया।

⇒ ग्वालबालो को कुछ भी पता नही चला कि उनके साथ क्या हुआ? उन्हे ऐसा प्रतीत हुआ मानो सुबह वन आये थे और शाम को घर जा रहे है।

⇒ आप विचार कर रहे होगे, एक वर्षबाद भी ग्वालबालो को एकवर्ष पूर्व जैसा कैसे अनुभव हुआ? भगवान की माया द्वारा सब सम्भव है। जैसे आप रात्रि मे जब सोते है तो आधे घण्टे मे स्वप्न मे कहा-कहा घूम लेते है और जब नेत्र खुलते है तो कुछ नही जहा थे वही होते है। इसीप्रकार भगवान की माया के प्रभाव से ग्वालबालो को भी यही लगा कि आज सुबह कन्हैया के साथ वन भोज के लिये आये थे और शाम को अपने घर जा रहे है।

⇒ शुकदेव जी कहते- परीक्षित! तुमने पूछा था कि अघासुर वध की लीला को ग्वालबालो ने एक वर्ष बाद अपने घरो मे क्यो सुनाया? तो मैंने तुम्हे सारी कथा विस्तार से सुना दी। एक वर्ष तक सभी ग्वालबाल ब्रह्मलोक मे योगशय्या पर सोते रहे जब एकवर्षबाद मुक्त होकर अपने घरो मे गये तब अघासुर वध की कथा अपने-अपने घरो मे सुनाई।

⇒ श्री शुकदेव जी कहते - परीक्षित ! राम और श्याम अब थोड़े बड़े हो गये। उन्होने पौगण्ड अवस्था मे अर्थात छठे वर्ष मे प्रवेश किया। एक दिन कन्हैया मैया से बोले मैया मै कब तक बछड़े चराने जाऊगा अब तो मै बड़ा हो गया हू, मुझे गौ चारण करने जाना है। मैया बोली लाला तू प्रथम बार गौ चारण के लिये जायेगा, इसलिये पण्डित जी से मुहूर्त निकलवाना पड़ेगा।

⇒ पण्डित जी ने कार्तिक मास शुक्लपक्ष, अष्टमी तिथि निश्चित की गौ-चारण के लिये, आँज प्रथम बार कन्हैया दाऊ दादा और ग्वालबालो के साथ गौ चारण के लिये वन जा रहे है।

श्लोक - ततश्च पौगण्ड वयः श्रितौ व्रजे
बभूवतुस्तौ पशुपाल सम्मतौ ।
गाश्चारयन्तौ सखिभिः समं पदै -
र्वृन्दावनं पुण्यमतीव चक्रतुः ॥

⇒ मैया ने लाला का श्रृंगार किया, इसके बाद राम और श्याम से आँज प्रथम बार गौ माँता का पूजन कराया। जब हमे अपने बच्चो से गौ सेवा करानी हो तो पहले गौ माँता का पूजन कराना चाहिये, इसके बाद गौ सेवा करानी चाहिये।

⇒ जिस गौ माँता मे त्रयत्रिंशत् कोटि देवता विराजमान है। वह गौ माँता साक्षात धरती माँता है। जब जब भक्तो पर कष्ट पड़ता है, तब-तब पृथ्वी माँता ही गाय का रुप धारण करके भगवान से हमारे दुःखो को दूर करने की प्रार्थना करती है। पृथ्वी माँता कोई और नही, गौ माँता ही पृथ्वी माँता है। आँज यह कहते हुये बड़ा दुःख हो रहा है कि इस कलियुग मे गौ माँता की बड़ी दुर्दशा हो रही है। जिस देश, राज्य, मण्डल, जिला, नगर, ग्राम, घर मे गाय माँता दुःखी हो वहा भगवान

⇒ की कृपा कभी नही हो सकती है। जब हनुमान जी माँता सीता का पता लगाने लंका गये। तब हनुमान जी की भेट विभीषण से हुई, विभीषण जी ने हनुमान जी से पूछा - मै जप, तप, पूजा, पाठ, यज्ञ, सब करता हू. फिर भी मुझे शान्ति क्यो नही मिलती?

⇒ तब हनुमान जी ने कहा विभीषण जहाँ साक्षात गौ माँता अशोक वाटिका मे अशोक वृक्ष के नीचे बैठकर दुःख को प्राप्त कर रही हो, वहा शान्ति कैसे होगी।

⇒ सीता जी पृथ्वी की बेटी है। पृथ्वी माँता साक्षात गौ माँता है। इसलिये पृथ्वी की बेटी होने के कारण सीता जी भी गौं माँता है। जिस देश मे गाय सुखी है, वह देश सुखी है।

:: भजन ::

राम कृष्ण की प्यारी गैया
सारे जग की माँता है
धर्म, अर्थ, और काम, मोक्ष की
दाता भाग्यविधाता है।

(1) नन्दगाँव, गोकुल, बरसाना, गाऊ से शोभा पाता है।
भारत की शोभा गायो से, गाऊ ही भारत माँता है॥
(2) रोम-रोम मे बसे देवता, ऋषि मुनि हरि शिव धाता है।
गंगा मूत्र - लक्ष्मी गोमय, पंचगव्य सुखदाता है॥
(3) दूध, दही, घृत मक्खन से ही, सब जग पोषण पाता है।
विधवा सी धरती बंजर है, गोमय खाद न पाता है॥
(4) अन्न नही, जलवायु नही, धन धर्म नही, संस्कार नही।
गाय बचेगी देश बचेगा, गाय बिना सब जाता है।
(4) हिन्दू नही, न देश हिन्द है जंहा नही गोमाता है।
गायें सुखी तो देश सुखी है, गाय बिना दुःख पाता है।

⇒ भगवान राम, कृष्ण ने भी इस धरती पर आकर के गौ माता की सेवा की, राजा दिलीप को गौ माता की सेवा से ही सन्तान की प्राप्ति हुई

⇒ आज भी इस कलियुग मे कोई व्यक्ति पूर्ण निष्ठा के साथ गौ सेवा कर ले, उसके मन की इच्छा गौ माता अवश्य पूर्ण करती है। हमारे यहाँ पहले ये नियम था कि पहली रोटी गौ माता के लिये निकाली जायेगी। किन्तु धीरे-धीरे यह परंपराए भी समाप्त होती जा रही है।

⇒ गाय के नष्ट होने से, ब्राह्मण नष्ट हो जायेगा। जिन वेद मन्त्रो का उच्चारण करके ब्राह्मण यज्ञ कराता है। उस यज्ञ मे, गौ के दुग्ध, दही, घृत मूत्र, गोबर की आवश्यकता पड़ती है। जब गाय माता ही सुरक्षित नही रहेगी, तो दुग्ध, दही, घृत मूत्र, गोबर कहा से प्राप्त होगा?

⇒ ब्राह्मण का आचार, विचार, खान, पान यदि गड़बड़ हुआ तो ब्राह्मण नष्ट हो जायेगा। हम 143 करोण भारतीय है। जिसमे 8 करोण ब्राह्मण है। ब्राह्मण के नष्ट होने से क्षत्रिय नष्ट हो जायेगा। क्षत्रिय का कर्म है, रक्षा करना, युद्ध करना। किन्तु आजकल लोग कहते है क्षत्रिय को मांस खाना चाहिए, मदिरा पीनी चाहिए।

⇒ पितामह भीष्म युधिष्ठिर जी से कहते है! युधिष्ठिर मांस खाने वाले की कभी सदगति नही होती। क्षत्रिय के लिये लिये शिकार का वर्णन है। मांस खाने का नही। युद्धाभ्यास करने के लिये शिकार आवश्यक है। ये युद्ध सीखने की सर्वोच्च कला है जिसे मृगया कहा जाता था। लेकिन इस विधि से व्यसन नही करना चाहिये।

⇒ ब्राह्मण और क्षत्रिय यदि नष्ट हुये तो, वैश्य और शूद्र तो इनके पीछे चलते है, वह भी नष्ट हो जायेगे। आज ब्राह्मण और क्षत्रिय को संगठित होने की आवश्यकता है। ब्राह्मण और क्षत्रिय एक होते तो ये देश कभी परतन्त्र नही होता।

⇒ "गावो विश्वस्य मातरः" जो गौ माता सम्पूर्ण विश्व की माता है। उनके मांस को खाकर के जड़ बुद्धि मनुष्य अपने शरीर को हृष्ट, पुष्ट (तगड़ा) करना चाहता है। परमात्मा ने

जब शरीर को हृष्ट, पुष्ट करने के लिये दूध, दही, घी, हरी साब्जियाँ, दालें बनायी हैं, फिर मांस खाने की क्या आवश्यकता? सबसे अधिक कैंसर, गुर्दे के रोग मांस खाने वालो को होते है।

⇒ भगवान राम, भगवान कृष्ण ने भी इस धरती पर आकर शाकाहारी बनने का सन्देश दिया फिर भी आज का जड़बुद्धि मनुष्य मांस खाकर के हृष्ट, पुष्ट बनना चाहता है। जिनघरो मे सुबह, शाम मांस पकाकर के खाया जाता हो उन घरो मे ठाकुर जी कभी भोग नही लगाते। जिन बर्तनो मे एकबार मांस पक गया वह बर्तन वैष्णवो के भोजन पकाने योग्य नही रह जाते।

⇒ (1) चौदह बरसो तक खूँखारी
वन मे जिसका धाम था।
मन मन्दिर मे बसने वाला
शाकाहारी राम था॥
चाहते तो खा सकते थे वो
मांस पशु के ढ़ेरो मे।
लेकिन उनको प्यार मिला
शबरी के झूठे बेरो मे॥

(2) चक्र सुदर्शन धारी थे
गोवर्धन पर भारी थे।
मुरली से वश करने वाले
गिरधर शाकाहारी थे॥

पर सेवा पर प्रेम का परचम
चोटी पर फहराया था।
निर्धन की कुटिया मे जाकर
जिसने मान बढ़ाया था॥

(3) अंग लाश के खा जाये
क्या फिर भी वो इन्सान है।
पेट तुम्हारा मुर्दाघर है
या कोई कब्रिस्तान है॥

आँखे कितना रोती है जब
अंगुली अपनी जलती है।
सोचो उस तड़पन की हद जब
जिस्म पर आरी चलती है॥
बेबसता तुम पशु की देखो
बचने के आसार नही।
जीते जी तन काटा जाए
उस पीड़ा का पार नही॥

⇒ जो मनुष्य स्वयं तो मांस नही खाता, परन्तु खाने वाले का अनुमोदन करता है, वह भी भाव दोष के कारण मांस भक्षण के पाप का भागी होता है। इसी प्रकार जो मारने वाले का अनुमोदन करता है, वह भी हिंसा के दोष से लिप्त होता होता है।

⇒ जो मांस लोभी मूर्ख एवं अधम मनुष्य होता है और यज्ञ त्याग आदि वैदिक मार्गो के नाम पर प्राणियों की हिंसा करता है, वह नरक भोगने का हकदार है।

⇒ एक दिन भगवान ग्वालबालो और दाऊदादा के साथ तालवन के पास मे गैया चरा रहे थे। तभी तालवन मे रहने वाला धेनुक नाम का असुर भगवान को मारने के लिये आया। कन्हैया ने गधे का रुप धारण किये धेनुक नामक असुर को पहचान लिया और दाऊ दादा को इशारा किया।

⇒ धेनुक ने क्रोध से भरकर अपने पिछले पैरो की दुलत्ती चलाकर बलराम जी के ऊपर प्रहार किया, बलराम जी ने अपने एक ही हाथ से उसके दोनो पैर पकड़ लिये और उसे आकाश मे घुमाकर एक ताड़ के पेड़ पर दे मारा।

श्लोक- स तं गृहीत्वा प्रपदोर्भ्रामयित्वैक पाणिना।
चिक्षेप तृणराजाग्रे भ्रामणत्यक्त जीवितम् ॥

→ घुमाते समय ही उस गधे के प्राणपखेरू उड़ गये। बलराम जी के द्वारा धेनुक नामक असुर का उद्धार हो गया।

⇒ धेनुक असुर का उद्धार करने के बाद जब राम और श्याम गौ माँताओ के पास आये तो देखा गौ माँता घास चरते - चरते बहुत दूर चली गयी है। कन्हैया ने अपनी मुरली का निनाद किया, मुरली की धुन सुनकर सभी गौमाँता पुनः भगवान के पास आ जाती है।

⇒ जब मनुष्य की इन्द्रिय रुपी गैया वासना रुपी घास चरते हुए बहुत दूर निकल जाती है, अपने मार्ग से भटक जाती है तब भगवान अपनी मुरली का निनाद करके इन्द्रिय रुपी गाय को अपने पास खींच लाते है।

⇒ गौचारण करके भगवान जब घर आये शाम को तो गौ के खुरो से जो धूल उड़ रही थी, वह व्रज रज भगवान के सम्पूर्ण शरीर पर लग गयी। भगवान के इस स्वरूप को देखकर गोपियां आनन्दित हो रही है। भगवान के इसी स्वरुप का वर्णन वल्लभाचार्य जी ने 'मधुराष्टकम्' मे किया है।

(1) अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरं
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरं

⇒ घर आकर कन्हैया ने यशोदा मैया से कहा मैया आँज दाऊ दादा ने एक गधा मार दिया, मैया जोर से हँसने लगी। दाऊ दादा को कन्हैया पर क्रोध आ गया, दादा बोले कन्हैया तूने इतने सारे असुर मारे मैने कुछ नही कहा, आँज मैने एक गधा मार दिया तो मेरी हँसी कर रहा है। आँज से मै तेरे साथ गौचारण के लिये वन नही जाऊगा।

⇒ दाऊ दादा की बात सुनकर कन्हैया मुस्कुराये कन्हैया ने मन मे विचार किया कुछ कार्य अभी ऐसे करने है जो मै दाऊ दादा के सामने नही कर सकता इसलिये कुछ दिनो तक मुझे आपसे अलग ही रहना पड़ेगा।

⇒ एक दिन कन्हैया ने विचार किया -

श्लोक- विलोक्य दूषितां कृष्णां
कृष्णः कृष्णाहिना विभुः ।
तस्या विशुद्धिमन्विच्छन्
सर्पं तमुदवासयत् ॥

⇒ महाविषधर कालिय नाग ने यमुना जी का जल विषैला कर दिया है, इसलिये शीघ्र ही मुझे उस सर्प को यमुना जी से निकालना पड़ेगा। इसलिए भगवान आँज सभी ग्वालबालो को लेकर यमुना जी के तट पर गेंद खेलने आये। श्री दामा जी रेशम की गेंद लेकर के आये और सभी ग्वालबाल मिलकर के गेंद खेलने लगे।

:: भजन ::

काली देह पर खेलन आयो री
मेरो वारो सो कन्हैया
मेरो वारो सो कन्हैया
मेरो छोटो सो कन्हैया
काली देह पर खेलन - -

(1) काहे की पट गेंद बनाई
काहे को डंडा लायो री
मेरो बारो सो कन्हैया
काली देह पे खेलन — — — — — —

(2) रेशम की पट गेंद बनाई
चन्दन को डंडा लायो री
मेरो बारो सो कन्हैया
काली देह पे — — — — —

⇒ खेलते-खेलते गेंद भगवान् ने यमुना जी मे फेंक दी। श्रीदामा जी बोले कन्हैया मुझे मेरी गेंद लाकर के दो। भगवान बोले श्रीदामा घर चलो मै तुम्हे नई गेंद दे दूगा। श्री दामा जी मचल गये, कन्हैया मुझे अपनी गेंद चाहिये, मुझे नई गेंद नही चाहिये। कन्हैया बोले देख, श्री दामा अगर तुझे अपनी वाली ही गेंद चाहिये तो मुझे तेरी गेंद लाने के लिये यमुना जी मे कूदना पड़ेगा। श्री दामा जी बोले तो कूद जाओ यमुना जी मे, किन्तु हमे हमारी गेंद लाकर के दो।

⇒ भगवान तो ये चाँहते ही थे, कि श्री दामा मचल जाये और मै इसकी गेंद लाने के बहाने यमुना जी मे कूद जाऊ। कन्हैया ने अपनी कमर का फेंटा कसकर, कदम्ब के वृक्ष पर चढ़कर यमुना जी मे छलांगे लगा दी।

⇒ जब ग्वालबालो ने देखा कि कन्हैया यमुना मे कूद गया, उसमे तो एक सौ एक फन वाला कालिय नाग रहता है, तब सभी ग्वालबाल रोने लगे। मैया यशोदा और नन्दबाबा को पता चला सभी बृजवासियो के साथ वह दौड़े-दौड़े यमुना के तट पर आये। सभी कन्हैया की याद करके रोने लगे। दाऊ दादा सभी को समझाते है।
भगवान् जब यमुना मे कूदकर गहरे जल मे पंहुचे तो कालिय नाग की पत्नियो ने देखा

कोई सुन्दर सा बालक चला आ रहा है। कालिय नाग की पत्नियो ने कन्हैया से कहा कौन हो तुम, और इतने विषैले जल मे प्रवेश करके यँहा तक कैसे चले आये ? जानते नही हो यँहा एक सौ एक फनो वाले हमारे स्वामी रहते है, अगर जीवित रहना चाहते हो तो शीघ्र यँहा से चले जाओ। अगर मेरे स्वामी जग गये तो तुम्हे जीवित नही छोड़ेगे।

⇒ कन्हैया ने नागपत्नियो से कहा तुम्हारे पति के तो एक सौ एक फन है, और मै एक हजार फन वाले नाग की शय्या बनाकर के सोता हूं। इतने मे कालिय नाग जाग गया और क्रोध से नेत्र लाल करके कन्हैया को अपनी पूछ मे जकड़ लिया।

⇒ भगवान श्री कृष्ण ने अपने शरीर को फुलाकर इतना मोटा कर लिया, कि कालिय नाग का शरीर टूटने लगा। वह अपना नागपाश छोड़कर अलग खड़ा हो गया। और क्रोध से आग बबूला हो अपने फणो को ऊँचा करके फुफकारे मारने लगा। अवसर मिलते ही भगवान कूदकर कालियनाग के फणो पर चढ गये और नृत्य - गान आदि समस्त कलाओ के आदि प्रवर्तक भगवान श्री कृष्ण उसके सिरो पर कलापूर्ण नृत्य करने लगे।

तांण्डव गति मुंण्डन पर नृत्यत बनवारी - 2

① पम् पम् पम् पग पटकत, फम् फम् फम् फननिपर।
थिम् थिम् थिम् विनति करत, नागवधू हारी ॥
तांण्डव गति मुंण्डन पर — — — — —

② ससिक, ससिक, सनकादिक, नं, नं, नं नारद मुनि
मम, मम, मम महादेव, वं, वं, वं बलिहारी
तांण्डव गति —

③ सूरदास प्रभु की वाणी किं, किं, किनहु न जानी
धन, धन, धन चरण परस, निर्भय भये हारी ॥
तांण्डव गति — — — — —

तांण्डव गति मुंडन पर
निरतत बनवारी।

① थै, थै ता तमकि तमकि
चपला सम चमकि, चमकि
नागा शीश ठुमकि ठुमकि
करतल दै तारी ॥

तांण्डव गति — — —

② पदतल सो धमधमात
पैंजनियाँ खनखनात।
पीतवसन फरफरात
धिकतान धिकतारी ॥

तांण्डव गति — — —

③ कालिय मुख गरल धूम
नभ तक ज्यो उठी झूम
निकसत मुख हूम हूम
कपटी गति हारी

तांण्डवगति — — —

श्लोक- तं नर्तुमुद्यतमवेक्ष्य तदा तदीय-
गन्धर्वसिद्धसुरचारण देववध्वः
प्रीत्या मृदंग पणवानक वाद्यगीत-
पुष्पोपहारनुतिभिः सहसोपसेदुः

⇒ देव, गन्धर्व, सिद्ध, चारण और देवांगनाओ ने जब देखा कि भगवान नृत्य कर रहे हैं तब वे बड़े प्रेम से मृदंग, ढोल नगारे आदि बजाकर गीत गाने लगे। देवता नभ से पुष्पो की वर्षा करने लगे।

⇒ कालिय नाग अपने जिस सिर को ऊपर उठाता उसी को नाचते हुए भगवान् श्री कृष्ण अपने चरणों की ठोकर से झुकाकर रौंद डालते। कालिय नाग के फणरूप छत्ते छिन्न, भिन्न हो गये। उसका एक-एक अंग चूर-चूर हो गया, और मुंह से खून की उलटी होने लगी।

⇒ अपने पति की यह दशा देखकर उसकी पत्नियां भगवान की शरण मे आयी। नागपत्नियाँ अपने बालको को आगे करके पृथ्वी पर लोट गयी, हाथ जोड़कर सभी ने भगवान से प्रार्थना की।

श्लोक - न्याय्यो हि दण्डः कृतकिल्बिषेऽस्मिं

स्तवावतारः खलनिग्रहाय ।

रिपोः सुतानामपि तुल्यदृष्टे -

र्धत्से दमं फलमेवानुशंसन् ॥

⇒ नागपत्नियां कहती - हे! प्रभो आपका अवतार दुष्टो को दण्ड देने के लिये हुआ है। इसलिये इस अपराधी को दण्ड देना सर्वथा उचित है। आपकी दृष्टि मे शत्रु और पुत्र का कोई भेदभाव नही है। इसलिये आप जो किसी को दण्ड देते है, वह उसके पापो का प्रायश्चित्त कराने और उसका परम कल्याण करने के लिये होता है।

⇒ नाग पत्नियाँ कहती - प्रभो! मुझे नही पता कि हमारे स्वामी की आज कौन सी साधना का फल उन्हे प्राप्त हुआ, जो आपके चरणो की रज उन्हे प्राप्त प्राप्त हो गई। जिस चरण रज को पाने के लिये स्वयं माता लक्ष्मी को भी बहुत दिनो तक समस्त भोगो का त्याग करके तपस्या करनी पड़ी थी। वही चरण रज हमारे स्वामी को आज प्राप्त हो गई।

श्लोक- न नाकपृष्ठं न च सार्वभौमं
न पारमेष्ठ्यं न रसाधिपत्यम् ।
न योगसिद्धीर पुनर्भवं वा
वाञ्छन्ति यत्पादरजः प्रपन्नाः ॥

⇒ हे! प्रभो जिसे आपके चरणो की धूल प्राप्त हो जाती है। वह स्वर्ग का राज्य, पृथ्वी की बादशाही, रसातल का राज्य, ब्रह्मा का पद कुछ भी नही चाहता। उसे अणिमादि योग - सिद्धियो की भी चाह नही होती है।

⇒ हे! प्रभो मेरे स्वामी मूढ, जड़ बुद्धि होने के कारण आपको पहचान न सके। इसलिये इन्हे क्षमा कर दीजिये। नाग पत्नियो की स्तुति को सुनकर भगवान कालिय नाग के फणो से कूद कर नीचे आ गये।

⇒ भगवान ने जैसे ही कालिय नाग को छोड़ा वह पुनः भगवान की ओर फण करके फुफकारे मारने लगा। भगवान नागपत्नियो से बोले तुम कह रही हो हमारे पति को छोड़ दो. और यह हम पर फुफकारे छोड़ रहा है। नागपत्नियो ने तुरन्त अपने पति से कहा - स्वामी अपने फणो को नीचे करके समर्पण कर दीजिये नही तो जो आपके प्राण शेष रह गये है, वह भी निकल जायेगे। भगवान से क्षमा मांग लीजिये।

⇒ कालिय नाग बोला मै इनसे क्षमा क्यो माँगू ? मैने क्या अपराध किया है ?

⇒ भगवान बोले तूने विष वमन करके पूरे वातावरण को खराब कर दिया है। यमुना जल को विषयुक्त कर दिया है। जो भी इस जल को पीता है, उसकी मृत्यु हो जाती है।

⇒ कालिय नाग बोला- प्रभो! आप ये बताओ इस सृष्टि को किसने बनाया ?

⇒ भगवान बोले हमने

155

156

⇒ सर्पों को किसने बनाया?
⇒ भगवान बोले हमने।
⇒ विष और तामसी प्रवृत्ति किसने दी?
⇒ भगवान बोले हमने।

⇒ कालिय बोला - प्रभो!

श्लोक⇒ भवान् हि कारणं तत्र सर्वज्ञो जगदीश्वरः।
अनुग्रहं निग्रहं वा मन्यसे तद् विधेहि नः॥

⇒ सृष्टि आपने बनाई, आपकी ही सृष्टि मे हम सर्प भी है। हम सर्पों को भी आपने बनाया, यदि आपने हमारे शरीर मे जहर न भरा होता तो हम वमन कैसे करते? हमको क्रोधी और विष वमन करने वाला न बनाया होता तो लोग हमे भी प्रेम करते, देखते ही लाठी लाकर फणों को नही कुचलते। प्रभो! सबके कारण आप ही है।

⇒ भगवान बोले जब तुम्हारे लिये अलग से रमणक द्वीप बनाया है तो यहाँ रहकर विष क्यो फैला रहे हो? अपने देश मे जाओ। और ये अपना स्वभाव बदलो।

⇒ कालिय नाग बोला -
श्लोक- वयं खलाः सहोत्पत्त्या तामसा दीर्घमन्यवः।
स्वभावो दुस्त्यजो नाथ लोकानां यदसद्ग्रहः॥

प्रभो! हम जन्म से ही दुष्ट, तमोगुणी और बहुत दिनो के बाद भी बदला लेने वाले - बड़े क्रोधी जीव है। जीवों के लिये अपना स्वभाव छोड़ देना बहुत कठिन है प्रभो! ये प्रकृति का दिया हुआ स्वभाव है। अकेले होने पर बिल मे रहते है, जब बहुत हो जाते है तो बिल से बाहर आकर विष फैलाते है।

⇒ आँजकल भी कुछ पाखण्डी लोग विकास के नाम नाम पर प्रदूषणों रुपी विष फैला रहे है।

⇒ महाराज! ये कालिय नाग कौन है ?

⇒ भक्तो इस पाखण्ड को ही कालिय नाग कहते है।

दृष्टान्त- एक गृहस्थी साधु थे। वह अपने घर पर परिवार के साथ रहते थे। एक दिन वह घर पर बैठे-बैठे अपने नाती को खिला रहे थे। तभी एक भक्त उनके घर आया उसको देखते ही साधु जी ने नाती को छोड़कर मालाझोली अपने हाथों मे लेली। साधु जी भक्त से बोले दिन भर जप चलता रहता है, परिवार से कोई लेना, देना नही है। भक्त बोला जय हो महाराज आपकी, इतना कहकर उसने नोटो की दो गड्डी निकालकर साधु जी के चरणो मे रख दी। और वहा से चला गया।

⇒ भक्त के जाते ही साधु जी ने नाती को गोद मे ले लिया। भक्तो इसी को पाखण्ड कहते है। साधु जी गृहस्थी थे, अपने परिवार के साथ रहते थे, सभी यह बात जानते थे। यदि वह भक्त के सामने भी नाती को खिला लेते तो कौन सी उनको फासी हुई जा रही थी। भक्त को भी पता था घर परिवार के साथ रहते है, लोकरीति के अनुसार ही चलना पड़ेगा। बन्धुओ पाखण्ड से अच्छा है, जैसे है वैसे ही रहे।

⇒ जब भक्ति रूपी यमुना मे, पाखण्ड रूपी कालिय नाग आ जाता है। तब मेरे गोविन्द आते है उसे भगाने के लिये।

⇒ भगवान ने कालिय नाग से कहा अपना स्वरुप बदलना हो तो मेरी शरण मे आजा और अपना स्वभाव बदलना हो तो मेरी कथा मे जा, इसलिये अब मेरे वाहन गरुण जी के पास जाकर प्रेम से कथा सुनो।

⇒ कालिय नाग ने कहा- प्रभो! आपके वाहन गरुण के भय से ही तो मै रमणकद्वीप छोड़कर यमुना मे आ गया यदि मै पुनः वहा जाऊगा तो

158

गरुण जी मुझे नही छोड़ेगे।

⇒ परीक्षित जी ने शुकदेव जी से पूछा - प्रभो! गरुण जी के भय से कालियनाग रमणकद्वीप छोड़कर यमुना जी मे आकर के क्यो रहने लगा था?

⇒ शुकदेव जी कहते है- परीक्षित! रमणकद्वीप मे रहने वाले सभी सर्प अपनी रक्षा के लिये प्रत्येक अमावस्या को एक सर्प महात्मा गरुण जी को भेंट देते थे। किन्तु कद्रू पुत्र कालिय नाग ने गरुण जी को सर्प की भेंट देने से मना कर दिया। कालिय नाग ने गरुण जी का तिरस्कार कर दिया है यह सुनकर गरुण जी को बहुत क्रोध आया और वह बड़े वेग से कालिय नाग पर आक्रमण करने के लिये दौड़े। गरुण जी से बचने के लिये कालिय नाग यमुना जी मे आकर रहने लगा। कालिय नाग को यह बात ज्ञात थी कि गरुण जी को महर्षि सौभरि जी का शाप लगा हुआ है, कि गरुण जी यदि यमुना जी के मध्य मे बने कुण्ड मे प्रवेश करके मछलियो को खायेगे, तो उसी क्षण उनकी मृत्यु हो जायेगी। इसीकारण कालियनाग रमणक द्वीप छोड़कर यमुना जी मे आकर के रहने लगा था।

⇒ भगवान ने कालिय नाग से कहा - तेरा शरीर मेरे चरणचिह्नो से अंकित हो गया है। इसलिये अब तुझे गरुण जी नही खायेगे। भगवान को प्रणाम करके कालिय नाग रमणक द्वीप मे चला गया।

⇒ एक दिन जब बलराम और श्रीकृष्ण ग्वालबालो के साथ वन मे गौए चरा रहे थे, तभी ग्वाल के वेष मे प्रलम्ब नाम का एक असुर आया। वह श्रीकृष्ण और बलराम को हर ले जाना चाहता था।

⇒ भगवान तो सर्वज्ञ है। वे उस असुर को देखते ही पहचान गये। प्रलम्बासुर बलदाऊ जी को पीठ पर बैठाकर फुर्ती से भाग चला, पर्वत के समान बोझ के कारण प्रलम्बासुर, दाऊ दादा को अधिक दूर तक न ले जा सका। दाऊ दादा ने देखा कि जैसे चोर किसी का धन चुराकर ले जाय, वैसे ही यह शत्रु मुझे चुराकर आकाश-मार्ग से लिये जा रहा है।

⇒ दाऊ दादा ने क्रोध करके उसके सिर पर एक घूँसा कसकर जमाया। घूँसा लगते ही उसका सिर चूर-चूर हो गया। वह मुँह से खून उगलने लगा, कुछ देर बाद प्राणहीन होकर पृथ्वीपर गिर पड़ा। इस प्रकार बलदाऊ जी के द्वारा प्रलम्बासुर का उद्धार हुआ।

⇒ पहले भगवान बछड़े चराने जाते थे तो वत्सपाल थे। अब भगवान ग्वालबालो के साथ गाय चराने के लिये जाते है, इसलिये नाम पड़ गया गोपाल। बोलिए गोपाल भगवान की जय।

⇒ एक दिन भगवान ग्वालबालो के साथ गौचारण के लिये वन गये। तभी अकस्मात दावाग्नि लग गयी वन मे, जो वनवासी जीवो का काल होती है। जब ग्वालबालो और गौओ ने देखा कि दावानल चारो ओर से हमारी ही ओर बढ़ता आ रहा है तब वे अत्यन्त भयभीत हो गये। मृत्यु के भय से डरे हुए जीव भगवान की शरण मे आकर बोले - हे! श्रीकृष्ण इस दावानल से हमे बचाओ।

⇒ अपने ग्वालबालो और गौओ की रक्षा के लिये भगवान ने अपने मुख से दावानल अग्नि

⇒ का पान कर लिया। पाँच तत्वो मे एक तत्व अग्नितत्व को भगवान ने आँज पवित्र कर दिया।

⇒ इसके बाद मे शुकदेव जी वर्षा और शरदऋतु का वर्णन करते है। शरद ऋतु मे भगवान श्यामसुन्दर ने वन गौओं को चराते हुये वेणु का निनाद किया।

⇒ वेणु का निनाद सुनकर गोपियों के मन मे भगवान से मिलने की आकांक्षा और भी बढ़ गयी। गोपियां मन ही मन वहाँ पहुँच गयी, जहाँ श्रीकृष्ण वेणु का निनाद कर रहे थे।

श्लोक - बर्हापीडं नटवरवपुः
कर्णयोः कर्णिकारं
बिभ्रद् वासः कनककपिशं
वैजयन्तीं च मालाम् ।
रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया
पूरयन् गोपवृन्दै -
र्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं
प्राविशद् गीतकीर्तिः ॥

⇒ गोपियां मन ही मन भगवान् की छवि का दर्शन कर रही है। कन्हैया ग्वालबालो के साथ वृन्दावन मे प्रवेश कर रहे है। उनके सिर पर मयूरपिच्छ है और कानो मे कनेर के पीले-पीले पुष्प, शरीर पर सुनहला पीताम्बर और गले मे वैजयन्ती माला पहने है। बाँसुरी के छिद्रो को वे अपने अधरामृत से भर है।

⇒ गोपियां भगवान का दर्शन करती - करती आपस मे बातचीत करने लगी।

⇒ एक सखी बोली - अरी गोपियो! यह वेणु पुरुष जाति का होने पर भी पूर्वजन्म मे न जाने ऐसा कौन

⇒ साधन-भजन कर चुका है कि हम गोपियों की अपनी सम्पत्ति दामोदर के अधरों की सुधा स्वयं ही इस प्रकार पिये जा रहा है कि हम लोगो के लिये थोड़ा-सा भी रस शेष नही रहेगा।

⇒ एक सखी बोली कोई हमे भी पता करके बताओ ये वेणु कौन सा ऐसा कार्य किया जो कृष्ण के अधरामृत का पान करता है।

⇒ दूसरी सखी बोली तू पता करके क्या करेगी? वह बोली मैं भी वही करुगी जो इस वेणु ने किया, जिससे कृष्ण के अधरामृत का पान कर सकू।

⇒ एक सखी बोली ये वेणु की ध्वनि तो हमारे मन को चुरा लेती है।

श्लोक:- इति वेणुरवं राजन् सर्वभूतमनोहरम्।
श्रुत्वा व्रजस्त्रियः सर्वा वर्णयन्त्योऽभिरेभिरे ॥

⇒ एक सखी बोली इस वेणु के चक्कर मे अपने गृह के एक भी कार्य हम ठीक से नही कर पाती है। वेणु के निनाद को सुनकर मेरा मन कृष्ण के पास पहुँच जाता है।

⇒ एक सखी बोली ये राजा वेन ही वेणु बनकर के आ गया है।

श्लोक- न यष्टव्यं न दातव्यं न होतव्यं द्विजाः क्वचित्।
इति न्यवारयद्धर्मं भेरीघोषेण सर्वशः ॥

⇒ राजा वेन ने यज्ञ, दान, धर्म, कर्म सब बंद करवा दिया था। इस वेणु ने भी हमारी पूजा, पाठ गृह कार्य सब छुड़वा दिए।

⇒ वेणु गीत मे गोपियां वेणु की प्रशंसा कर रही है। ये वेणु कौन है?

'वंशस्तु भगवान रुद्रः"

⇒ भगवान शंकर ही वेणु है। भगवान रुद्र ही वेणु के रूप मे है। बड़ी तपस्या के बाद इनको ये सौभाग्य मिला है। कृष्ण के अधरामृत का पान करने का। इस वेणु की भगवान कृष्ण सेवा भी करते है। वेणु को अपनी अधर का तकिया लगाकर, हाथो का विस्तर लगाकर, के उंगलियोसे वेणु का चरण संवाहन करते है। अपने अधरामृत का भोग लगाते है।

⇒ भगवान रुद्र की इतनी सेवा श्रीकृष्ण क्यो करते है?

⇒ गोस्वामी तुलसीदास जी कहते है -

चौ० इच्छित फल बिनु सिव अवराधें।

लहिअ न कोटि जोग जप साधे ॥

= भगवान शिव जी की आराधना किए बिना वांछित फल नही मिलता। भगवान कृष्ण को किस इच्छित फल की कामना है? बोले श्री राधा रानी के चरण कमल रज की कामना है, इसलिये आराधना कर रहे है।

⇒ एक सखी बोली -

श्लोक - धन्याः स्म मूढमतयोऽपि हरिण्य एता

या नन्दनन्दनमुपात्त विचित्रवेषम् ।

आकर्ण्य वेणुरणितं सहकृष्णसाराः

पूजां दधुर्विरचितां प्रणयावलोकैः ॥

⇒ देखो, देखो ये मूढ़ बुद्धिवाली हरिनियां कितनी सौभाग्य-शाली है, जो अपने कृष्णसार पतियो के साथ कृष्ण की बाँसुरी सुनने के लिये आयी है।

⇒ एक हमारे पति है माटी के पोधा, कृष्ण से मिलने के लिये जाने ही नही देते है।

⇒ दूसरी सखी बोली इन हरिनियों के पति का नाम क्या है? कृष्णसार, जिसने कृष्ण को अपने जीवन का सार मान लिया उसे कृष्णसार कहते है, इसलिये इन हरिनियो के पति अपनी पत्नियो के साथ कृष्ण की बाँसुरी सुनने के लिये आ जाते है।

⇒ हमारे पति ने तो संसार को ही सार मान लिया इसलिये कृष्ण से मिलने जाने नही देते।

⇒ वंशी का निनाद सुनकर गोपियोके मनमे भगवान के प्रति प्रियतम का भाव प्रकट हो गया।

⇒ कृष्ण को पति के रूप मे प्राप्त करने के लिए गोपियों ने हेमन्त ऋतु के प्रथम महीने मे (मार्गशीर्ष) मास मे कात्यायनी देवी की पूजा और व्रत किया। और कात्यायनी देवीसे प्रार्थना की।

श्लोक- कात्यायनि महामाये महायोगिन्य धीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः॥

⇒ हे! कात्यायनी देवी नन्दगोप के पुत्र कृष्ण को मेरा पति बना दो।

⇒ बन्धुओ यंहा पर एक बात का निवेदन करदू -
हमारे आचार्यों ने मूल रूप से भगवान के भक्ति के तीन भेद बताये है।
(1) उत्तम
(2) मध्यम
(3) सामान्य

164

(1) सामान्य भक्ति :- भगवान को उपाय बनाकर, संसार की वस्तुओं को उपेय बनाकर, जब भक्ति करते है। उसे सामान्य भक्ति कहते है।
⇒ भक्ति हम भगवान की कर रहे है। लक्ष्य है संसार की वस्तुए, धन, पुत्र, परिवार, साधन बनाया

नित्य को, साध्य क्या है अनित्य। अनित्य संसार को साध्य बनाया और नित्य परमात्मा को साधन बनाया, तब ये जो भक्ति हुई, भगवान की उपासना हमने की ये क्या है? ये अधम भक्ति है। सामान्य भक्ति कहते है इसे।

(2) मध्यम भक्ति :- अन्य को उपाय बनाकर के भगवान को जब फल रुप मे हम चाँहते है। उसे मध्यम भक्ति कहते है। अन्य उपाय के द्वारा जब हम भगवान को चाँहते है, उसे मध्यम भक्ति कहते है।

(3) उत्तम भक्ति :- भगवान के चरणारविंद ही उपाय है और भगवान की प्राप्ति उपेय है। भगवान ही उपाय और भगवान ही उपेय ये उत्तम भक्ति है। भगवान ही साधन है। भगवान ही साध्य है। भगवान को पाने के लिये किसी अन्य साधन की जरुरत नही है। भगवान ही साधन है। दूसरा कोई साधन नही। भगवान की प्राप्ति मे भगवान ही साधन है। ये भावना जब आती है, तो इसे उत्तम भक्ति कहते है।
⇒ गोपियों ने भगवान को चाहा किन्तु कात्यायनी देवी से पार्थना की, ये मध्यम भक्ति हुई। कात्यायनी देवी से कहती है आप कृपा करो, गोविन्द मेरे पति हो जाये। गोपियो को गोविन्द से कहना

चाहिये, कि आप मुझे पति के रूप मे प्राप्त हो जाओ किन्तु गोपियां कात्यायनी देवी से प्रार्थना कर रही है। इसलिए गोपियो के व्रत मे व्यवधान उत्पन्न हो गया।

⇒ साधन जब भगवान से भिन्न होता है, तभी उसमे अपूर्णता होती है।

⇒ शरणागति का सिद्धान्त कहता है, पूर्ण को पाने के लिये साधन भी पूर्ण होना चाहिये।

⇒ भगवान से भिन्न कोई साधन है तो वह अपूर्ण है, इसलिये कही न कही बाधक हो जाता है। इसलिये गोपियों के साधन मे बाधा उत्पन्न हो गई पूर्णता नही हुई।

⇒ व्रत मे दोष मान लिया, भगवान ने आकर कहां जिस विधि से तुम लोग व्रत कर रही हो, ये विधि नही है।

⇒ अन्त मे गोपियों ने जब भगवान को ही साधन मान लिया, तब भगवान प्रसन्न हो गये।

⇒ अपने शरणागत आये हुए भक्त की जबतक परीक्षा नही ले लेते भगवान, तब तक उसे शरणागति प्रदान नही करते।

⇒ शुकदेव जी वर्णन करते है। परीक्षित! गोपियों ने एक माह तक व्रत किया। गोपियां प्रातःकाल उठकर यमुना स्नान करने के लिये जाती थी। एक दिन गोपियां अपने वस्त्रो को उतारकर यमुना स्नान कर रही थी तभी कन्हैया अपने ग्वालबालो के साथ वहां आते है। और गोपियों के वस्त्र उठाकर के कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ जाते है।

⇒ गोपियां जब कन्हैया से वस्त्र माँगती है, तो ठाकुर जी कहते, तुम लोग जल से बाहर निकल

कर आओ और अपने वस्त्र लेलो। गोपियां कहती कन्हैया हम इस अवस्था मे नही है कि जल से बाहर आकर अपने वस्त्र लेले।

⇒ तब भगवान कहते है -

श्लोक- भवत्यो यदि मे दास्यो मयोक्तं वा करिष्यथ।

अत्रागत्य स्ववासांसि प्रतीच्छन्तु शुचिस्मिताः॥

⇒ कुमारियो यदि तुमने अपने आप को मुझे समर्पित कर दिया है। मेरी दासी बन गयी हो। तो मेरी आज्ञा का पालन करो। जल से बाहर निकल कर आओ और अपने वस्त्रो को ले जाओ।

⇒ भगवान की बात को स्वीकार करके गोपियां जल से बाहर आयी तब भगवान ने गोपियो से कहा - तुमने निर्वस्त्र होकर यमुना मे स्नान किया है। इसके कारण जल के अधिष्ठातृ देवता वरुण तथा यमुना जी का अपराध हुआ है। अब तुम लोग वरुण देवता तथा यमुना जी से क्षमा मांगो।

⇒ गोपियों ने भगवान की बात को स्वीकार किया। और मन मे विचार किया, लगता है निर्वस्त्र होकर यमुना मे स्नान करने के कारण ही व्रत मे त्रुटि हो गयी है। गोपियों ने वरुण देवता और यमुना जी से क्षमा मांगी। गोपियों ने समस्त कर्मो के साक्षी भगवान श्री कृष्ण को प्रणाम किया। भगवान प्रसन्न हो गये। और उन्होने गोपियों के वस्त्र उन्हे वापिस कर दिये।

चीर हरण लीला पर प्रकाश -

⇒ कुछ लोग बिना सोचे समझे चीरहरण लीला पर गलत टिप्पणी करते है। कृष्ण कैसे भगवान थे गोपियों के वस्त्र चुरा लिये। भगवान ने वस्त्र चुराये यदि ये याद रहता है, तो ये भी याद रखो

167

⇒ कि कही भगवान वस्त्र चुराते है तो कही बढ़ाते भी है। छः वर्ष की आयु मे भगवान यदि गोपियो के वस्त्र चुराते है तो बड़े होकर के द्रौपदी का वस्त्र बढ़ाते भी है।

(1) वस्त्र पकड़ कर खड़ी द्रौपदी
पास खड़ा है दुःशासन।
दुर्योधन कहता अब लाओ,
जंघा पर दे दो आसन॥
बचा सके अब स्वाभिमान को
नियती से वो उलझ पड़ी।
बलशाली कौरव के आगे
क्षमता भर भी लड़ी खड़ी॥

(2) भूल गई वो राजसभा अब, भूल गई वो मर्यादा।
उमड़ पड़े दृग नद से आँसू,
पीर बढ़ गई जब ज्यादा॥
भूल गई वो तन अपना फिर
भूल गई संसार को।
याद रहे बस कृष्ण कन्हैया,
पे बचपन के प्यार जो॥

⇒ हमारे वृज के रसिक सन्त कहते कहते कृष्ण बाल्यावस्था मे यदि वस्त्र चुराते नही तो युवावस्था मे द्रौपदी का चीर बढ़ाते कैसे? (विनोद भाव मे)

⇒ भगवान श्री कृष्ण ने जब गोपियों के वस्त्र चुराये उस समय उनकी आयु छः वर्ष की थी। और जिन गोपियो के वस्त्र चुराये, उनके लिये कुमारिका शब्द का प्रयोग किया गया है। जिनकी आयु चार पाँच वर्ष की थी। पहले के समय मे चार, पाँच

168

> वर्ष के बच्चे निर्वस्त्र होकर के ऐसे ही घूमते रहते थे। छः वर्ष के कृष्ण यदि चार, वर्ष की गोपियों के वस्त्र चुरा भी लेते है तो इसमे कौन सा आश्चर्य है। यह तो भगवान की बाल लीला है।

> ईश्वर की द्रष्टि से यदि देखे तो कृष्ण है परमात्मा, गोपियां है जीवात्मा, और वस्त्र है माया का आवरण परमात्मा और जीवात्मा के बीच मे जबतक वस्त्र रूपी माया का आवरण रहेगा तब तक भगवान की प्राप्ति नही हो सकती।

> भगवान ने गोपियों के वस्त्र चुराकर के उन्हे वापिस भी कर दिये, इसका क्या मतलब है?

> एक बार जब जीव का आवरण भंग हो जाता है माया का आवरण हट जाता है, और परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। फिर वह जीव माया के मध्य रहते हुये भी माया मुक्त हो जाता है।

> इस प्रकार शुकदेव जी ने परीक्षित जी को चीरहरण लीला का प्रसंग विस्तार पूर्वक श्रवण कराया।

> शुकदेव जी कहते - परीक्षित! भगवान गोपियों के संकल्प को जानते थे। इसलिये भगवान ने कहा आने वाली शरद पूर्णिमा की रात्रि मे यमुना के तट पर वंशीवट पर आपके मनोरथ को मै पूर्ण करूगा। सभी गोपियो के साथ महारास करूगा।

> भगवान बोले - गोपियों अब तुम लोग अपने-अपने घर लौट जाओ, तुम्हारी साधना सिद्ध हो गयी है। भगवान की आज्ञा पाकर वे कुमारियाँ भगवान को प्रणाम करके अपने, अपने घर लौट गयी।

169

⇒ आगे कथा आती है भगवान ने ब्राह्मण पत्नियो पर कृपा की।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित ! एक दिन कन्हैया ग्वाल बालो के साथ यमुना के तट पर हरे भरे, उपवन मे गौएँ चरा रहे थे, उसी समय कुछ भूखे ग्वालबालो ने कन्हैया से आकर के कहा - कन्हैया हमे बहुत तेज से भूख लग रही है। इस भूख को शान्त करने का कुछ उपाय करो।

⇒ तब भगवान ने उन ग्वालों से कहा -

श्लोक - प्रयात देवयजनं ब्राह्मणा ब्रह्मवादिनः ।

सत्रमांगिरसं नाम ह्यासते स्वर्गकाम्यया ॥

⇒ यँहा से कुछ दूर पर मथुरा के चतुर्वेदी ब्राह्मण स्वर्ग की कामना से आंगिरस नाम का यज्ञ कर रहे है। तुम लोग वहाँ जाकर मेरा नाम लेकर के कुछ भोजन की सामग्री माँग लाओ।

⇒ सभी सखा कृष्ण की आज्ञा पाकर के उन ब्राह्मणो के पास आये, जो कुछ कन्हैया ने उनसे कहा था वह ब्राह्मणो से कह दिया।

⇒ उन ब्राह्मणो ने हाँ या ना कुछ भी उत्तर नही दिया तब सभी सखा निराश हो गये और कृष्ण के पास लौटकर के आ गये। उन ग्वालो ने कन्हैया से कहा वह ब्राह्मण हमारी बात सुनकर के भी यज्ञ करते रहे और हमारी बात का कोई उत्तर नही दिया।

⇒ कन्हैया बोले उन ब्राह्मणो के पास तुमलोग गये ही गलत, तुम्हे उन ब्राह्मणियों के पास जाना चाहिए था वे ब्राह्मण दिन भर स्वाहा, स्वाहा करते रहते है। यज्ञ का धुआँ लगते लगते उनकी आँखे, हृदय सब धूमिल हो गया है। उनकी जो पत्नियाँ है, उनके

⇒ पास जाओ, उनका हृदय वात्सल्यमय है, वे कुछ देगी।

⇒ कृष्ण की आज्ञा पाकर के सखा लोग उन चतुर्वेदी ब्राह्मणो की पत्नियों के पास आये। और उनसे कहा भगवान श्री कृष्ण अपने ग्वालबालो के साथ गौएँ चराते हुए यहाँ आये हुये है। इस समय उन्हे और उनके साथियों को भूख लगी है। आप उनके लिये कुछ भोजन देदे।

⇒ कृष्ण आये है, यह सुनकर ब्राह्मणो की पत्नियाँ प्रसन्न हो गयी, मै स्वयं उन्हे भोजन कराऊंगी, यह विचार करके भोजन का थाल लेकर के चल पड़ी।

⇒ जब वो चली तो उनके पतियों ने कहा हूं हूं, ये थाल लेकर के कहा जा रही हो? ब्राह्मण यज्ञ कर रहे थे, तो बोल तो सकते नही थे। क्यो कि शास्त्र कहते कि किसी भी कर्म या अनुष्ठान का संकल्प हो जाने के बाद मे बीच मे मानवीय भाषा का प्रयोग नही करना चाहिये।

⇒ आप संध्यावंदन कर रहे है, या जप कर रहे संकल्प आप ने कर लिया, बीच मे फोन आने पर आप ने बात कर ली, तो संध्या खत्म आपकी। पुनः प्रारम्भ करनी पड़ेगी संध्या। संध्या के बीच मे बोलने पर उसका प्रायश्चित करना चाहिये। प्रायश्चित क्या है? जिस मन्त्र के देवता भगवान विष्णु हो, उस मन्त्र का जप करना चाहिये, तब दोष से मुक्ति होगी।

⇒ ब्राह्मण यज्ञ कर रहे थे, इसलिये कुछ बोल नही पाये हूँ, हूँ करते रहे, वह ब्राह्मणियाँ चली गयी, बोली आप हूँ, हूँ करते रहो।

⇒ ब्राह्मणियाँ धर्म पत्नी है, धर्म पत्नी का मतलब जिसने धर्म को यथार्थ रुप से समझा हो।

"रामो विग्रहवान धर्मः"
भगवान श्री राम ही साक्षात धर्म है।

17

⇒ ब्राह्मण साक्षात् धर्म को छोड़कर गौण धर्म के चक्कर में पड़े थे। यज्ञ भी भगवान का स्वरूप है, लेकिन वह गौण रूप है। प्रत्यक्ष रूप में जब भगवान धर्म विराजमान है। तब उस गौण धर्म के पालन में अभिरुचि। यह तो साक्षात् धर्म की उपेक्षा है। साक्षात् धर्म की उपेक्षा करके, प्रत्यक्ष धर्म की उपेक्षा करके, परोक्ष धर्म की उपासना मे वे ब्राह्मण लगे रहे।

⇒ ब्राह्मणो की पत्नियाँ परोक्ष धर्म को त्यागकर के प्रत्यक्ष धर्म की उपासना करने के लिये चल पड़ी। ब्राह्मण भगवान के अप्रत्यक्ष मुख मे आहुति दे रहे थे,

"मुखादग्निरजायत"

अग्नि परमात्मा का अप्रत्यक्ष मुख है। ब्राह्मणो की पत्नियाँ प्रत्यक्ष मुख मे आहुति देने चली गयी। जाकर के कन्हैया को भोजन कराया। भगवान सन्तुष्ट हो गये। ब्राह्मणो का यज्ञ भी पूर्ण हो गया।

⇒ कन्हैया ने उन ब्राह्मणियों से कहा अब तुम लोग मेरा दर्शन कर चुकी हो। इसलिये अब अपनी यज्ञशाला मे लौट जाओ।

⇒ उन ब्राह्मणियों ने कहा- प्रभो! अब हमारे पति हमे स्वीकार नही करेगे; हमारा और कोई दूसरा सहारा नही है।

⇒ भगवान ने कहा - देवियो अब तुम मेरी हो गयी हो, कोई भी तुम्हारा तिरस्कार नही करेगा। इसलिये अब अपनी यज्ञशाला मे लौट जाओ।

⇒ भगवान की आज्ञा का पालन करते हुए वे ब्राह्मणियाँ यज्ञशाला मे लौट आयी। उन ब्राह्मणो ने अपनी पत्नियों से कुछ नही कहा।

⇒ जब ब्राह्मणो को यह ज्ञात हुआ कि श्री कृष्ण तो साक्षात् नारायण है। तब उन्हे अपने किये पर

⇒ बड़ा पछतावा हुआ। वे ब्राह्मण स्वयं ही अपनी निन्दा करने लगे।

श्लोक- धिग् जन्म नस्त्रिवृद विद्यां
धिग् व्रतं धिग् बहुज्ञताम्।
धिक् कुलं धिक् क्रियादाक्ष्यं
विमुखा ये त्वधोक्षजे ॥

⇒ वे कहने लगे- बड़े ऊँचे कुल मे हमारा जन्म हुआ, गायत्री गृहण करके हम द्विजाति हुए, वेदाध्ययन करके हमने बड़े-बड़े यज्ञ किये; परन्तु वह सब किस काम का? हमारी विद्या व्यर्थ गयी, हमारे व्रत बुरे सिद्ध हुए। हमारी इस बहुज्ञता को धिक्कार है। ऊँचे वंश मे जन्म लेना, कर्मकाण्ड मे निपुण होना किसी काम न आया। हम भगवान अधोक्षज से विमुख रहे।

⇒ श्लोक- नासां द्विजातिसंस्कारो न निवासो गुरावपि।
न तपो नात्ममीमांसा न शौचं न क्रियाः शुभाः ॥

⇒ हमारी पत्नियों को देखो, ये स्त्रीयाँ है। स्त्रियों का कोई यज्ञोपवीत संस्कार नही होता, न ये गुरुकुल मे जाकर के वेद वेदान्त पढती है, न ये तपस्या करती है, न आत्मतत्व पर विचार करती है। न इनके जीवन मे बहुत पवित्रता होती है। स्त्रियो के लिये शौचाचार के कठिन नियम नही बताये शास्त्र ने, पुरुषो के लिये तो शौचाचार के बड़े नियम है। फिर भी इनके ऊपर भगवान की कितनी बड़ी कृपा हुयी। इन्होने भगवान को अनुभव किया। और हम वेदवेदान्त का अध्ययन करके भी इस तत्व का अनुभव नही कर पाये। अन्त मे उन ब्राह्मणो को अपने कृत्य पर बड़ा पश्चाताप हुआ। वे अपनी पत्नियों से कहने लगे, हमारे अन्दर तो ऐसी योग्यता नही थी, कि भगवत तत्व का अनुभव हो

जाये, तुम मेरी पत्नी हो इस सम्बन्ध के कारण हमे भगवत तत्व का अनुभव हो गया।

⇒ आगे शुकदेव जी परीक्षित जी को गोवर्धन धारण लीला का वर्णन करते है।

⇒ शुकदेव जी कहते - परीक्षित ! कार्तिक मास मे

दीपावली के शुभ अवसर पर समस्त ब्रजवासी इन्द्र यज्ञ (पूजन) की तैयारी कर रहे थे। तभी ठाकुर जी यशोदा मैया के पास आये। कन्हैया ने देखा मैया बहुत से पकवान बना रही है। कन्हैया ने कहा मैया मुझे बहुत जोर की भूख लग रही है, मै एक कचौड़ी लेलू। मैया बोली लाला आज जय-जय है, पहले देवता को भोग लगेगा, इसके बाद खाने को मिलेगा कन्हैया बोले मैया कौन से देवता का पूजन है? मैया बोली मै पकवान बनाने मे व्यस्त हू, तुम बाहर जाकर अपने बाबा से पूछ लो।

⇒ कन्हैया ने बाहर आकर नन्दबाबा से पूछा -

श्लोक - कथ्यतां मे पितः कोऽयं सम्भ्रमो व उपागतः।
किं फलं कस्य चोद्देशः केन वा साध्यते मखः ॥

⇒ पिता जी! ब्रज मे कौन सा उत्सव आया है? इसका फल क्या है? इस कर्म का उद्देश्य क्या है? और यह जो यज्ञ हो रहा है, किन साधनो के द्वारा इस यज्ञ को सम्पन्न किया जायेगा।

⇒ नन्दबाबा ने कहा - कन्हैया

श्लोक - पर्जन्यो भगवानिन्द्रो मेघास्तस्यात्ममूर्तयः।
तेऽभिवर्षन्ति भूतानां प्रीणनं जीवनं पयः ॥

वर्षा के स्वामी भगवान इन्द्र है। मेघ भगवान

⇒ इन्द्र का ही प्रतीक है। अर्थात् इन्द्र ही मेघो के स्वामी है। वर्षा से ही हम ब्रजवासियो को जल प्राप्त होता है। जल ही सम्पूर्ण प्राणियो का जीवन है। सनातन धर्म कृतज्ञता सिखाता है। जल ही हमारा जीवन है। जल के देवता इन्द्र है। इन्द्र ने चार महीने वर्षा की है, अब कार्तिक आ गया है। हमे इन्द्र को कृतज्ञता (धन्यवाद) ज्ञापित करनी चाहिए। इसलिये आज इन्द्र देवता की पूजा होगी।

⇒ श्लोक - य एवं विसृजेद् धर्मं पारम्पर्यागतं नरः।
कामाल्लोभाद् भयाद् द्वेषात् स वै नाप्नोति शोभनम॥

⇒ यह धर्म हमारी कुलपरम्परा से चला आ रहा है। अपनी मातृ पितृ परम्परा से जो संस्कार हमे मिले है उनको जो व्यक्ति त्याग कर देता है चाहे कामना से करे, लोभ से करे, भय से करे, द्वेष से करे, उसका कभी कल्याण (मंगल) नही होता है। इसलिये अपने परम्परागत उत्सव, व्रत, त्योहार को त्यागना नही चाहिये।

⇒ भगवान किसी भी परम्परा का विरोध नही करते, भगवान यज्ञ का विरोध नही करते भगवान तो यज्ञ की रक्षा करते है। किंतु भगवान को तो इन्द्र का अभिमान दूर करना था। इन्द्र को जो अभिमान हो गया था। उसको दूर करने के लिये भगवान यह लीला कर रहे है।

⇒ हमारे व्रज के सन्त तो कहते है, भगवान् को अनन्य भक्त पसन्द है। व्रजवासी एकवर्ष मे एकबार इन्द्र की पूजा करते थे, भगवान को अनुमति दे देनी चाहिए थी। क्यो नही दी?

⇒ कोई पत्नी अपने पति से कहे वर्ष मे 364 दिन हम आपकी है और एक दिन किसी और की तो क्या उसके पति को यह बात स्वीकार होगी ? नही होगी घर टूट जायेगा। जब सांसारिक पति इस बात को

= स्वीकार नही कर सकता तो कृष्ण तो जगतपति है उन्हे यह बात कैसे स्वीकार होगी कि उनका भक्त 364 दिन उनका एक दिन किसी अन्य का।

गीता मे भगवान कहते है -

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

=> जो लोग अनन्यभाव से मेरे दिव्यस्वरूप का ध्यान करते हुए निरन्तर मेरी पूजा करते है; उनकी जो आवश्यकताएं होती है, उन्हे मैं पूरा करता हूं और जो कुछ उनके पास है, उसकी रक्षा करता हू।

भगवान श्री कृष्ण ने नन्दबाबा की बात सुनकर के इन्द्र को क्रोध दिलाने के लिये उनसे कहा-

श्लोक- कर्मणा जायते जन्तुः

कर्मणैव विलीयते।

सुखं दुःखं भयं क्षेमं

कर्मणैवाभिपद्यते ॥

=> पिता जी न कोई किसी को सुख देता है न कोई किसी को दुःख देता है। प्राणी अपने कर्म के अनुसार ही पैदा होताहै और कर्म से ही मर जाता है।

=> इसी श्लोक का अर्थ गोस्वामी जी अपनी चौपाई मे बता रहे है।

चौ० काहु न कोउ, सुख दुःख कर दाता।

निज कृत करम भोग सब भ्राता ॥

=> भगवान बोले जो देवता व्रजवासियो को लकड़ी, फल, पत्थर खण्ड दे उसे देवता कहते है। हम तो ग्वालियाँ है, हमे इन्द्र कुछ नही देते। "ददाति इति देवता"

जो दे उसे देवता कहते है।

श्लोक - तस्माद् गवां ब्राह्मणानामद्रेश्चारभ्यतां मखः ।

य इन्द्रयाग सम्भारास्तैरयं साध्यतां मखः ॥

⇒ हमे गोवर्धन भगवान की पूजा करनी चाहिये। गोवर्धन भगवान हमे, लकड़ी, फल, प्रस्तर खण्ड, घर बनाने के लिये, देते है। और ये वर्षा इन्द्र के कारण नही होती, बल्कि गोवर्धन भगवान के कारण होती है।

⇒ बादल जब उड़कर के जाते है, तो गोवर्धन पर्वत से टकराजाते है, जिसके कारण ब्रजमण्डल मे वर्षा होती है।

⇒ नन्दबाबा बोले कन्हैया इन्द्र का पूजन कैसे करना है यह तो हम जानते है, किन्तु गोवर्धन का पूजन कैसे होगा यह पता नही।

⇒ भगवान बोले, इन्द्र-यज्ञ के लिये जो सामग्रियाँ इकट्ठी की गयी है, उन्ही से गोवर्धन भगवान का पूजन होगा।

⇒ सभी ब्रजवासी गोवर्धन पूजन की तैयारी करने लगे, गोवर्धन भगवान को भोग लगाने के लिये पकवान बनाने लगे।

श्लोक - पच्यन्तां विविधाः पाकाः सूपान्ताः पायसादयः।

संयावापूपशष्कुल्यः सर्वदोहश्च गृह्यताम् ॥

⇒ अनेको प्रकार के पकवान खीर, हलवा, शोरबा, पूआ, पूरी आदि से लेकर मूँग की दाल तक बनायी गई। ब्रज का सारा दूध एकत्रित करके जितने भी पदार्थ बन सकते थे सभी बनाये गये। सारी सामग्रियों को एकत्रित करके सभी ब्रजवासी गोवर्धन भगवान का पूजन करने के लिये चल पड़े।

श्लोकः॰ अनांस्यनड्युक्तानि ते चारुह्य स्वलंकृताः।
गोप्यश्च कृष्णवीर्याणि गायन्त्यः सद्विजाशिषः॥

⇒ सभी गोपियाँ श्रृंगार करके बैलों से जुती गाड़ियों पर सवार होकर भगवान गिरिराज की परिक्रमा करने लगी।

:: भजन :: (पद)

पूजन चलेरी गोपाल गोवर्धन - 3

(1) मत्त गयंद देख जीय लज्जित
निरख मंद गति चाल
व्रजनारिन पकवान बहुत कर
भर-भर लीने थाल
अंग सुगंध पहर पट भूषण
गावत गीत रसाल-3
पूजन चलेरी गोपाल - - - - -

(2) बाजे अनेक वेणुरवसों मिल,
चलत विविध सुरताल
ध्वजा पताका छत्र चंवर धर,
करत कुलाहल ग्वाल गोवर्धन-3
पूजन चलेरी गोपाल - - - -

(3) बालक वृंद चहुं दिश सोहत
मानो कमल अमीमाल
कुंभनदास प्रभु त्रिभुवन मोहन
गोवर्धन धर लाल गोवर्धन-3
पूजन चलेरी गोपाल - - - -

⇒ सभी ब्रजवासी गिरिराज महाराज के समीप पहुंचकर पूजन करने लगे।

⇒ कन्हैया ने सभी ब्रजवासियों से कहा, एक मिनट के लिये अपने नेत्र बन्द करो। जैसे ही ब्रजवासियों ने अपने नेत्र बन्द किये, भगवान दूसरा शरीर धारण करके प्रकट हो गये।

शैलोऽस्मीति ब्रुवन भूरि बलिमाददृ बृहद्वपुः।

⇒ भगवान कहने लगे मैं ही गिरिराज हूँ, मुझे सारी सामग्रियां अर्पित कर दो। सभी ब्रजवासी गिरिराज जी को भोग लगाने लगे। एक तरफ तो ठाकुर जी गिरिराज जी का पूजन करवा रहे हैं। दूसरी तरफ स्वयं गिरिराज बनकर सारी सामग्री आरोगने लगे।

⇒ मनसुखा ने जब गिरिराज भगवान को देखा तो मन मे विचार करने लगा, यह तो हमारे कन्हैया की तरह दिख रहे हैं। मनसुखा बार-बार कन्हैया के मुख को देखे फिर गिरिराज भगवान को देखे।

⇒ कन्हैया ने मनसुखा से कहा - मनसुखा तू बार-बार मेरे मुख की ओर क्यों देख रहा है? मनसुखा बोला कन्हैया, मुझे ये गिरिराज जी तेरे जैसे ही दिखाई दे रहे हैं बस अन्तर इतना है, तेरे दो हाथ हैं और गिरिराज जी के चार हाथ हैं।

⇒ कन्हैया बोले, जैसा व्यक्ति होता है, उसके देवता भी वैसे ही होते हैं।

⇒ ब्रजवासी बोले कन्हैया, हम जीवन भर इन्द्र की पूजा करते रहे, पर इन्द्रदेव आजतक कभी दर्शन देने नहीं आये, हमें नहीं पता इन्द्रदेव कैसे दिखते हैं? पर तेरे देवता कितने अच्छे हैं माँग-माँगकर भोग लगा रहे हैं।

ब्राह्मणों ने स्वस्तिवाचन किया, सभी लोगों ने विधिवत गिरिराज जी का पूजन किया।

॥ भजन ॥

श्री गोवर्धन महाराज, महाराज
तेरे माथे मुकुट विराज रहो।

(1) तोपे पान चढ़े, तोपे फूल चढ़े
तोपे चढ़े दूध की धार - - - -
तेरे माथे मुकुट - - -

(2) तेरी सात कोस की परिकम्मा
और चकलेश्वर है विश्राम
तेरे माथे मुकुट - - -

(3) तेरे गले में कंठा साज रहो
ठोडी पे हीरा लाल।
तेरे माथे मुकुट - - - - -

(4) तेरे कानन कुंडल चमक रहो
तेरी झांकी बनी विशाल
तेरे माथे मुकुट - - -